

शिखरोंका सेतु

शिवप्रसाद सिंह

•



भारतीय ज्ञानपीठ काशी

सामयौठ लोखेदेव प्रन्वमाळा : हिन्दी प्रन्वाङ्क-१६३

प्रन्वमाळा सन्वाङ्क-विशामक :

कवमीचन्द्र शैव

●
SHIKHARON KA SUTU
[Stories & Beliefs-essays]
Dr SHIVA PRASAD SINGH

Publication
Eharatiya Jaanpooth Kaaku

First Edition 1962

Price Rs. 3-50

●
प्रकाशक

भारतीय आधुनिक कवसी

दुसरे

सम्पति सुप्रभाकर बाराबसी

प्रथम सल्करण १९६२

मूल्य तीन रुपये पचास नय पीसे

●

स प्रत्ययैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्णव तस्मै
 प्रीत प्रीतिप्रमुखवचन स्वागतं व्याजहार
 - मधुसूत

ललित णिव घर्हं सैति मर्है, कल्पलता विद्यार किय
 कम्ब छल मग मम्मर्हि, जिग असोय कर्हं फूल दिय
 तिहि गुस्वर्हि दुवेइ कर्ह, गेह गमिय मावेन
 कुटय थवळ समप्पियउ, सिँह सिउ पस्सावेन

ललित निबन्धोंके क्षेत्रमें 'कल्पलता'का विस्तार किया
 कल्प-विदग्ध जनोके मन-मौरोको बिन्दोने 'अशोकके फूल' दिया
 उन्हीं गुस्वर द्वियेदीक्षे नेह भमित भावते
 कुटज फूलोंका यह स्तम्भक शिष्यप्रसाद सिंहने समर्पित किया

शावपीठ लोकोदय प्रबन्धाला : हिन्दी प्रबन्ध-१६३
प्रबन्धाला सम्पादक-विशामक :
कहमीचन्द्र शीन

SHIKHAROV KA SETU
[Stories & Belles-lettres]
Dr SHIVA PRASAD SINGH
Publication
Bharatiy Jnanpeeth kashu
First Edition 1962
PRICE Rs. 3.50

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ कार्यालय
मुद्रक
सम्पति मुद्रणालय वाराणसी
प्रथम संस्करण १९६२
मूल्य तीन रुपये पचास नये पैसे

स प्रत्ययैः कुटबकुसुमैः कल्पितार्थाय तस्मै
 प्रीतः प्रीतप्रमुस्तवचन स्वागत व्यामहार
 -- मन्वृत

ललिअ णिब-घहँ सेति महँ कल्पलता विष्टधार किय
 कव्व छल्ल मण भम्मडहि, जिण असोय कर्हँ फूल दिय
 तिहि गुस्वरहि दुवेइ कर्हँ णेह णमिय भावेन
 कुटय थवळ समाप्पियउ, सिँह सिउ पस्तावेन

ललित निबन्धोके चंद्रमे कल्पलता'क्ष बिस्तार किया
 अम्ब-बिदग्ध जनोके मन-भारोको जिन्होने 'अशोकके फूल दिया
 उन्ही गुस्वर द्विवेदीको नेह मयित भावसे
 कुटब फूलोका यह स्तवक शिबप्रसाद सिंहने समर्पित किया

आशाबन्ध

अपने कलात्मक कठिण कश्चित् वैचारिक रमणीय निबन्धोंका यह संकलन आपके हाथोंमें छौपते हुए मैं एक दुहरे आशाबन्धका अनुभव कर रहा हूँ। एक सावजनिक बाह्य और दूसरा व्यक्तिगत आन्तरिक। साहित्यका मर्मज्ञ सुधी पाठक सेसकसे कुछ भाषा करता है कुछ सम्भावगाएँ रखता है—प्राप्ति और प्रसोध्यकी साम्यकी। उसकी यह भाषा सहज और स्वाभाविक है। किन्तु सेसकके अन्तर्मनमें भी एक आशाबन्ध है उसकी कल्पना और वाच्यता भी होती है जिसके भीतर वह पाठकके मनक भागस्क स्तरको बाँधनेका अन्यान्य ही सही प्रयत्न करता है। रचना प्रक्रिया और सृजनके दौरसे पुबरा हुआ सेसककुछ तो कृतिके प्रति अपनी अविच्छेद्य आरमीयताके कारण मोझसे और कुछ अपने प्रयत्न और पीड़ाके प्रतिदानम न सही तो स्वीकृतिके बावहसे पाठकसे सहचिन्तन या सहसृजित की भाषा करता है।

इस संकलनमें मेरी छोटी-बड़ी बाईस गद्य-कृतियाँ संगृहीत हैं। कृतियाँ इसकिण कि इन्हें मैं गद्य-विचारकोंकी बीबी-बीबाई परिपाटीमें डालनेका सचेत प्रयत्न नहीं किया है। इस विषयपर मैं सक्षेपम आवे कुछ निवेदन करूँगा। इन कृतियोंको विषयकी वृष्टिके और कथ्यकी परिधिको देखते हुए चार वर्तोंमें उपस्थित किया गया है, अतीतके तोरण मबोने बोले पुष्पके असाधमें तथा निबन्ध चिन्तन। ये वृत्त परस्पर स्वतन्त्र हैं, किन्तु मैं एक धुमरेको सहजस्वसे काटते हुए भी निस्सामी पड़ेने और यह बग़ा ही है, क्योंकि तभी अनेक कटात्रो और अस्पनाओंका जन्म होता है।

अतीतके तोरण' वह बाह्य पलक है जिसके गवाक्षमें प्राचीन अपनी समस्त रूप-विरूप आकृतियों और रंग-अवरंग वृक्षोंके साथ विस्सामी पड़ता

है। अतीत मेरे मनपर एक बड़ा पापान-कामके रूपमें अंकित नहीं है।
 उसके दिगन्तध्यायी आश्रित और भूमिसे कनकतपर सहसा डबें है
 उन्मुक्त है। कण्ठहृत् और मन्नाकषेप है। जिनकी काल-अर्जरित कावापर
 तरह-उरके अथाध्य असरोके पुरामेक पक्षिमाके पद-चिह्नकी तरह
 उर-उर बिछरे पड़े है। किन्तु यह सब कुछ अतीतका बाह्य स्फुल
 कनेत्र है। उसकी सीतल-सुख्य भरो आत्मा तो इनके भीतर है।
 नहगाइमि जहाँ अमल तिलकुकी बन्धी लहरें सुशब्द और ज्ञानके साथ
 चित्तारोमे निरन्तर टकराती रहती है। मैं अतीतके तारनस इसी तिलकुका
 उच्छ्रान्त दृश दिशाना चाहता हूँ। इसके उच्छ्रवित कष्टका संगति आपके
 निकट से जाना चाहता हूँ। किन्तु मुझ यह कष्टमें संकोच भी क्या है कि
 मैं इस अपार अकराधिक तटपर एक अथ इकर अमी तक कमकीमी
 मीपियाँ और उपेलित शत्रु और बोने ही बीन मका हूँ। ही सकृता है कि
 मेरे मनका अबाध शिषु इसे ही रत्नरामि मानकर हृद-विह्वल ही गया
 हो किन्तु यह निजम भी तो आपको ही करता है, पर तब आपको बुद
 अबोध मापताके शिष-आत्मै अलग रहना पड़ेगा। तटस्व होना पड़ेगा।

आज मधोनक चक्रार्थि करनवाले प्रकाशने हमारे सामने मनुष्य
 और अमल तथा शरीर ओर आत्माके सम्बन्धके विषयम अलग मने प्रस्त
 सङ्क कर दिये हैं। विज्ञानकी निरन्तर विकासशोम अक्षि हमारे जीवनक
 नावाश्रित प्रस्तावो मुख्याम समस्याशोम समाधान करने तथा अचरोधो-
 को मिटानेम महामक हा रही है। विज्ञान मनुष्यकी अपूर्व सेवा-सक्ति
 और उभरा बुद्धिका परिणाम है। प्रकृति और मनुष्यके बीच अचर्षको
 मिटाकर एक सन्तुष्टि समतो-समबाध स्थिति स्थापने विज्ञानका
 शोधशाल अनुष्मयी है। किन्तु विज्ञानकी आन्तरिक प्रक्रियामके मही ज्ञान
 और उसके द्वारा होनेवाले परिष्करणके वास्तविक स्वप्नकी जानकारीके
 अभावम हम जीवनके ऊपरी सतहपर होनेवाले बीच-विचर्षको ही तत्प
 स्वीकार कर लेते हैं। विज्ञानके नामपर आधुनिक श्रेयन परिष्करणके

मानपर परम्परा त्रोटक तथा सन्तुस्मनके नामपर अतिवादिताको स्वीकार करना क्याया आसान है। इसी कारण इपर हमारे जीवनम एक अजीब तरहकी विषमता संकरता अथवा द्वैधिताकी प्रबलता दिनायी पडती है। वैज्ञानिक प्रक्रिया ही मदीनी शक्तिम मूलमे निहित ता है किन्तु मदीनामे उत्पन्न हर वस्तु उपयोगी सत्य ही नहीं है। परम्पराकी तरह विज्ञानम भी कुछ मन्वविश्वास है कुछ रुढ़ियाँ हैं। अमसम समसमके उदरत है वैज्ञानिक प्रक्रियाको। जो व्यक्ति विज्ञानकी सही प्रक्रियाको समझता है वह कभी भी मानवताक विकासकी ऐतिहासिक प्रवाह चेतनाको झुठला नहीं सकता।

आधुनिक दृष्टिकोण इसीलिए परम्परा-त्रोटकता पर्याय नहीं है। आधुनिकता आजकी परिस्थितिम हमारी दृष्टिका वह परिग्रह्य है जो हम अपनी साम्प्रत भौतिक सीमाम अतीत और भविष्य दोनोंको अधिकसे अधिक अनुभवगम्य बनायम सहजक हो। आधुनिकता एक प्रबल प्रयत्न चिह्न है जो हमारे हर अनुभवको मानव-विकासके चेतना-प्रवाहमे संयुक्त हानेक संकेत करता है। आधुनिक व्यक्ति वह है जो वैज्ञानिक रीतिम (मानी क्रिमी वस्तुको सही या उचित तबतक नहीं माना जाये जबतक वह ऐसा प्रामाणिक न हो जाये) जीवनम निश्चित हाते परिवर्तित होते और निर्मित होते मूल्यको समझ सके और उन्हें चरिताक कर सके। हम आधुनिकताके नामपर हानिकर विदेशी मालके आत्मातकी आकष्यकता नहीं हैं। एक बुद्धि और प्रमाणकी लुकापर सही उठरलवाके तस्वीको एक ऐतिहासिक साधक प्रवाह-चेतनाम जोड़ते हुए सम्युच वैश्विक मानवताकी उपलब्धिके प्रकाशमे व्यक्ति और समाजको अपना सर्वोत्तम देते हुए जीवनको साधकता प्रबल करनकी चेष्टा ही आधुनिकता है और इस प्रकारके विषय और व्यक्तिमे सन्तुलित सम्बन्ध-बोधस प्रस्फुटित दृष्टिकोण को ही हम आधुनिक या नया मानना चाहिए।

मने सबत्र इसी दृष्टिकोणस ही प्राचीन और नवीन मनुष्य और समाज भूत और भविष्य अग्नि और आबि को देखा है ऐसा बाबा करना साधक

ठीक नहीं है, किन्तु मेरा यह नैरन्तरिक प्रयास चल रहा है कि मैं अपनी सीमित बुद्धिके नवाचको इतना पारदर्शी और नियन्त्रित (Conditioned) हो सकूँ कि वह मेरी मान्यताके पुष्ट नहीं तो काफ़ी अनुकूल अवस्था हो सके। इसी कारण अतीतके अन्तर्द्वेषमें मैंने कूटस्व परम्परा मुक्त कश्चित् रमण (Rituals) अन्वयिन्वाम और टोने-टोटके (Taboo and totems) की नयी मान्यताके उक्त स्पन्दनशील शीघ्रित व्यवस्था पदचिह्नोके संकलना प्रयास किया है, जो आज भी राक्षसुत प्रोसावसेपोके सम्बन्धके नीचे राक्षसों चित्तपारीकी तरह छिपे बसे हुए है। सम्पूर्ण मुमुक्षु कर्मकाण्डको बनौती देते हुए संकरकी आत्माका सर्व समस्त कर्म-नीटाबीस्वरोंके अन्वयको सम्भारती हुई ताराके अन्तर्की मातृ-पीडा व्याजर्जनाके अनुभवमें ऐसी मान्यताको नवीन स्वयंके पाञ्चकम्पस उत्प्रेरित करते हुएका कर्म-दीक्षा तथा अपने पुरे जीवनको निःशेष भावसे बेम-देवताके अन्तर्में मौनकर जी उपेक्षित रही राधाकी अन्तर्की नवीनता उदासी से सभी हमारी चित्तधारके अस्मिन्तरणीय मोड़ोंकी वृत्तता देते हैं। ये सभी व्यक्ति सांस्कृतिक सुबोत्सके चिह्न हैं। किन्तु व्यक्तिपरिधि कम महत्त्वपूर्ण व विचारधारार्थ और साधनार्थ नहीं होती चित्तकी अन्तर्की घट्टीमें बेहोत धानु-बट्टाने पत्त-विगतस्वर चिद-सुन्दरकी सुबोत्स मूर्तिपोका निर्माण करती है। सम्पूर्ण विषय प्रचलित विचारिय मातृ-सन्तित पुत्राका मनोवैज्ञानिक इतिहास हमें तबे तिरहे संकेतके लिए विचार करता है कि क्या आजकी अन्तर्गत संदर्भपूर्ण परिस्थितिपोका मूल कारण यह नहीं है कि हमन पुष्ट बुद्धि-वृत्तिका अनावस्वक प्रचलता दे रही है? नारीकी बुद्धि और सघनी मन धन्तिका अन्तर्गत सम्भावनावात्की ओरसे हमने आँधे फेर की है। आज हन नारी-समष्टि (Feminine Archetype) की अन्तर्गत विस्मयक और उगाकी अन्तर्गत अन्तर्गत परिचित होनेकी अन्तर्गतता है। नारी-पुत्राका भारतम एक विशिष्ट स्थान रहा है। किन्तु यह साधना सर्वथा अन्तर्गत अन्तर्गत चिद-वृत्ती जननी ही नहीं रही है अन्तर्गत

कामकी मूक-भूमिमें खोबर महत् उद्देश्यमें पक्षभट भी हुई है किन्तु मनबिकारी व्यक्तिप्राके कार्योंको ही इष्टिमें रखकर सम्पूर्ण उत्सको गैरसा कहना उचित नहीं है। वैदिक और अनीतिक मूर्खोंकी विवेचना 'बेहि मम पवन न संचरै में मिलेगी। 'देवी मेरी प्राणवस्त्रमा' कहनेवाला तान्त्रिक सत्त्व चिबं सुन्दरके एकत्र बनविग्रहको अपनी बल्लभा मानकर जिस एकान्त समन्य और अनन्य रामात्मिकताका परिचय देता है वह समूचे स्वूक विश्वको स्पन्दनशील विस्वात्सामें बरक देती है। यही इस सामनाका रहस्य था। इसी उन्मादिनी अचिन्त्य स्वितिकी मायामें बांधनेका यत्किचित् प्रयत्न उस निबन्धमें किया गया है। इसमें मायावेश दिखायी पड़ेगा किन्तु यह तो इष्टापति ही है। बन्धविदास और कर्मियोंके पेटमें कमी कमी बद्धमुत सत्य छिने रहते हैं। हंस परीकी कथाओंमें मसा बाजका बुद्धिवादी कत्र विश्वास करेगा किन्तु संसारके प्रत्येक प्राचीन कबीरमें प्रचक्षित वे कहानियाँ क्या सिद्ध हमारे मानस-पटलपर कल्पनाको उरही छायाएँ ही हैं? नहीं इनके भीतर हमारी आरम्भिक सामाजिक स्थितिका संस्कृतियोंके अन्तरावलम्बन और भिन्नगका किन्तयकारी इतिहास छिपा है। 'पत्तु-प्रेम मानुष-द्वार' इसी इतिहासकी पुनर्निमित्ति है। प्रमके अनन्त रूप है किन्तु माई-बहुतके उत्सर्ग-मूक प्रमका कोई अभाव नहीं। इस अद्वितीय राव-भावनाके विकासकी कथा 'ठीग बेर एक अतिवर्षमें पड़िए।

यहाँ यह प्रका उठती या सजती है कि क्या प्राचीन सांस्कृतिक वस्तु-उत्सका विस्तेयन करते समय आध्यात्मिक बहुमर्म पढ़ना आवश्यक है। आध्यात्म शब्द कुछ इतना बड़ हो गया है कि हम अचानक इसमें पीरा निकटाकी बन्ध जाने लगती हैं। नवीनताका आठन भी इस शब्दके प्रति हमें आश्रयसे भर देता है। किन्तु इस तरहकी स्थिति औरके सिद्ध भितनी भी स्पृहणीय हो साहित्यकारके लिए तो कमी भी बांछनीय नहीं क्योंकि उसकी रचना-प्रक्रियाका बहुत बड़ा बंध आध्यात्मिक नहीं तो और क्या है। स्वूक मौक्तिक पदाओं तक तो आजका विशाल भी सीमित

नहीं रह गया है। उसकी उपसच्चियाँ निरन्तर मूर्तिके बाह्य कसेबाकी
 नेहकर गहराईमें छोपी सन्तियोंके अन्वेषणसे और उनके बायतीकरबने
 भास्वर होती जा रही है। कौन जाने एक दिन आत्मात्मिक वास्तुके
 मत्स्य को हमें बाज निताप्त कास्मनिक और अन्व मन्त्राके प्रतीक जैसे मानूम
 हो रहे हैं। वैज्ञानिक प्रक्रियाके बिरुद्ध अकादम्य प्रमाण बन बैठे। और
 फिर साहित्यकार तो मनोव्यपत्का प्राणी होनेके कारण विरक्त स्थूल इन्द्रिय
 बाह्य तन्मको ही सत्य नहीं मानता। उसके मत्स्य वैयक्तिक अनुभवमें यी
 कम प्रभावित नहीं हुआ करते। अस्तु।

‘अबोले बोले’ बुलन्दी कृतियाँ विविध स्वानोके केन्द्रमें सीमित होती
 हुई भी उन्हें ऐतिहासिक वाचनिक प्रवाहकेतनाकी महत्त्वापेक्षे संबोधित करने
 का प्रयत्न करती हैं। काशी जयपुर नाँवर भौगोलिक इकाइयाँ भर नहीं
 हैं। इन बाबा-स्केचोमें अतीत और अविष्यकी परस्पर-बिरोधी विद्याओंमें
 सम्भावमान प्रयासोंका एकत्र समुच्चय-संयोजन भी बिलामी बरेषा को
 इन्हें केवल ऐतिहासिक कल्पनाका कटा कबन्ध ही नहीं बनाता। बल्कि
 जीवित व्यक्तित्व प्रदान करता है। और ‘वसन्तान तो मानो मृत्युके काल
 पटकपर मनुष्यजातिकी पूर्वापर, आगत-अनागत अस्तित्वाधि की चिन्ता-
 यात्राका कक्षा बिट्टा ही टाँके पिमे दे रहा है।

सीमरा बरह साहित्यिक मुवात्तक चिन्ता-घिण्टोके व्यक्तित्वका अंकन
 है। बेषबकी आत्मघाताब्दीपर लिखे ‘अवास पतमरका कपाकार’ सीमक
 केसकी छेदकर अन्य निरन्व सम्बन्धित साहित्यकारोंकी अचानक मृत्युकी
 खबर सुनकर भोकोव्गारके रूपमें लिखे गये। पिछले तीन-चार वर्षोंमें
 एकके बाद एक स्तम्भ टूटते रहे जैसे निवृत्तिकी बिजली बार-बार निरन्त्र
 आकाशमें टूट टूटकर कन्वा-मन्दिरकी इन अनुमम कृतिबोको तोड़ती
 रही। और मेरा यह दुर्भाग्य था कि मूर्तियाँ वे ही टूटीं या मेरे अन्तर्मनमें
 आस्था और मन्त्राके पीठपर आसीम थीं। छोग कह सकते हैं कि आपको
 और अस्तित्वाधी अर्धपूर्व दर्दमन्धो व्यक्तित्वोंमें ही आस्था क्यों है?

मैं खुद भी इस प्रश्नपर अपने भीतरको कुरेबता रहा हूँ । इनमें कुछ ऐसा बरकर होया जो मेरे रक्त-मांसके शरीरके भीतर स्मिन्न चेतनासे सावुष्म पा जाता होया । चापव मेरे इन उद्गारोंमें इसका रहस्य भी मिल जाये । न भी मिले तो कोई हर्ष नहीं । किन्तु एक बीज माप अवश्य खोजेंगे कि इन व्यक्तियोंके निर्माणमें क्षामुमिकता प्राचीनता प्रमाय और परम्परा व्यक्ति और समाज तथा हर्ष और आस्थाका ऐसा अद्भुत समन्वय कइसि थाया ? तब आपको ऐतिहासिक प्रवाह-चेतनाकी विद्युत् चम्कती प्रक्रिया का व्यावहारिक दोष हो जायेगा ऐसा मेरा विश्वास है ।

निबन्ध चिन्तनकी रचनाएँ बाराबाहिक रूपसे जून १९५८से प्रकाशित होना आरम्भ हुई थी । उद्देश्य का समसामयिक हिन्दी-नवलेखनकी समस्याका पर सहचिन्तन । एक स्नेही बन्धुके सँघार और आग्रहपर यह काम उद्यम था । पर बादमें इसे स्थगित कर देना पडा कुछ तो इच्छिण कि ये अपचितसंक्षिप्त सीरियस हो जमी और कुछ इच्छिण कि अनेक मित्रों और बन्धुओं को इनसे परेशानी होने लगी । चूँकि इन निबन्धोंके सिलसिलेमें इनकी रचनाका कुछ बाह्य उपचार भी व्यक्त हुआ है इसलिए यही यह भी बता हूँ कि इस संग्रहके अनेक निबन्धोंके पीछे जो बन्धुओंके आप्रह्वी प्ररमा भी रही है । इनमेंसे एक बन्धु मुझसे असन्तुष्ट इच्छिण हुए कि मैं उनकी सम्भावनाओंके अनुबन्ध न उत्पन्न मानी मैं चिन्तनमें उनके आदर्शको न खपा सता । दूसरे बन्धुकी आप्यारिमकता मुझे मारी लगी । बहरहाल यह सब होते हुए भी मैं सबका सह-याग बना रहा और इसके सिध मैं सभी का आमारी हूँ ।

चिन्तनकी बात आयी इसलिए कुछ शब्द इन रचनाओंके सिधपर भी निबन्धित है । अष्टमश्रीय आलोचनाके बावेदार मेरे सहकर्मी अवश्य ही असन्तुष्ट होंगे कि इनमें कइतो बध-काम्य स्केच व्यक्ति-व्यंजक निबन्ध संस्मरण तथा यात्रा-वृत्तोंमें से किसीकी भी उपायुदा पत्रिका कइसि पासन नहीं किया गया है । यही नहीं इनमें कइी कपोपकथन है कहीं

आन्तरिक एकात्म्य (इन्टीरियर मोनोडाय) कहीं सुस्पष्ट वेदना-प्रवाह
 (स्ट्रीम ऑफ कॉन्सन्सेस) कहीं स्फुटि पुनरावर्तन (मेमेरी प्रसैस-बीक) को
 कहीं सांस्कृतिक सम्पर्कबद्धता और कहीं ऐतिहासिक सम्पर्कबद्धता (हिस्टॉ-
 रिकल इन्फ्लूएन्सिज्) कहीं नाटकीय पद्धतिका अनुसरण है तो कहीं मुक्त
 रचनात्मक विधान । आखिर यह सब क्या है ? यह मेरी विवशता है ।
 काफ़ी है कि मैं बीबीको घरीरका जमड़ा जकना कोट कुछ भी नहीं जान
 पाता । घायब घापेगड़ाबरका यह ककल मेरी बीबीके आदर्शका संकेत है
 कि 'सीली और कुछ नहीं मत-मुद्रि जकना सूत्रम मस्तिष्ककी विचार
 मालमात्रोंकी बाह्य क्पाकृति मात्र है। The style is the physio-
 nomy of the mind और मेरे निकट उरकी माधता व्यक्तित्वका
 विव्ययन है एक आध्यात्मिक प्रकिया । और मैं यहाँ सहायताके लिए मीन्स
 बार्नरकी ये पंक्तियाँ उद्धृत करूँया

'Style is a peculiar recasting and heightening
 under a certain condition of spiritual excitement, of
 what a man has to say in such a way as to add dig-
 nity and distinction to it. — [On the studies of Celtic
 Literature]

यहाँ आध्यात्मिकता अर्ध पौराणिक आध्यात्मिकता नहीं है । यह प्रेम
 कदापि नहीं होता चाहिए कि आध्यात्मिक भावसे पूजा-पाठ या समाधिसे
 किसी भी प्रकार सम्बन्धित है । आन्तरिक तन्मयता और अर्ध वस्तुने
 केन्द्रकी ऐकात्मिक एकाग्रता ही को यह विवेचन लिया गया है । मेरे
 निकट उरकी हुई वस्तु और उरकी ऐतिहासिक परिष्कारितकी मीम्सि
 वृद्ध-व्यक्तित्व समाहित करनेका प्रयत्न रहा है और यह अनुभूति जिस
 प्रकारकी विषयों सहज हंगसे व्यक्त हो सके उमीमें उमे हासनेका
 प्रयत्न किया गया है । ये रचनाएँ बने-बीचमे हाँचोमे टीकने बीटवी है
 मा नहीं यह प्रश्न मेरे निकट कोई खाम महत्त्व नहीं रखता । यैकोज

धिपरीका सत्य

बेचारिकता है, आत्मात्मकता है वाञ्छेय है, विश्लेषण और व्याख्या भी --
 य सभी 'ब्रह्म वस्तु के स्वभावके अनुकूल्य अपना रूप स्वयं ग्रहण करते
 रहे हैं और मैंने विषय विषयमककी तरह इन्हें कभी भी ताड़ित करनेका
 प्रयत्न नहीं किया है। मेरा कथ्य अपनी पूरी क्षमताके साथ इनमें अमि
 श्वरत हो सका है या नहीं इसपर प्रबुद्ध पाठक स्वयं ही विचार करें।

इस निवेदनके साथ ही मैं आपको धिखारोंका यह सेतु समर्पित करता
 हूँ। मानवताके विश्वासमय आस्थापुत्र पथचिह्न व्यक्तियों और निवार
 चारों बटगाओं और स्वामीके धिखारोंपर अंकित है--"मैंने इन्हें अपनी
 सीमित शक्तिसे बेसतका प्रयत्न किया है, आप भी इन्हें बेसते आ रहे
 होंगे अपने डंगते इस बार मेरे साथ इस यात्रापर चले गयी मेरी
 प्रायणा है। जीवन-यात्रामें कभी आप चले तो इन धिखारोंका एक क्षण
 रुककर सहारा के मौजिएया--"रास्तेके सारमोंका सीतल बरु आपकी बकाग
 को हरे--आपका पत्र मंगलमय हो--"। वस।

मार्ग तावच्छ्रुत्वा कथयतस्त्वत्प्रमाणवृत्तम्
 सन्देहं मे तदसु जलद ओप्यसि ओत्रपेयम् ।
 तिबः तिबः शिखरिषु पदे न्यस्य गन्तासि यत्र
 शीणः शीणः परिस्रुप्यः स्रोतसा ओपमुष्य ॥

अप्सी
 क्लिप्तमस १९९९ }

—शिवप्रसादसिंह



अनुक्रम

असौतिके तीरण

मण्डन मिश्रकी डाबरी	--	३
दक्षिणेश्वरन कदा	---	१
पाराका पाप	---	२५
रुबी । मेरी प्राण-बल्लमा	--	३१
पल्ल-धम मानुष-द्वारे	---	३८
देराकोटाका साक्ष	-	४३
बेहि मन पवण न संचरै		५५
तीव धेरे । एक क्षितिज	--	६३
धर धरम		७१

अबोले बोलै

महात्मसके अस्वममें क्यारी	---	८३
अमस्ताम	--	९४
काक इमारतोंका नगर	---	१२
मास्बुसकी बाहुई शीक	---	१११

पुष्पके अभावमें

धारमबिसर्जनकी पुष्प गाथा		
निराका	----	१२१
अदास पतझरका कथाकार		
केसव	----	१३१

मामलची कुस गवा		
पाखरनाक	---	१४
बेमाची बीवनक स्वामिमानी कडाकर		
पकषेपर कमू	----	१४४
बोकूम-मरी जिन्दगीक 'मावादार'		
हर्मिणे	----	१५
निबन्ध विन्तन		
मूदाब ध्येर सादिरपकर	--	१५९
संकायुक्त बनान कलास्वार्क बेडे	----	१६६
श्री श्री हम	----	१९
श्री क्वा हूँ	----	१८

अतीतके तोरण

- * मण्डन मिश्रकी डायरी
- * दक्षिणेश्वरने कहा
- * ताराका पाप
- * देवी : मेरी प्राणवहमा
- * पशु-प्रेम मानुष-द्वारे
- * टरा-क्रेटाका साक्ष
- * जेहि मन पवन न सकरे
- * तीन घरे : एक क्षितिज
- * चार चरण

मच्छन मिश्रकी छायायी

बीस दिन बीस बुके थे। महत्काष्ठके विराट् विहगके कृष्ण-गुम्फ पक्षोंके बीस क्षणिक कम्पन। समयकी अगन्त धारामें इस क्षुब्ध बीषि विनासका मूक्य श्री क्या ! किन्तु बीसवें दिनकी यह कासी राशि धाने क्यों मेरे लिए पर्वतकी तरह दुर्भय प्रतीत होने लगी। जानता हूँ कि प्रसूय होनेमें षर नहीं है। एक बच्चे का ही उपाकी नील-सोहित आमा पूर्व्वि सिद्धि-छोरको छने छनेगी। मच्छन मिश्रके द्वारपर पिबर-बद्ध सारिकाएँ अपने अम्यस्त सन्धोम 'स्वत' प्रमाण परत पमार्ज'का पाठ आरम्भ कर देंगी। माहिष्मतीकी घबरा अट्टालिकाजोपर बिनकरकी सारसवर्णी किरणें अगस्य मर-आरिषोंको प्रमादीका स्वर सुनायेगी। अपनी सत्सास मरी बाणीमें वे कहनी 'माहिष्मतीके विद्वग्जन पण्डित नागर और देखेंगे। क्या तुम्हें माकूम नहीं कि दक्षिणापथके मन्वासी शंकर और सम्पूर्ण विद्वग्मण्डलीके अर्द्धकरण आचार्य मच्छनके अक्षर्य घास्नाथका यह इन्सीसवीं दिन है ? क्या तुम्हें माकूम नहीं कि सम्पूर्ण भारत देशमें आज एक न तो इस प्रकारका विविध घास्नाथ कमी हुआ और न कहीं होया ? क्या तुम नहीं जानते कि इस घास्नाथमें निजायिकके आसनपर आचार्य मच्छन मिश्रकी विदुषी पत्नी सरस्वतीरूपा देवी भारतीय स्वयं विराट्माल है ?

और मैं जब एक बार इन बीस दिनोंके बारेमें सोचता हूँ तो जाने कैसी विचिता कँधी अलंघ्यसे हृषय भर लट्टा है। उस दिन मेरे पिता का बाढ़ था। ठीक प्रसूय बेकामें किसीने पुकारा था। अर्थात् लड़की थी। सारिकाएँ बँककर पंज मारने लगी थी। असाधित मसपालिकके मच्छन मिश्रकी छायायी

जोनेकी तरह ब्रह्मचारी जीवनमें गुप्त भावा था। प्राइमें संवत्सरीका जाना शास्त्र-विक्रम है न धा मेरे संस्कारी मनमें प्रमत्त करवेपर भी काव उमड ही जावा था। मैंने उसकी ओर तीव्र नेत्रासे देखते हुए कहा मंदम और अनुष्ठान कया ब्रह्मचारीके लिए स्वयम् हो चुक है ?

उसने कुछ कहा नहीं। पला-बुबला सरीर कायाम बैस—सगा मेरे जीवनके कोनमें पुष्पित कर्णिकार सडा है। उसके बेहरेपर न जोन था न भाकाव।

'तो क्या वापिक प्राइके इत पुष्प वर्षपर ब्रह्मचारी जाभाव मध्यन मिमक द्वारासे काकी द्वाप लीट जानेके लिए जाजापित हुआ है ?

संस्कारी स्वरके अकनवकी मध्यन मिमने कभी भास्वीकार नहीं किया है। मैंने पाग वाकर पुछ 'ब्रह्मचारी अतिविशेषो भव जाता है क्या चाहिए ?

'सत्प्राथ उतमे बीरेक कहा।

बहुत राकमपर भी मेरे अघरोपर हीसी पूट पडी थी। मैंने ब्रह्मचारी-की निपुड मालस लीसकी तरह निरबेध जीवनमें जाकर अपन अडके विपद् ककवा कदन करते हुए कहा था 'मध्यन मिमने द्वारासे शास्त्रार्थ-कामी कभी रिक्तहस्त नहीं लीटा है, आप मेरी अतिनिशामम पंच-मामिनी तरह पुत्रित होकर विमाम करं कल सुर्पकी पडली किरकके नाव ही आपकी मलोकमता पूरी करनेके लिए मैं तत्पर रहूंगा।

'इटाव हुआ ब्रह्मचारीके सकीपी अघरोपर भी एक छीन रेया तिनी और मिनी भी बीर राधिके अपतामपर प्राथीमे अकतरित प्रथम प्योति-रेवाकी तरह। जिजसा और विरवातकी इत रेयाके मध्यन मिमने छीन भावरस रेवा है चले वह अपने प्रतिद्वन्डीके बेहरेपर ही कबों न मिनी हो। ब्रह्मचारी बसा पया था—शास्त्रार्थ-कामी रिमबोके निविड समयमें मालागुछने अन करनवाकी मध्यन मिमकी एक-ककवा बुद्धिको आलोचित करके।

संसार मिथ्या है। ब्रह्म एकमेव सत्य है। कम जीवन्तो मृत्यु और
 व्यक्तके बन्धनमें पावते हैं। ज्ञान इस बन्धनका उच्छेद करता है। ब्रह्म
 चारीने गम्भीर मन्त्रोंमें कहा जाचाम यही मेरी स्थापना है। मैं इसकी
 पुष्टिके लिए सब प्रकारसे तत्पर हूँ। देवी भारती स्वयं निर्वासिक है।

किंचित् मुमकराकर भारतीने ब्रह्मचारीकी ओर देखा। पारिव्रातका
 रंग उमरसे कितना भी श्वेत् हो स्वस्ति अयच्छियाँ जगत् ही पाठी है
 इमे कौन नहीं जानता। धंकरने चेहरेपर हसकी अर्द्धिमा बौड़ गयी थी।
 ब्रह्मचारी बह रहा था 'आचार्य' मयि मैं इस धास्नापमें पराबिध हुआ
 तो कापाय बैस छोड़कर गृहस्थका श्वेत वस्त्र धारण कर बैसा और यदि
 आप पराबिध हुए तो आपको इन श्वेत वस्त्रोंके स्नानपर कापाय धारण
 करना होगा।

धास्नापमें इतनी विस्वाम-भरी वाणी इतनी अडिग उपपत्ति और
 प्रतिबन्धीकी ऐसी कठोर कम्पकारना भाषण ही कमी साभना करना
 पडा हो।

'संन्यासी' उत्तरापणके सम्पूर्ण वाक्चिन्मय आचार्योंको मंत्रस्त करने
 वासी वाणीमें अज्ञानक मन्त्र मेघ-ध्वनिकी परिमा समाहित हो गयी थी
 'ब्रह्म सत्य है। वेद स्वतः प्रामाण्य है। जीव और ब्रह्म कभी एक नहीं
 हो सकते। जीवके कम स्वभाव है। पेरबिहित कम ही उसे सुख प्रदान
 कर सकते हैं—ग्रह मेरी स्थापना है। मयि मैं पराबिध हुआ तो संन्यासी-
 का कापाय पहनने के लिए तैयार हूँ और यदि आप पराबिध हुए तो
 आप वैमिनिकी कम-मीमासापर पुनराचारा करनेवाले इस मन्त्रवाक्यके
 उच्छेदनके लिए आप गृहस्थ होकर मेरी शिष्यता स्वीकार करेंगे।

—और आज दोस दिन बीत गये। मने कर्म-मीमासाकी महत्ताको
 प्रमाबिध करनेके लिए कुछ भी उठा न रखा। इतिहास पुराण स्मृति
 बर्षान—कोई भी ऐसा वाक्य न कृत्य जिनके निगूड अन्तरात्ममें जाकर मैंने
 अपनी मान्यताकी पुष्टिके लिए प्रमाथोंका सम्बान न किया। मन्त्रन मिथ्या की

अपराधिता बुद्धि पतिपरामणा मारीकी तरह निरन्तर एक दौरपर लड़ी
 रही। किन्तु आह, जाने ब्रह्मचारीकी आँजोमे कौन-सी प्र्योति है जो कभी
 भूमिस नहीं होती। उसके अपरोपर मन्दार पुष्पकी तरह तीव्र मन्थवाभी
 यह कभी मुसकराहट है जो कभी सुप्त नहीं होती। दुर्धर्य निप्रत्नों और
 बाइबालिची तरह तर्कचारिधिको दुष्क करनेवाके सौयतोको जिस वाग्वा-
 राने बुटने टेकनेके बिप विवद्य किमा वा वह आज एक मानूठी का-
 चिनुमे टकराकर छिद्र-भिय हो रही है। ब्रह्मचारीकी तर्कपाठ अजर
 पयस्विनीकी तरह कभी प्रतिवृत्त-गति होनेका नाम नहीं सेती। मैं जानत
 है आज वाग्वाचका अन्तिम दिन है। आज निधय होकर ही रहेगा।
 'ममन्त मेरी अस्तरात्मा कहती है तुम वाग्वाके गुरु पापाक-सम्बोधि
 ब्रह्मचारीकी इस वाग्वाचका गेक नहीं सकते। वाज तुम्हें अपनी सम्पूर्ण
 कायाको इस जस-वेयके सम्मूल टिका देना होगा।
 मैं उसके सिपू नी तत्पर हूँ बेकि जैमिनीय माग्वाताओकी प्रतिष्ठाके
 लिय मैं कुछ भी सटा न रचूँगा।

मज्जाह्व हो बला वा। वाग्वाचका यह अन्तिम दिन कितना उग्र &
 मूय कितना भास्वर वा दिघारै कितनी शाप्त। पिजरस्व सारिकाएँ
 नि दाय्य सौमि गेके जैते इस करम परिपतिना अनमन कर रही थी।
 आचाप टाँकने कहा आप मेरे प्रत्यक तकके उत्तरम नहीं कर
 रहे है कि घतिम इनकी पुष्टि नहीं होती। यद्यपि मैं यह मातता हूँ घतिची
 स्पाफ्नाम मन्थ है। केवल उनके समझनमे बुद्धि मेर है। और यह मेघ
 आरने अन्तिम प्रस्त है यदि भारतीयका निधय आफके परामे हुआ तो अपनी
 पगात्रप स्वीकार करनको तैयार हूँ। मैं जानने उत्तरकी वाचना करता हूँ।
 मन्थानी पुछें दीने कहा।
 आप बरोक विपयम मरी बज्जारी अम्यवा भायम घट्टक न करें किन्तु
 शिपरोंका सेतु

संक्रांतों धृति-स्मृति एक साथ कह कि अग्नि अनुपम है तो इसे प्रमाण माना जायेगा ?

मेरी आँखोंके सामने जैसे सहस्रों सूर्य एक साथ प्रज्वलित हो गये । कम और प्राकृतिक सत्यके सम्बन्धमें यह एक अनुपमपूर्व तक था । आज मुझे अपनी सारी माय्यताएँ अपने पादमें जकड़ रही थीं । यदि कहीं हों तो 'अपत्य सत्य' का विरोध होता है, कहीं ना' तो वेद 'परत प्रमाण' सिद्ध होते हैं । मौनका एक विचित्र पीना मरा माथ मेरे अवरोंको जकड़कर बैठ गया । मेरे गलेकी बीजयन्ती माला मेरे अन्तर्बाहसे उद्भूत स्वासोस्ति सूख गयी ।

भारती आसनसे उठी । बड़ निर्णायक ही नहीं आठिबेया भी थी । बोली संव्यासी आप होगा मिठा ग्रहण करें । निजम सुना दिया गया था । मेरी पत्नीने प्रति दिनकी तरह 'संव्यासी आप मिठा और आचार्य आप भोजन ग्रहण कर' गयी कहा । तबयुवक ब्रह्मचारीके सामने माथा झुकाकर मैने कहा स्वामी मे हारा किन्तु अब भी एक सका मनमें है । आप कहें कि मेरी हार मण्डनकी व्यक्तिगत हार थी । अपि ईनिनिकी माय्यताएँ अमत्य नहीं है ।

आचार्य संकरने बड़े ममत्वसे कहा अपिकी माय्यताएँ कभी पछत नहीं हो सकती । कर्म मन धृष्टिके साधन है । उन्हें साध्य माननेसे हानि होती है । कर्मसे पुत्र बिसम ही तो ज्ञानका उदय होता है । अपिने कर्मको इसी बिसधृष्टिके लिए आवश्यक बताया था उसके बाह्य आडम्बर न फँसनेके लिए नहीं ।

दूसरे दिन आचार्य संकर जानेवाले थे किन्तु उन्हें भारतीयने रोक लिया । द्वारपर उमड़ते हुए जन-समूहको देखकर मैने समझा कि ये आचार्यको बिठा करने आये हैं पर उनकी आँखें एक विचित्र जोरास बरबरा रही थी । तो क्या जो मैने सुना वह सत्य है ? हाँ सत्य है ।

मण्डन मिश्रकी आचरती

भारती कड़ रही बी 'संन्यासी' आपसे मन्थन मिथ पराजित हुए—
 किन्तु यह अमत्य है। सारी समा आत्मबलसे बक रह गयी। आपने मन्थन
 निम्नके अर्थोंको ही पराजित किया है, मुझे पराजित करनेके बात ही ने
 आपके दिग्घ हो सकते हैं।

'देवी' में मारीये छास्त्राच नहीं करता संकरने कहा।

भारती एक कुटिल हँसीम अचरोंको तिर्यक करके बोली 'यह मैं
 जानती हूँ। आपने अपने छास्त्रार्थमे एक अग्रह कहा था कि सारी मन्थन
 है। आचार्य क्या आपका सर्व-स्वामी ब्रह्म सारीमे विद्यमान नहीं है? यदि
 है तो आप एक समान प्रतिद्वन्द्वीकी छास्त्रार्थ-याचनाको स्वीकार करें, और
 यदि नहीं है तो अपनी निम्ना माय्यतासे विरत हों।
 संकरने निर शुक्य किया था। वे छास्त्रार्थ करनेके लिए विवक्ष ने।

पूरे पन्द्रह दिन बीठ गये हैं। और आजकी यह भीमा रजनी मझे
 अपने छास्त्रार्थकी उस अन्तिम रात्रिकी यात्र दिखा रही है। माहिष्मतीम
 इस छास्त्रार्थमे अद्भुत कुतूहलकी मृष्टि कर बी है। पूर-पूरसे लोग एक
 पहर रात्रि छेप रहे ही किन्ती आक्रमणमे लिने चले आ रहे हैं।

छास्त्रार्थके लिए प्रतिद्वन्द्वी आमने-जामने बीठ गये।

भारती बोली 'आचार्य आजकी तर्क और बुद्धिमे पार पला कट्टि
 है। मैं आपकी विद्या बमनेको तैयार हूँ। केवल एक प्रश्न है और अन्तिम।
 'देवी' पूछें।

भारतीके अचरोपर बड़ी विरपरिचित कुटिल हँसी छप गयी। माय्य-
 किरण-सी काँच उठनवासी इस हँसीसे मैं परिचित हूँ।

बहु बोली आचार्य आजकी कितनी कमजोर हैं? उनकी विभिन्न
 स्थितियोंका परिचय बीजिए। कृप्य और शुक्य पद्यम इस स्थितियोंमे कोई
 अन्तर होता है? यदि हाँ तो बुबतो और पुरमक अन्तर इसकी पुबद्

सितारोंका सेतु

प्रतिबिम्बार्थे क्ताइए ?

मागी सभा स्वप्न । ब्रह्मचारीका बेहूरा कृष्णसे मारकत हो गया ।
उन्होंने गरदन शुका की । कुछ देर मौन बैठे रहे । अंत में अजीब कठनासे मर
बायीं । बे धीरे-धीरे बोले 'बेबी मैंने पराजय स्वीकार कर ली । मेरा ज्ञान
बधुरा है । सुकृतारानी तरह प्रगल्भित अंत में भूमिमें विजडित हो गयी थी ।

मारणी फिर मुमकरायी । वह आचार्यके पास बुटन टककर बैठ गयी ।
'आचार्य आपकी हारम ही आपकी जीत है । आपने हम प्रस्ताका उत्तर न
देकर अपने संन्यासकी मर्मांशको खलुष्य रखा ।

बहुत दिन बीत गये । मैं अब मध्यम मित्र न रहा । श्वेत पत्तोंके
स्वातपर कापाय पहुँचकर सुरेस्वराचार्य हो गया हूँ । संन्यासी । सांसारिक
प्रपंचमें अकम । किन्तु मनको शान्ति नहीं । बार-बार कोई पूछता है, क्या
जीमिनिके सिद्धान्त इतने निराकार हैं ?

'आचार्य' पास आकर एक शिष्य बोला 'सुना आपने ?'

'क्या हुआ ? मैंने उसे धास्यस्त किया । वह धीरे-धीरे बोला
'आचार्य पुत्र संकराचार्यने तो बड़ा अकम्य काम किया । डरते-डरते
कहा उसने आचार्यकी माता-भीका बेहान्त हो गया । शाश्वतोंने उन्हें
बम-प्रोही कहकर सबकी अम्पेष्टिमें मम्मिस्थ होनेसे इतकार कर दिया ।
अन्तमें धंकरने अपनी मक्ति मृत-शरीरके तीन टुकड़े कर दिये । वीर हूर
टुकड़ोंको बासी-बारीसे ध्मणालमें से जाकर बाह-कर्म किया ।

लड़का चुप हो गया था । मर मनमें मोहकी कासिध बुर गयी थी ।
धंकरने अपनी मृत मक्ति सबके टुकड़े नहीं किये थे उन्होंने कर्म-काण्डकी
सारी बर्बर समान-बिरोधी मिथ्या सीमाओंको छिन्न-मिन्न कर दिया था ।
मैं हार बहुत पहले समा था किन्तु मनम अकण्ड मैं शम्भ तो आज ही पूटे ।

अज्ञानविमिराण्यम्य शलायनससाक्या ।

अधुनभीछितं येन तस्मै धीबुरवे नम ॥



दक्षिणेश्वरने कहा

दक्षिणेश्वर—तबीन भारतकी अमृता परा बालका आकासबाणी-वेन्द्र ।
 जाने किछ बडीसं इस अपुव बुम्बकीय आक्यबसे पूष स्वानको बेखतकी
 बसमठी इच्छा हृदयको मय रही थी । जाने कबसे अहम्प साम्साका अपवार्थ
 बुग मेरी सारी बेतनाको जर्जरित किमे डाल्ता बा । बीर अब सामने दक्षि-
 षेत्र है तो जाने क्यों वह हलचल घान्त हो गयी है । तबीकी बंधन
 बारा भी स्थिर है पालें झुकी है माने मुस्त बलबोकी तरह बलकी छाती-
 पर मतिहीन-सी पड़ी है । उत्तरकी बाटिकाके हरे पृष्ठ-पटलपर भी बम-
 बमाले कंगुरोंसे मण्डित काली मन्दिर भी रामकृष्णकी बागूत आराध्याका
 विघात मन्दिर नव दुर्गाकी साधार सम्मिश्रित प्रतिमाका पुंजीमृत पन
 विग्रह ।

सामनेक नटनग्दपके श्रमसे पीठ टिकाने एक लणके छिप बैठ्ठा है
 तो जाने किछनी मिन्नी-जुकी आवाजें कहुकहे संवीरके अछूते स्वर बना
 हय गावकी तरह अपने अवमुच्छयमें समेट लेते हैं । मन बककर इस अजीब
 स्वर-संयममें डूब जाता है ।

इसी नटनग्दपके पास एक दिन बहू व्यक्ति भी खड़ा बा जिनने सरय
 की पुकारको प्रवधान कहा बा । बागुरी कहा बा बोधा कहा बा । रोते
 हुए रामकृष्णके बरय हाथको अपने गिरये हटाकर नरेन्द्रने कहा 'मेरे
 प्रति तुम्हारी यह आभक्ति तुम्हें अपने उद्देश्यसे नीचे बिरा बेगी' और
 तब रोड-रोडकी तीसो आसोचना अपने आन्तरिक स्नेहकी निडम्बना मन
 के अट्टम बालास्यकी निम्नाने परेधान हीकर रामकृष्णने कहा 'बेवद्द

मैं जब अधिक न सुन सकूँगा। मैं कहूँगी है कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ क्योंकि मैं तुममें ईश्वर देखता हूँ और जब तुममें मैं ईश्वर न देखूँगा उस विलसे तुम्हारा मुँह देखना भी मुझे पसन्द न होगा।

माँकी सक्तिके सामने नरेन्द्रने बुटने टेक दिये। सामना धीर दृढ़ प्रसन्नो अमत्कार मालगेबाछा तक अट्टामे दूब गया। ब्रह्म-समाजमें वीक्षित विबन्ध काष्ठीकी मूर्तिके सामने प्रणत-सिर बना रह गया। ब्यवसायात्मिका बुद्धि म्हासमाजमें निमग्न हो गयी।

किन्तु, विबन्धनान्दने यदि बुटने टेक दिये तो टेक दिये 'उन्हे पूज्य-का योयी क्पाश प्यारा था जो रामकृष्णकी प्रार्थनापर उनके मिथन का देश-देशान्तरमें प्रचार करनेके सिद्ध नरेन्द्रके रूपमें अस्तित्व हुआ था और आज अस्ती बय बीत चुके हैं। अस्ती बयमें पृथ्वीने दर्जनों बार ममा आचरण पारण किया है। अस्ती बयमें मानव-बुद्धिने बीसियों मंत्रिसे पार ली है बीसियों क्षत्रौम उसन पुरानी सीमाओंको तोडा है नय कीर्तिमान बनाये है। आज मानव-बुद्धिकी वैभवश्री सुदूर नक्षत्रोंमें पञ्चरा रही है' 'आज वह प्रकृष्टिकी बुनेष सीमाओंको तोड़कर अपनी सत्ताकी अविशेषताकी निरन्तर घोषणा कर रहा है। इसलिए, आज वह आसानीके साथ आध्यात्मिक अमत्कारके सामने बुटने टेकनेके सिद्ध मजबूर नहीं है। आज उनके गर्वोन्नत अस्तकको झुका देना उठना आसान नहीं है।

जुगुप्सासे मुहको विडुत करके हाइतरिख विमर कहता है 'यह भारत है, जिसने देवीको क्रूरतम रूपमें उपस्थित किया है काली असीम-भय करत अंकास्काय नारी जो सोपडियोके देशमें निवास करती है। (Die Indische Wellmutter page 190) स्ट्रुट फिगल इस भयंकर देवीके प्राचीनतम रूपोंका सन्धान करते हुए कहता है, 'उत्तरी हिस्से बिस्तानकी खोज नदीकी बाटोमें प्राप्त ये छोटी मूर्तियाँ बिलके सिरपर

कमला या कमलका मुकुट है, वृताकार वसु-गुणक छेदके ऊपर चौड़ा
 कलाह है, उत्तुकी चोंचकी तरह नाक और बन्द सिके मुँह है। निरुचय ही
 उस देवीके स्वल्प है जो मृतकाली संरक्षिका कही जाती है जिसके लिए
 कर्म्मों त्यागके साथ बाने भी रखे जाते थे। (प्रीहिस्टोरिक इधिया पृष्ठ
 १२१-२७) मृतकाली संरक्षिका देवीके आधुनिक रूपमें भारतय दुर्गाकी
 पूजा होती है, जो हाइपरिख जिनरके अनुसार हिमाक्षयी कथा है
 बिनाशिका है, जिसे पार्वती भी कहते हैं। एक अंधारज बिसने १८७१
 में इस देवीकी पूजा देखी जो सिम्ता है कि प्रतिदिन बीस मीम डार्ड
 ची बकरे, और इतने ही सूजर मन्दिरमें काटे जाते थे। बलिवरीके नीचेका
 कुम्ह ताजे मृतके मरा रहता था और दिनमें कई बार बाल डम्कर इस
 मुद्यामा जाता था और वह खून-सना बाल जमीनके भीतर पैदावार बढ़ामक
 लिए गाड़ दिया जाता था। कालीघाट कम्कलाका मन्दिर प्रतिदिन होम-
 वाली बर्गकर बलिके लिए मछलूर है। नि सन्देश कालीघाटका मान्दर
 सिस्वका सबसे बड़ा खूनी मन्दिर है। दुर्गा पूजाके दिनोंम सिध तीन
 दिनाके अन्दर ही कठीम आठ-सी बकरोकी बलि होती है। खूँकि जोमन
 कतीने किया है, इसलिये उसे प्राणकी बलि भी देनी चाहिए। (जिमा
 पृष्ठ १७९)

विदेघियाके मुँहसे ऐसी बालें गुनकर इस आइयेससे सिधमिसा मध्य
 है किन्तु हमें अपने हृदयको भी टटोकना चाहिए, कि क्या हममें-ने बहुत
 के मनमें भी यह संका नहीं है? क्या हम अपनेने ही बार-बार मह नहीं
 पूछते कि जो जन्मपाता है वह पुत्रोंकी बलि देने सेती है!
 मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि इसमें तापजया गुस्ता होनेकी बाल नहीं है।
 हम धार्मिकपूजक लारी-भेठनाके विकारका मूल्य अन्वेषण करता चाहिए।
 जबतक हम मानुनाकितके विकारका निरूपस मनोवैज्ञानिक अध्ययन नहीं
 करते हमारे मनकी इन संकाओंका कोई नबापाल नहीं मिध मचता। मैं
 भी इन विस्मयका हिमाक्षयी हूँ। आज विन्ममें अनुसिन् बरान्ति है कम्ह

सिन्धुके सगु

है, संघर्ष है। इसे मुझसानेमे हम अलगमर्म है क्योंकि हमने पुरुष-चेतनाके अध्ययनमें ही अपनी सारी शक्ति मह कर बो है। हमें आज मारी-चेतनाके अध्ययनकी विस्तेषणकी आवश्यकता है। विद्वन्म्यापी मातृपूजाका एही ज्ञान हमे कबाबिदु मारी-चेतनाके विस्तेषणमें सबसे अधिक सहायता पहुँचा सकता है। इसीसिद्धि आजके मनोवैज्ञानिक मातृसक्ति-चेतना (The great mother Archetype) के अध्ययनको बहुत अधिक महत्व देने ममें है।

संसार मरम प्रचलित मातृपूजाके विभिन्न स्वरूपों आरामों एवं पठ तिबोको बुझिमें रखकर यदि हम समष्टि-मारी मूर्तिपर विचार करें तो हमे कमेया कि मारी-पूजाके मुख्यतया दो ऐतिहासिक स्तर है १ भयकारी माता २ उभयपनकारी माता।

१

प्रागैतिहासिक युगसे मातृपूजाके विभिन्न संकेत प्रस्तरखण्डों दृष्टी मूर्तियों अथवा ऋद्धाभोंपर अंकित विचित्र रूपमे मिलते है। चूँकि मनुष्य जन्म लेते ही माताकी गोबमें अठा है, इससिद्धि उसके हृदयपर मातृ-चेतनाका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। शुरू-शुरूमे परिवार जब मातृसत्तामय के तो मह प्रभाव और भी पहर और व्यापक रूप धारण करता गया यद्यपि आज मातृसत्तात्मक युगके सही रूपको समझानेवाली वस्तुओंका अभाव है। यह पूरी सामग्री महाकाव्यके पेटमें समा बुझी है पर जो कुछ प्राप्य है, वह भी इसके परिकल्पित रूपका आनन्द विद्यानेके सिद्धि फलित है। पाषाण युगकी मूर्तियाँ प्रस्तर खण्डों अथवा बुद्ध-चिह्नोंमें मारी मूर्तिकी समप्रताका बोध नहीं होता। प्रजानवा प्राय उबर तथा बछ-अन्नकी है। तिर है ही नहीं नुबारे सिद्धि संकेतोति व्यक्त की गयी है। उमरे हुए उबरअन्नको देखकर मनोवैज्ञानिकोंने अनुमान कमाया कि यह बध अन्ना सृजन-शक्तिका सूचक है। इन मूर्तियोको पृथ्वीसे संयुक्त विद्याया गया है मानी मातृ-शक्ति पृथ्वीसे अनिष्ट रूपसे सम्बद्ध थी। वायमें बुद्धिभेदवत्त कहा

मूर्तियोंके लिए आसनकी जोख हुई और मनुष्यको पकड़ते जैसा बीर नया आसन मिलता । इसी कारण पकड़के साथ ही मातृमूर्तिकी सम्पृक्ति बढ़ने लगी । विभिन्न जोरों मीष्टन सेम्युजिन आदिकी बेतम मूर्तियाँ इन आरम्भिक पूजाकी प्रतीक हैं । शीक और बालकन्य प्रदेसाकी पापाम्पुयीम मूर्तिबोधे धीरे-धीरे शारीरिक मटनके विकासका पता चलता है । इस कालमें मन्म-मूर्तियाँ भी मिलती हैं । भिन्न सीरिया मेसोपोटामिया ईरान तथा एशिया माइनरके इलाकोंमें प्राप्त गंगी मूर्तियोंन नारी-अर्थोंको उभारकर दिखाया गया है जो उसकी सृजन-शक्तिके सूचक हैं । (पेन टेराकोटा प्री-क्रोसम्बियन साइप्रसकी मूर्तियाँ २५ ई पूव आदि)

इन्हीके साथ-साथ कुछ टिगनी मूर्तियाँ भी मिली हैं जो बहुत मजबूत और भयकारी हैं जिसमें अक्सर बड़े-बड़े छेदके रूपमें दिखायी गयी हैं । ये 'बलुमूर्तियाँ' प्रायः इन्हीं या हाथोंके साथ मिली हैं जो इन बालकी सूचक हैं कि मातृपूजामें भयका योग होने लगा था । बहु मनुष्यकी देवी मानी जाने लगी थी । जूना-मत्सरकी बनी फ्रांसकी मियोभिचिक मूर्तियोंमें यह मय देखा जा सकता है ।

मध्यकालमें कृतीव-कृतीव सभी देसोंमें भयकारी मातृमूर्तियोंको पूजा का विधान लिखायी पड़ता है । ता-उन आइमिन हीबोर और कान्की घामर इनमें सबसे अधिक ममानक रूप हैं । इन मूर्तियोंके साथ बाहुतक रूपमें सिंह बड़ियाक डिप्लोटेमसकी कल्पनाएँ चलती हैं । जार लप्पर कुछ कुछ तथा डूमरी तरहके रक्तपात्र उनके साथ अनेक रूपमें मम्बड हैं । भिन्नकी देवी मेकवतथा प्रतीक पृष्ठ हैं । युनानके पूर्व-ईमेनिक इतिहासमें मद्रुमा ऐमी ही देवी है । म्लोवीअनिकाका कहना है कि मजकारी मातृपूजामें सधन रूप सिंह बड़ियाक रक्त मृत्यु आदिका विवरण प्राप्त होता है, जो इन बातका सूचक है कि मनुष्यके मनमें मातृगतिका मय बढ़ी बहरासि जना हुआ था ।

इस भयका कारण क्या है ? मातृमत्ताक युगमें जब पुरुष अपने जन्म

पालन और रक्षाके लिए मारी-मुखापेक्षी वा तो वह क्षायक इतना मयभीत न था। यह मय उसके मनमें बाहमें जममा और निम्न-निम्न कारकोंसे निरन्तर बढ़ता गया। एरिष म्युन्न-वैसे प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकका कहना है कि यह मानवीय चेतनाके संवपकी एक दर्दनाक कहानी है। चेतना पुण्य शक्ति है कमसे-कम उसका अनुभव 'पुण्य-शक्ति'के रूपमें ही समझा जाता है। मातृपूजाके विकासके विभिन्न स्तर बताते हैं कि किस प्रकार मानव-चेतना आरम्भमें मानुसक्तिपर अवलम्बित और उसके आश्रित थी वैसे वह प्रिय पुत्रके रूपमें स्नेहका आसम्बन भी और वैसे वह बाहमें पुण्यके रूपमें मानु-शक्तिके आधिपत्यसे मुक्त होनेके लिए संवप करती रही। चूंकि पुण्य-चेतनाके मानुसक्ति और उसके प्रभावसे मुक्त होनेका संवप हमेशा दुःखदायी होता है, इसलिए इस संवपमें भी मय मृत्यु शोकका प्रादुर्भाव आवश्यक था। मयकागी मातृ-शक्ति अचेतनाका प्रतीक है इसी कारण उसके साथ अन्यकार कुप्यवध वाली कुप्यार्थ, ईत्य राजस मृत्यु-सूचक पत्नी डगबने पणु सर्व सिद्ध आदिका संयोग दिखायी पड़ता है। उस युवमें शक्ति केवल मारीमें प्रतिष्ठित मानी जाती थी इसी कारण उग्र प्रकृतिके वेग और आघात वैंबी विपत्तियाँ बीमारी मृत्यु सुद्ध-संवप आदि सभी रूपोंमें रक्षार्थके लिए मनुष्य मातृ-शक्तिको पुकारता था और रक्षा न होनेपर शक्तिको उसीके कोपका परिणाम समझने लगा।

२

किन्तु, मातृ-शक्तिका सिद्ध मयकारी रूप ही हमारे सामने न था। मारीका एक उपयनकारी रूप भी है, जो हमेशा हमारी मानवजातिको आवे बढ़नेकी प्रेरणा देता रहा है। वास्तवमें परिवर्तन (ट्रांसफॉर्मेशन) उपस्थित करनेकी शक्ति मारीमें जन्मजात रूपसे वर्तमान है। मारीकी धारोक्त कठम ही परिवर्तन-शक्तिसे ओतप्रोत है। वह अपनेम और अपनेसे बाहर बड़ी क्षीमतासे परिवर्तन उपस्थित करती है। वह

जो धूनको रूपमें सुकको सिद्धमें बरक सफ़्तो है, मनुष्यके मन और
 आत्मामे परिवर्तन क्यों नहीं से जा सकती? गारीके छरीरमे 'रक्त
 चमत्कार (ब्लड मिस्टीज) का अध्ययन करनेवाला कहता है कि
 उसका हीना पुरुषसे बहुत मिला है। शत्रु-नाम गर्भाशय और पर्व-धारण
 की अवस्थाओंम न सिर्फ़ यह खुद बरकतो है बल्कि अपने भीतरके सिद्धों
 की बदलनेका कारण और आधार बनती है। पुनोत्पत्तिके बाद उसकी
 उत्पन्नकारी शक्ति का प्रभाव उसके बातावरणपर स्पष्टतया परिलक्षित
 होता है। वह पुरुषको प्रेरित करती है, कमरठ करती है। वैवाहिक
 जीवनमें आनेके पहले भी वह पुरुषको आकृष्ट करती है। एक राजकुमारी
 के लिए सैकड़ों राजकुमारोंका संघर्ष और योग्यताके लिए परीक्षाका
 विधान उसकी शक्तके परिचायक है। वह प्रसन्न है सहायसुविधपूर्ण है,
 समृद्ध है तो शान्ति है, मुक्त है, एखन है और यदि वह मुक्त है, निरोधी
 है, तो जीवनमें अकर्मण्यता पतन निष्क्रियता बसायित और दुःखका राज्य
 छा जाता है। पुरुष-अशक्ततामे परिवर्तन वह दोनों ही अवस्थाओंमें से
 आती है। गारीके इत उत्पन्नकारी रूपको दुहितें रखकर मानव जातिन
 मातृ-शक्तिकी शासनके ऊर्ध्वस्वी रूपका प्रस्फुटन भी किया है। देवीकी
 शिर्ष मयकारी मूर्तियोंमे ही हमारे पक्ष गभीरत मन्दिर पुष्पार्ण, ऊर्ध्व
 आदि नहीं भरी है, बल्कि हमने अपने मनके उत्पन्न आवरण एही
 मूर्तियाँ भी प्रतिष्ठित की हैं जो सौन्दर्य शीघ्र और शक्तिही अनुभव
 अनिच्छाही है।

उत्पन्नकारी मूर्तियोंकी पूजाका भी बल्कि विकास हुआ है। मयकारी
 काही मूर्तियोंके पेटसे ज्योति ऐखन और शक्तिही गयी फिरसे पृथी है।
 यदि नीला इराजना आकाश और काही रात मयकारी मातृ-शक्तिका
 प्रतीक वा तो सूरज चाँद छिठारे उसके ठेकके पूज बनकर तिल उठे।
 इती करण प्रायः विश्वके सभी आदिम धर्म-विश्वाशोंमे से प्रकासपूर्ण
 काही यदि बरद पुनोत्पत्तिके रूपमें विद्यमाने बने। मातृ-शक्ति अन्वधारके रासधर्म-

का विहीन करलबासी बतायी गयी । अग्नि और वायुको उत्पन्न करनेवाली कही गयी । मिस्रकी सैक्रेमेट अग्निदेवी है और वास्त बम्पदेवी । नबका प्रकाश मिस्रकी सीमाको सौब बुना था जो प्लुटार्क (Plutarch) के पाठामें 'बहु सब है जो वा जो है और जो होमा । जिनका आचरण किसी मत्स्यमें न हटा है, न हट सकता है । वह न केवल प्रकाशकी देवी है बल्कि सारी जीव-मृष्टिकी भाम्प-विधात्री है । उसकी कुत्तके विना एक पत्ता भी नहीं चिन्न सकता । वह भाप्यके बाह्यको बुनती है । मेघ आइसिस इमेफिमा इलेखा आदि सभी भाम्पकी स्वामिनी है सृष्टिकी बन्धवात्री भाम्पविधात्री । वैसे रामहृष्यने कहा था कि 'बहु मरुडीकी तरह आस्के-को उदरसे उत्पन्न करती और ममताके कारण उसीमें ज्येष्ठ जाती है । ये सभी देवियाँ आराधनासे प्रसन्न होकर राक्षसोंको संरक्षण देनेवाली किन्तु उनके उत्पन्नकी अति बेग्नकर उनका विनाश करनेवाली है । राक्षस और बैबता दोनों ही इनके पक्ष हैं पर ये इमेधा देव-मृष्टिकी रत्ता करती है । आदिमें सब्ब बन्धकार वा मातृ-बन्धिकी रूपसे प्रकाश हुआ रत्तममें प्रकाशको सा जेना बाहा देवताओने माँकी प्राप्ता की । देवीने राक्षसोंका विनाश किया 'यह कथा सभी देवोंमें बोके उल्ट-फेरके साथ बतमान है । मनु-रत्तम बन्धका प्रसंग इसी विस्मयायी इतिहासका प्रकाशमान अंश है ।

मातृगति बन्धकार है प्रकाश है । साथ ही बरु है पृथ्वी है वन स्पति है । इसी कारण उसकी बन्दना पृथ्वीके रूपमें और वनस्पतिदेवियोंके रूपमें विश्व-भरमें अनादिकालसे व्याप्त है । देवीको वनस्पति और वृक्षोंकी स्वामिनी कहा गया है । मनु-पके लिए अन्न और 'अन्नपूर्णा' दोनों चाहिए, इसी कारण मिन्न-मिन्न देवोंमें मिन्न-मिन्न समर्पणोंपर गवात्र उत्सवोंके साथ देवी-पूजाकर विधान है । मिन्नम वनदेवी जो जीवोंके पालनके लिए फल देती है आबुरके पेन्पर निवान करती है । हीरोर और नू ऐसी ही देवियाँ हैं जिनने वृक्षोंसे गुपका फल निकलता है । वृक्षोंकी यह विग्य बस्वना भी पितनी व्यापक है । बीताने अस्वत्थ वृक्षकी तरह प्रायः इनकी

वृक्षदेवताके कहा

यह स्वयं विस्तार पृथ्वीपर है। ईसाई और हिन्दुओंमें यह विस्तार
 बहुत प्रबल रूपमें पाया जाता है। देवीका प्रमाण वृत्तों तक ही सीमित नहीं
 है। कमलका पुष्प देवीका सर्वांगीण फूल है। आइसिसके रत्नका पहिया कमल-
 का है। देवते और मेडोनाके हाथन कमलका फूल है। ताराका नाम
 कमलना है। 'श्वेत-पद्मना' हमारे लिए अपरिचित नहीं है। राम धर्म
 स्वर सेरेस और स्पेस सभीके हाथोंमें वेहूँ या जीकी बालियाँ हैं।
 अमपुष्पके हाथ अग्रपान है और वह विस्म-अग्रपान अपना सब कुछ
 दाग देनेवाले शिबको भी अग्र-दाग करके अपने विस्मवाणी रूपका प्रमाण
 देती है। बुद्धदेविभोग सायद सर्वांगिक सवात रूप धारणकारी हैं। यहाँ
 दुष्कल स्र गया था। गी वर्षके सुलेके कारण अम-स्रोत मूल गये। जीव
 मरने लगे 'तब ममतामयीकी असीमोठे क्पातार अंगुलीकी सही कल गयी।

शत शत मत्रों स परसामा ना स्नि तक अदिरल जल।
 मुझे जाँचो की निया अमृत पल पूल शाक दल ॥

वृत्तोंकी तरह देवी पशुभान्नी भी माँ है। बट्टामन्नी भी पर्वताकी भी।
 धरमाक हाथाम जीकी बालियाँ हैं और वह भेड़ोमें पिरो है। यह अथवा
 बेल मात-शक्तिका सर्वांगीण बाहन है। साइबले (रोम) धरबुना (इटली)
 और दुर्गा मित्रपर बहती है। एलिस बो मित्रोके बीचम लड़ी है, कटे
 मित्रोमें खेल्ती है, मेडोनाके रूपम यह मिहामनपर बैठती है। इनका ही
 मूर्ती देवीके किए मछली मूड उल्लू तथा अनेक पशु-पक्षी सवारीके काममें
 लामे जाते हैं। बहुत-नी देविभोगके शरीर भी जानवरोंमें निष्कटे मुह्यते हैं।
 बहनेका कारण यह है कि मनुष्यन सभी रूपाम सभी आकारमें देवीकी
 पूजनेका प्रपल किया है।

मूर्ति स्थापत्य विचकमा संवीत काम्य शरीरमें मानु-शक्तिके प्रतीकोत्ती
 प्रकल्पता है। वह कला और ज्ञानकी देवी है। लीनयका पुत्रीमूर्त
 विपह है। बरके पुत्रोंमें लेकर मन्दिरके हबनपुच्छ तक कमरोंमें लेकर
 मन्दिरके पत्रमह तक समोग-धम्मामे लेकर ममाधिके रवान तक सर्वत्र

उसका आधिपत्य है। कपड़े बुननेसे लेकर मातृ-शक्तिकी विभिन्न मूर्तियों के लिए पटांबर तैयार करने तक मानव जातिने अपने मन और शक्तिमें अपने किराती उन्नति की है। विषयमं जो कुछ भी सुन्दर है शक्तिपूष है तथाचारमय है वह सब मातृ-शक्तिका ही लय है।

आध्यात्मिक उन्नयन मातृ-शक्तिकी पूजाकी सर्वोत्तम उपलब्धि है। वह मनुष्यके चरित्रको पूषतया बढ़ल देती है। मातृत्वकी माधुर्यता पुत्रको जग्य देनेमें है। मातृ-शक्ति प्रकाश-पुत्रोंको जन्म देती है। जमना व्याख्यात्मक उत्कृष्ट अनुसनीय है क्योंकि वह राम हृष्य महावीर बुड ईना मुहम्मद मूना सबकी जमती है। इन प्रकाश-पुत्रोंके जन्मका एक मात्र ध्येय सखीको है इनीलिए ईसाई लोग उसे 'शास्वत कुमारी' भी कहते हैं। मातृ शक्ति अपने विकासकी चरम स्थितिमें बुड विद्या या ज्ञानका रूप धारण कर लेती है। मोक्षिया छिन्नोमोक्षिया धारा (विधि) होयमा (ज्ञान) जाति ज्ञानकी देविर्वा है। सकीना मयबन्का ही दुमरा रूप है और रामेक अपने पुत्रोंके लिए हमेशा अध बहाती रहती है।

आध्यात्मिक उन्नयनक चराठलपर उपस्थित मातृ-मूर्तियोंमें भारतीय देवियोंका अपूष स्थान है। एरिध मूमन क्यता है कामान्तरम भारतीय मातृ-शक्तिने प्रकाशपूष उन्नयनकारी रूपके चरम उत्कृष्टको प्राप्त कर लिया। केवल तन्त्रोकी शक्तिके रूपम ही नहीं काली स्वयं जो भयकारी मूर्ति भी उन्नयनकारी आध्यात्मिक स्तरपर स्वतन्त्रता और मुग्धाकी महान् देवी बन गयी जिसकी तुलनामें परिषमकी कोई देवी ठहर नहीं सकती। और सर्वोत्तम रूपमें 'तारा' का जय हुआ जिसके देवी प्रकाशकी कोई सीमा नहीं। प्रज्ञापरमिताके रूपमें वह बोधिसत्वोंकी भी जमती है। (दि ४८ मंदर पृष्ठ ११२)

वस्तुतः भारतीय वाङ्मयमें पराशक्ति जमना देवीके रूप मूम और शक्तिका जो चिचरण मिमता है, वह कई दृष्टियोंम अनुपम है। देवीका स्वयं सम्पूष भारतीय साधनाकी म्मोत्र परिणति है। संसारमें जो कुछ भी

मर्य है सिव है, सुन्दर है वह सब यहाँ एकत्र समन्वित है। वह देवसंस्कृतियों
 का समन्वय है पर उसकी जननी भी है। संसारमें जहाँ नहीं भी सुविधा
 पवित्रता कृपा उदारता कृपा वेतना बुद्धि जो कुछ भी है, सब उसीका
 अंग है वह सभी अमोघी ममति है सपने अन्त पर समय परिष्कार है।
 वह सभी शक्तिमान् तलबोके भीतर अत्यन्तित्त छक्ति है। आजके वैज्ञानिक
 युगम भी 'छक्ति' नाम छिद्रता सामक है। पर जान बुझरुके धर्मोंमें
 समाजकी छित्री भी मायाम इतना अर्थवान् कोई राज नहीं है, केवल
 संस्कृतका 'छक्ति'। यथोक्त ब्रह्मके रूपमें छक्ति ही विश्वका कारण है और
 विश्वके रूपम काय ओ उनके परमि उरगत होता है। वही कारण है,
 वही काय। इमी कारण योगिनी हृदय-तन्त्र उसकी कल्पना कहता है
 प्रणाम है उस मनु-विष्वात्मक रूपिनी महासक्तिको जो कला और काय
 (Time and Space) म सब स्थित है और जो समस्त जीवोंमें बाधु
 प्रकाशकी तरह विद्यमान है। (छक्ति और शाक्त पृष्ठ २७)
 छिद्रनी व्यापक है यह मातृ-शक्तिकी पूजा। छिद्रता विपुल है इसका
 एतद्वय। छिद्रनी अमादि है इसकी कल्पना। छिद्रता परिणामय है, इसकी
 माधनाका इतिहास। मारे मूमण्डलके कण-कणम इसके प्रति निश्चित
 यज्ञाक चिह्न विद्यमान है। जहाँ भी माँ है मृष्टि है वहाँ सब मनुमानि
 की पूजा है। जो लोग इस पूजाके बारेमें वैदिक-अवैदिक धार्मिक
 अवास्थीय मर्यादित-अमर्यादित विवाद उठाने हैं वे छिद्रनी संकुचित
 बुद्धिसे चिन्तार हैं।

इन मनोवैज्ञानिक विस्लेषणसे कुछ ऐसे तर्क सामने आते हैं जिन्हें
 अपनी सीमाओंके कारण मनोवैज्ञानिक धामने से माना नहीं चाहते। न. य.
 यह विस्मयक इन बातों और संकेत नहीं करता कि अन्तर्विद्वान्से
 मात्र एक मनुष्य जिगी विरह्य सत्ताके प्रति विज्ञानु रहा है उधने उने
 पूजा है प्यार छिद्रा है—कभी भयक कभी यज्ञाक कभी मन्त्री छारी
 बोधक भावनाकाके विषय निवेद्यके साथ। आज हमारा विज्ञान एक ऐसी

विहितमें फ्लोच गया है जहाँ वह पहलेकी अपेक्षा ज्यादा मज्र है विनत
 है, उसमें वह उठावछापन उग्रता और 'बाकोस नहीं है जो सतहकी
 घटावकीमें या जिसके बखीमूत होकर वह धर्मकी हर मान्यताको चुनौती
 देगा अपना कठम्य समझता था । आज मानव ज्यों-ज्यों मयी गतिपाकी
 खोज कर रहा है ज्यों-ज्यों प्रकृतिके रहस्यको समझनेमें सफल हो रहा
 है त्यों-त्यों वह इस त्रिपुरसुखरी प्रकृतिकी असीम शक्तिमोस अभिमूत
 होता था रहा है । आज यह पृथ्वी कितनी तुच्छ हो गयी है हमारे
 सामने अनन्त प्रकाश अपूर्वी परिधिमें फैले हुए असंख्य नक्षत्र प्रह
 केतु, तारासुंन नित नये वैविध्यके छाव उषित हो रहे हैं । ब्रह्माण्डमें
 व्याप्त इस अनन्त चेतना-शक्तिके हम यदि विरोधी हैं तो हम कितने
 तुच्छ हैं कितने असक्त कितने पंपु हैं । यदि हम इस विराट अन्तर्गतिनी
 शक्तिकी वास्तव धारण सम्पूक्त हैं बहुत्वकी ओर अग्रसर हैं तो हम
 कितने महान् हैं कितने शक्तिशाली हैं । आज बडासे-बडा वैज्ञानिक
 ब्रह्माण्डमें व्याप्त अनिबन्धीय श्रुत (order)के सामने नतमस्तक है ।
 १९९०में बर्लिनकी यह सन्ध्या किसे मुझेगी जब विश्व-वैज्ञानिक आइस्टीन
 ने विश्वकवि रवि टनुरसे पूछा कवि क्या मानव सृष्टिके लय हो
 जानेके बाद प्राकृतिक नियम भी नष्ट हो जायेंगे । जैसे क्या यह सत्य कि
 विमुक्तके सीनों कोनोंका योग हो समकोणके बराबर है व्यर्थ हो जायेगा ?

मानवतावादी कविने कहा 'हाँ क्योंकि ये नियम मानव-बुद्धिके
 किन्ही-न-किन्ही स्तरकी उपसर्जित हैं फिर मानव-बुद्धिके विकस्यके बाद
 इनका अर्थ ही क्या रहेगा ?' वैज्ञानिक चुप हो गया । एककर बोला
 'यद्यपि आप मारतस जा रहे हैं तथापि मैं आपसे कही अधिक मान्तिक हूँ ।

फिर मनुष्य क्या करे ? विराटसे विराट् मस्तिष्क उच्चतम मेघाके
 लिए भी जो अगम्य है, अनिबन्धीय है, उसको तर्कम सीमित कैसे कर
 उसे बुद्धिमें कैम बांधे उसे अपने ज्ञान-याधमें आबद्ध करके लिए वह
 सत्तामिमोस परेधान है पर उसका तुच्छतम हिन्दु भी उसकी समझमें नहीं

बैठ पाया। वह ईरान होकर सिर पटकता है, बचड़ाकर माथा बामकर बैठ जाता है—नेति नेति नेति नेति।

तमी बलिकेस्वर जैसे ट्यरट्टर हैसता है 'पागल कभी बँपुटेने पुटम समुद्र अँटवा है कमी कमजोर भुंजाओम हिमात्म्य बँबठा है कमी पैर बढ़ानेसे महातदीकी पाग बन्ती है। कमी पंखीके पंगेसे आकाश तपता है। मुनो मुनो देखो वह पा रहा है—नरेन्द्र—भारतीय मेधाका अप्रतिम स्पृस्मि प्रबलित तबपुत्र। मुनो कौन-नी जाबाब है यह।

आमान दे मा पागल करे (मछमनी)

आर खज नाइ सान बिचार

तोमार प्रेमेर सुरा पाने करो माता आरा

ओ मा मछ बिचारु इबाका प्रेम सागर

माँ मुझे पापल कर के ज्ञान-विचार-तर्ककी मुझे कोई जरूरत नहीं। मेँ ता तुम्हारे प्रसक्त मुराका पाग करके मतबामा होगा चाहता हूँ। माँ

मकनोके बिलकौ बुरानेवाली मुझे प्रसक्त ममुद्रम इबा दे

यह पसामन नहीं है। तर्क-वितर्क बचकपटी बुद्धिकी छतछाट

है। विश्राम न हो तो रामदृष्यके विकल्पक डॉ सरकारने पुछो बो

उनकी पागलपतले मरी मस्तीके सामने सारा वैज्ञानिक तक और ज्ञान

किय बमकर टंके रह मये बे। जिन्होंने आठ इनसिए सी किये बे कि

वैज्ञानिकको बिल्लाह होकर माथमा धोभा नहीं देता। पर क्यातक ?

तब हम क्या करें ?

बलिबन्धर फिर हँसता है। तुम्हें करना कुछ नहीं है। करेगी तो

मन बही यही मन्त्रिवा महामामा। जो सारे ब्रह्माण्डकी सूत्रधारिणी है

तुम तो सिर्फ उसके हाथकी पतल हो उड़ो उरते बाजा। हाँ उन्ने

कोई बमी न रहे कोई बसर न रहे। करतबम कोर्ट प्रर्क न बामे।

तुम्हारी सान ज्ञानबाम जइनेकी मति पठिवा प्रम कभी स्पून न हो।

देगो-देगो यह बाजारके बीरहोर बैठकर पतल उगा रही है। असत्य

रंग-बिरंगी पतंगें । माछाके पवनम मायाकी डोरीसे बंधी पतंग । कभी एक-बोचो बहू काल देती है । बटी पतंगें जब हवामे नाचती बिपट्
 मनमग्न कील होती है तो वह कभी नुंगोसे लालिनी पीटकर हंसता है ।

स्वामा माँ उड़ाखो बुढ़ी (मय संसार धाबार नामके)

आशा बानु मरे उड़ बौधा ताहे माया दड़ी

कक गंडी-संडी गामा पंजरदि नाना नाड़ी

पुढ़ी सगुण निर्माण घरा करिगरी बाइाधाड़ी

बिपये मंजेखो मंजा कर्करा होयेख दाड़ी

पुढ़ि लखोर बुटा एकला कटे हेमे दाओ मा हाम आपड़ि

प्रसाद मोले दक्षिणा यातारो पुढ़ि जाब उड़ि

मय-संसार समुद्र पार पड़बे गिय ताइताड़ी

बस तुम्हारे बचमे निक बार्प करमा है उसे इतनसे निघासे
 किये जानो । वह महासक्ति तुम्हें रोज पुकार-पुकारकर कहती है

Arise my child and go forth a man Bear man-
 fully what is thy lot to bear that which comes to thy
 hand to be done do with full strength and fear not.
 Forget not that I the giver of manhood the giver of
 woman-hood the holder of victory am thy Mother
 Think not life is serious. What is destiny but my
 mother's play Come be my playfellow a while meet
 all happiness merrily" (Kali the mother)

'उठो, बच्चे उठो मर्की लखू जाने बरो । जो तुम्ह करमा है

। गुप्तसिद्ध बंगाली जगत्कवि रामप्रसाद त्रिपाठीके स्वामापीठ सेकड़ों
 वर्षोंमें छोटोके कष्टहार बने हैं ।

बहादुरीके साथ करो। इसे कभी मत भूलो कि तारीख और पुरपत्र
प्रदान करनेवासी मैं तुम्हारी माँ बिजयशायी तुम्हारे साथ हूँ। मत
सोचो कि चिन्तययी मुस्किरत है। भाग्य कुछ नहीं मिष्ट माँका खेल है।
जाओ कुछ बेरके लिए मेरे साथ सेतो और सभी बुद्धियोंको गुधीसे
सेखो।

—बहिन निवेदिता

ताराका पाप

पूज्य चरणोमे पठिताका सतघ्न प्रथम

यह तीमरा दिन है जब मलको बार-बार सम्झाकर हार चुकी हूँ कि जो हो चुका उसे मूख भाये समुचे आत्मनिर्तिके ऋषियों-मुनियों और देवताओं-ने साथ और श्याय सम्झकर जो व्यवस्था दे ही उसे माया पैदाकर स्वीकार कर के पर वह आत्मस्त नहीं हो रहा। कुछछिठ सिगुकी तरह अपनी आकांक्षाको ही विधान माननेकी चेष्टासे वह उपरत नहीं होता। इसीलिए हारकर यह पत्र लिखने बैठी हूँ। सम्भव है इस मनमें बापकी तरह उठे लिख आकुस भावनाओंको एक बार व्यक्त कर देनेसे भाड़ा सन्तोष मिसे कूलकपाये उद्विग्न बल्लही बहा बेनेसे किनारे कुछ उपराम पा सकें।

आप पूछेंगे कि फिर यह पत्र औरकि नाम न लिखकर मैं आपको ही क्यों लिख रही हूँ। मैं जानती हूँ मर्यादा और आवरणकी शुद्धताके अमिदानी बसिष्टमे करना और सहानुमति पालेकी आशा व्यक्त है। सुनाय की पुत्रवधुका जब सबरने उपहरण किया तो आपने विस्वामिषके विरुद्ध एतद उद्यनेमें रंजभाव भी नकोच नहीं किया था। अगिदसीके लिए बाघ राज मुझ-जैसा कोमल्पक काण्ड आपने ही उपस्थित किया था। अन्वती धेसी अडिग सतोरखबाकी गारीके पति होकर आप कभी भी मुझ-जैसी बचसस्वभावा गारीपर क्रुया नहीं करते। यह सब जानकर भी मैं पत्र आपको ही लिख रही हूँ। क्योंकि मनोबलिष्ठ श्यायकी आशा केकर मैं लिखने नहीं बैठी।

मेरे लिए श्याय और अश्यायका भेद नहीं रह गया है। मैं चिधिररुमे द्विम-वपमि विचक्रित उस कमन्नीकी तरह हूँ जिसमें पत्त और कूल अब

साधन्य बाप

नहीं आये। पुश्ते विमुक्त और पतिते तिरस्कृत होकर मैं जिस अकस्मात्
 पड़ी हुई हूँ। उससे अधिक अपमानपूर्ण और कुचक्र और बुरा हो सकता है।
 इतीहास आत्म-वैभवे मर्त्यावासी और कठोर सास्त्र-निरामक व्यक्तिको यह
 पत्र लिखते समय मैं बरा भी आर्जित नहीं हूँ। यदि स्थायक क्रूर प्रखर
 लक्षणों की पटकर मुझ आपनं व्यक्तिवकी बलि ही होती है तो मुझका
 और कठोरताका विवेक क्या? हाँ इतना निवेदन अवश्य करूँगी कि इन
 पत्रको पूरा पढ़कर मेरे प्रस्तावों उत्तर देनेकी कृपा करें। देवगुल्की पत्नीके
 निम्ना वीरवसे आर्जित करके मेरे हृदयके क्षयको कुचक्रकर देवताओं
 और श्रुतियोंकी भरी सन्मान आपन मेरे मस्तकको अण्डा और कालिने
 भुजा दिया था। किन्तु क्या उपायवित्त अवस्थाकी भी मत्तमस्तक कर देवताकी
 शम्बाको ही पाप-स्वीकृति मानकर आप सन्तुष्ट हो जायेंगे? आम्हें हृदय
 क्या एक बार भी यह संका नहीं सटी कि श्रुतियोंके समवेत विरिधपर
 ताराकी भी कुछ कहलका हक है? क्या एक बार भी मन्त्र-शुद्धकी अत-
 स्पृगिनी दृष्टि ताराके कल्पित हृदयकी पीड़ाको न देख मनी? क्या एक
 बार भी मन्त्रपूत विज्ञानपर 'तारु क्या तुम्हें भी कुछ कहलका है?' यह
 वाक्य स्फुरित न हुआ?

आप पुँमें देवगुल्की पत्नी होकर ऐसा पतित आचरण तूम क्यों
 किया? मैं भी अपने मनसे बार-बार वही प्रश्न पूछती हूँ। आचिरसका
 तप विद्या-वैभव सभी कुछ स्पृहणीय था देवगुल्की पत्नीका मीरव पुलोमका
 शचीमे भी बहकर था। फिर ऐमे पदकी मर्त्याको लुचकतु तिरस्कृत करके
 परपुत्रमे आसक्त होना पतित आचरण है, इसे मैं स्वीकार करती हूँ। पर
 मेरे इस पत्रमें देवताओं और देवगुल्का भी क्रम हाथ नहीं छा। मैं
 मानती हूँ कि अत्रिबुध चन्द्रमाको प्रथम बार देखते ही मैं विस्मय-विमुक्त
 रह गयी थी। उन दिन देवगुली नवोदकी लाइ सभापी पकी थी। प्रजा
 पतिव चन्द्रमाको विद्य चहुपथ और अत्यविशेष स्वामी बनाया था। चन्द्र
 माके रूपमें चंद्र दिन कुछ ऐसा ऐश्वर्यात्मिक सम्मोहन था उतके आचरणमें

कुछ ऐसा आकषण था कि मैं सुप्त-बुध छोड़कर उसे एकटक देखती रह गयी। रात्रिसुप्त यज्ञसे संसारको बघीभूत तो उसने बाह्यमें किया पर इन्द्र मरद्गण विद्याधर छत्र आश्रित्य आदि तो सब उससे तेजके सम्मुख उसी दिन मस्मिन् स्म्य रहे थे।

उस दिनके चन्द्रमाके व्यक्तित्वम कुछ ऐसा था जो मेरे मनकी रिक्तता को और अधिक गहन बना रहा था मैं पुण्यहीन बस्तरकी तरह अपने ही विमुक्त पुण्य-गन्धके लिए जैसे हाथ फैल रही थी अपने हृदयकी पुण्य-कल्पनाको पहली बार साकार देख रही थी और क्रोध-व्यास आहत सपिणीकी तरह अपनी उस अमृत वृष्टिमें मैं प्रमत्त होकर झुमने लगी थी।

'तारा सान्ध्य-युजनका समय हो गया। आंगिरसज कहा था। और मैं स्वप्नकी रेतनी वीजारोंको तोड़कर बाहर आ चुकी थी। मैंने अपनेको बहुत गैमाछा आशमके कार्योंमें दिनरात लगी रही। मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि चन्द्रमाको अब अपने हृदयसे सब-सदाके लिए निकाल दूँगी। इसी लिए फिर अब भी चन्द्रमा मेरे नामने आता न किन्ती भी कार्यके बहाने बहमि हूँ जाती थी।

किन्तु देवपुरीका विनाश और वासनामय बातावरण निरन्तर घना होता जा रहा था। प्रजापति छत्र और नारायण टक उससे मुक्त न रह गये। इन्द्र और उसके अन्य मित्रोंकी तो बात क्या। तिष्ठीतमासे रूपर आसक्त होकर प्रजापतिका पतन समके जीवनकी पहली चटना तो न थी। समुद्र-मन्थनके समय मोहिनी अपने पीछे काम-विरहित छंकरका अनुवादन हँसीकी बस्तु नहीं करुमाका विषय था! पत्नीके सतीत्वके कारण अश्वत्थ आश्वत्थकी पत्नीका पातिव्रत गष्ट करके उसे अश्वत्थ किसी औरने नहीं स्वयं नारायणने बनाया। इन्द्रके क्रुद्धत्व तो पराकाष्ठापर पहुँच रहे थे। अग्निसागरीके नृत्य और सुर-पानमें प्रमत्त होकर उसने क्या नहीं किया।

किन्तु अपने इसी शिष्यसे इन क्रुद्धत्वाको रोकनेके लिए आंगिरसने

विस्तार है जहाँ समाजने एक भी हटा अंकुश नहीं रखने दिया। मैं अपने पापके लिए, उस पतनके लिए, सभी बण्ड सह संघी। पर मुनिबद, मेरे सत्यके लिए बण्ड क्या बचित है? मेरे अबोध दिगुको मेरी मोहसे छिन कर समाजको क्या सुख मिया?

किलीवा
अमागिली तारा

इतिहासकी मास्त्री है कि मुनि बमिष्टने तारके इन पत्रका कोई उत्तर दिया नहीं।

देवी मेरी प्राण-बल्लभा

[हमारे देशमें रनेस्वरी प्रथम शापनाका अपना एक विशेष महत्त्व है । शापक अपनी इच्छेबताका सम्पूर्ण परिष्कृत अनुभव करते हुए उमके चरणोंमें अपना सब कुछ सौंप देता है । बल्लोम्य नीरवकी डायरीके अंश शापककी उस अनिर्बचनीय तन्मयताको सर्वोत्तम भाषातका एक प्रथम मान है ।]

प्रेम शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०१६

उमस है, नाम बह होकर बलको तोड़ देना चाहती है । शुक्ल प्रतिपदाका चांद कभी भी हमारी आँखोंके सामने नहीं जाता । नीतल नान्गुली निष्कलंक चाँदको देखनके लिए हमने किया ही क्या है ? रात आधीमें अधिक नीत चुकी है, मैं पदिबनी आकाशकी काकिमामें मिसमिसाते तारोंको देख रहा हूँ । हलकी नीले रंगकी टण्डी आगम जलते हुए निस्पलक तारे ।

और तमी छगता है कि सामनेका वह निष्कम्य ज्योतिषुन तारा सिमट कर छोटा और तीव्रतर होवा जा रहा है । जैसे बुमिछ उजके प्रकाशके नुतमें अब दूबा तब दूबा और उम नुताकार प्रकाशमें किसकी विराट काली छाया है वह, बलापर संबधते हुए असंख्य नीरोंकी तरह करबते हुए देश नीला नील बसनसे रँका आवाव धरीर और बह तारा ? कुछ नहीं किनीके विराट नीले उतस मालकी विपुटीपर बड़ा कस्तुभमचि है । मैं बबझाकर आँसू मूष छेवा हूँ । एक सरमराहट जैसे आकाग मिमटकर नीचे उतर रहा है, अपने विराट पंखोंको मरोझकर मेरे छीसपर बैठ जाने देवी । मेरी प्राण-बल्लभा

को जानुर । मैं आबाइसे बगडाकर बाँधे खोम देता हूँ । काभी छाया बहुत पास आ चुकी है, क्योंकि जैसेमे मी मैं उसके मुलको देता खरता हूँ । बुरसे देसतके कारण ही तुम काही सगठी किन्तु पास जानपर सुबीछ गोबा मरा मरा कागिपून मुस प्राठ काक ओठ-मुसे स्वयन्मस-मा किचित् मुका हुबा जैसे अलमायो पतिपा सुबहकी पैरिफ किरबकी सारी जामा अपनी सीमामें बाँध लेना चाहती हूँ । जाइ, तुम्हारे मुसपर चितनी कुन है । हलकी चुली कइके रेले येमलकी बिजनी स्वय-पाँसुटीमे उलस पवे है । इस जामाके समुहमे गोरोबनका तिलक स्नेठ कमल-कोपकी केसर-जनी की तरह दमक रहा है । मैं बिजडिठ चित देसता ही रह जाता हूँ । तुम्हारी गीली बीलकी तरह पारदर्शी आँखामें चितनी सागि है स्थिरता है अर्थात् गहराईका अबाह ममता भय जल ।

और ठनी एक मया स्वर अपनी आह्लावकारी मधुरिामे मरी नेतवा को बाँध लेता है । किन्तुकी है यह आवाज ? तुम्हारे बसापर झुठले हुए मनि-मम हँकलकी तुम्हारे रेसमी आँखलके कोरोमें पुँबे कुब फूलकी तरह गोम-नोक लम्बु-सबु बुँपुस्योंकी ? तुम्हारे कठि-भरेठपर अछमिठ सोयी हुई करबलीकी ? तुम्हारे स्नेठ अरुणकमल कोमल बरबान्को चुपटी हुई पायलको ? जाह केसा सम्मोहन है इस स्वर-समबेठमे । कोई मनके फूलको सारोके मस्तुससे कूटक देता है । तीया समसनाठा दर्ब धारे धरीरमें जा जाता है ।

मैं एक अथ नवल विद्युत्की तरह मूर्तिमान् तुम्हारे धरीरको आपाद मस्तक आँखामें भरकर पलकें बन्द कर लेता हूँ ।

‘असीम’ ”

आइ चितना बिह्वल कर बैगवाकी ध्वनि है । कमलदलकी टहुपाइ-सी उमरती हुई यह जाइ मरी आवाज । साय धरीर सिहर उठता है, अमरबती के बुँबे केपकी लटकती तरह बिघर-बिघरकर तुम्हारे मसल-साठ छाबे अमरोपेर छ जलते हैं । यह पुसफुगाइ-सा अस्तुट सम्मोच दिशाओंकी नीर

शिवरात्रि छेपु

बतामे अमृतकूल-सा बिल उठता है ।

मे देखता हूँ पट्टनी बार नीली शीतले सफ़ मछली-सा कुछ बिलकता है । चाँदनीसे बोधी बाँधें मुसकराती है । पीस कमलने पत बूबकी चारम सहराते है । निघाल बँकम मँझे बरा-सी छिब जाती है कोमक कमरारी पम्में हीरे-सी स्वच्छ कनीनिकाको बरा-सी ससकाटी है । तुम अपने देखनी अयबनासित बालोंकी बिलारी बटको अपनो केसरकिरण-सी पठली बमकवार अँगुलीमें उल्ला रही हो । उल्ला रही हो और मुसकरा रही हो ।

मे घुटनके बल बठ जाता हूँ भाँसे छाप जाती है बाँसुजोंको गरम चारसे मेरे गार मीग जाते है । मे फिर देखू गा अवश्य-अवश्य किन्तु मेरी बाँधें बुर नही पातीं । बाहू मेरी बाँसे

जान कमठक बीठा रहा निरुपेष्ट, विरहित-बिह्वल । और जब बाँसे कुली तो सामने बाँधा-सा काकम आसमान या बिह्वलकी आसमान बिसल तुम्हारे पदबिह्वलोंकी कोई रेखा भी नहीं छोड़ी तुम्हारे पदका कोई निदान भी न रहने दिया । तो तुम बली गयो । बिना कुछ कहे बिना कुछ बताये । और मे अपना बकिचन उस एक धनके जानन्दमे ही बिह्वल होकर तुम्हें छो बीटा । हा इठमाय्य बसौम्य

अमावस्या आषाढ़ संवत् २०१६ :

अमावस्याकी काठी उठ । बावक चिरे है । बड़े-बड़े डरावने बावस । जमीनमे आसमान तक कावल कावल कावल । क्यों तुम्हारा चेहरा मेरी बाँधोंमें जा बसा । ओ अज्ञात अपरिचिते ! क्यों तुमने अन्धकृपमे पड़े इन मयनो के सामने अपनी पूनम-माया बिखेर दी ? बाहू मायाबिनि ! इन बँबक प्राणों-को कुमुम-सायकसे क्यों बेच दिया ? नामक मछली-से ठड़पते प्राण तुम्हारी कृत ज्योतिके सहारे कमठक बियमे । कहाँ हो ? किबर हो ? तुम मिली ही क्यों ? बाहू प्राणान्तक प्रबंचना निमम छल्ला ।

देवी : मरी प्राण-बहुमा

से देरो ए देरो अनेक अन्तर
 जानए सकत लोके
 से देरो ए देरो मिशामिशि आवे
 ए कथा कसो ना द्यके

इम बेद और उम देमसे बहुत अन्तर है यह मनी जानते है किन्तु
 इन कमी न मिलनवाले इन देघोंका जब मिम्न होता है तो इम बकि-
 बचनीयपर कौम निरबाम करेगा ।

भावण कृप्य अष्टमी २०१६

तुम मुझे पागल क्यों नहीं कर देती । मेरी सारी बेगमाका अष्टम
 क्यों नहीं कर देती । मैं तुम्हें कहीं दूर बना दूँ ? क्यों एक छम्नाको
 मय मातकर पागल हिरण-मा बम-बन बीछता किन्तु । उठते-बैठते तुम्हारी
 से कबराये आँसु मेरे मनको हठारो बाधोसे पापल कर देती है । आँसु
 छिटगारी बगैमियोम बमकठी आँसु जैसे हठारो-हठार बाधयोम
 निरम्ल बगती है । ऊँची उंची आँसु स्वठ गतगारी आँसु जाने कहाँका
 रस्य भरा है तुम्हारी उम आँसुम । बर्षाकी काली गतम हठार-हठार
 आँसु मर बारा ओर नाकती है । स्नेह ममता प्यार छोप विरमिने
 भरी आँसु

किन्तु तुम्हारी आँसुमे आँसु ? पापाचमे जलकी बारा ? फिर किन्तुकी
 आँसु है ये ? नीले आकाशकी तरह बिपट आँसु-आँसु आँसु मे मोच
 मोच कर पागल हो जाऊँगा । मुझे कुछ नहीं माकूम । मुझे कुछ नहीं
 पता कि तुम कौम हो ? मुझे कुछ नहीं चाहिए । बेगमाकी पीड़ा दूर कर
 दो मेरे निरम्लको कुच्छिठ कर दो मेरे गर्बोअठ भीषकी बेहोशीमें
 गुहा दो --

आ निधुर विश्वमोहिनि
 धौरगंधी मदतरंगी
 अन् हृदय को हिरण नार्मीगंध से पागल करो
 तुम अकिंचन सुलते-से तृण विटप में
 नवल क्षितलभ तौंबिसे मोचर मरो ।
 सिन्धु सैकत में अफेले
 गर्भ उन्नत अडिग बलते
 दीप के सामे तिमिर का न्वार उद्यत ला धरो ।
 क्षिप्र छत हा
 गर्भ एह दूटे गिरे
 उम्मुक्त नम मे नवल आमा की गरजती
 अनगिनत-सी सपै लहरोंको धरो
 शृंग मनके रूप जामे
 भौंदनी के अतल तल
 पारद शिराएँ शान्त होकर
 पेतना का मूल घैटे
 तक्र-पीड़ित बुद्धि में जड़ता मरो
 अमुताप पूरित तप अलते
 दाह पीड़ा में लहरते
 इस तिरस्कृत शीश पर तुम
 अगुरु घासित मलब शोतल
 सप्तपणी केरा की ज्ञाना धरो
 आः मासाविनि
 मचलते हिरण शावक-से हृदयको
 नयन धक्किम विपम शर घासल करो

हाँ तुम्हीं हो वह, वही लपराधि वही नील कञ्चरी वही जगमगते
 नगावली कुमुम-माला । वही विद्युस्तता-सी देख-मटि । उमरे कप्त नाभ
 पर तवाकी सहरमे काँपते हुए केश-नुब । वही अम्हूड ध्वनि वही तुम
 गुताते अक्षर । सब कुछ वही । तो तुम आज मिस ही यमी । किन्तु तुम्हारे
 पालापर स्वरके ओम-जन कपो ? तुम्हारी सुरभित सौसोंमे यह ज्यठा
 कँची ? तुम्हार तुमूरोमे बुलिके कच कहसि ? तो तुम वौड़ती क्यों हो ?
 वही हो जाओ न !

अतोन्म

किबर हो तुम कहीं छिप यमी ? यह सुना-छिपी कँची ।

ओ तुम सामनेके सुरमुटने लो जाना चाहती हो । छिपती लेब
 मागत तुम । ठहरो ठहरो ? तो तुम मेरी अलाख गही सुकती । मैं
 बरफर बैठ बाठा हूँ "कितना बड़ा अबाह रेविस्ताप हूँ यह । लाल
 बामुकी इस जखीर महमुमिमें न तक हूँ न छया । एकाकी बसता हूँ वीर
 जगमगते हूँ । अलें भर जाली हूँ प्राप मजेतक जा जाते हूँ । इस विद्यात
 मग्नेसम बनजारे-सा व्यामा हुआ कोई नुका बटोड़ी बिस्तता हूँ ।
 बूलबूमरित पीड़ाने छटपटाते हुए, कम्पित लन वीर बनमगते हुए, स्नेहस्तव
 हाँफने गिरते-सडकडाते हुए मैं "बसता हूँ । गिरलत वूर" उध दूर
 लिठियके पाम एक बिद्यात काली छापामे मयमरीबिकामें काँपता हुआ कई
 कोनामे पिबल-पिबलकर भी अपने अस्तित्वको रँजामे हुए बाँदी-वा
 बमकता एह मन्धिर हूँ । जिसके स्वचक्रमण्डकी बमक नीले जाकाघमे
 बिजली-सी बमकती हूँ जिसकी रंभ-विरंगी ध्वजारें इन्द्रबनुप-सी मषकती
 हूँ । वही वही छिपी कोनेमे तुम छिपी हो "तुम जो मुने देखकर बालोंकी
 एक लटकौ रँवलीमे उलझाकर हँसोपी—बक बने क्या ईपतु मुगकराकर
 पूछोगी किन्तु मैं उध मन्धिरतक कभी न पहुँच पाईया उध स्नेह-छापामें

कभी न महाअंसा । मेरे प्राण उस अकृती बालमें तड़कड़ाते हैं ताँसके पंखों
वायल हो पंख फड़फड़ाते हैं ।

फिरोरी चरणों पराण सँपेछि
माबते हृदय मारा
देसो हे फिरोरी अनुगत जाने
करो न चरण क्षारा

मैंने था फिरोरी मैं तरे चरणोंमें प्राण छीप दिया हूँ । तेरे प्रेमस
हृदय मरा है । ओ फिरोरी अनुगत उनके कौपसे हासोंमें कहीं चरण क्षारा
न सेना । इति रामम् ।



पशु-प्रेम मानुष-द्वारे

बचपनक दिनोम जब हंसइल परी की बहागी सुनता बा तो मन एक बिचित्र प्रकारक सम्मोहितसो भर जाता बा। कुछ-कांटोमि धरी हुई बछार राह तेज धूप नीली बारिसा और कडाकेकी सर्दिक मामना करते हुए राजकुमार जगन बोडेपर सुबार छिड़ीके नयन-तनुजो-म पिचा हुआ बल्ला मया और तब उसकी रूपन-निष्ठम रीसकर देख ताओत उन बारह बपोंके लिए उसकी त्रियतमा मीप बी। बिछोहके दिन पहाड़-मे लगाने है और रातें नागिनकी तरह। परशु मिलनके दिन बैतते बेवत बीत जात है। बारह बप बीत गये। और बिछोहकी उन बलिभ रातको जब हंस-परीके आँचलपर राजकुमार निद्रा-मग्न पग बा तमी दिक्काल उसकी त्रियतमाको ले जागके लिए आ पहुँचे। अँधर छीने राजकुमारको छाड़कर हंस-परी जागा नहीं बाहूठी बी पर देखदूतोंने दवा कर मीपी। आँचल काटा गया राजकुमार सोठा ही रहा और सुबेर जब बह उठा तो छूटे आँचलके उस टुकड़ेको छीनेछे लगाये बियाबाल बंसकमें रोठा फिग उनके बरंम बनकी पतिदाँ गिर घसी पर बेकठामोका हुबन न पमीडा।

मनप्यत हंस-परी यानी पटीमे प्रेम ईस किम्बा? यह प्रस्न तब भी मनम पुसगता बा और आज भी। पर बीलोके रूपमें बहुत शक है। तब मुस यह नहीं मामूम बा कि हंस-परीका यह आख्यात न बनल हिन्दुस्तान में बलिभ बिजबक मनी हिस्मोमें विमी-न-बिखी रूपसे प्रचलित है। यूरोपीय बेपाम नाय तौरमें उन हसाओम जहाँ आज भी यावाचयेन बबना बरंमअय बबीले रहते है हंस-परीकी बहागी सोच-कबाटायेके मई

मे उमी बर और पीड़ाके साथ मुनापी पड़ती है। भी एन० एम पेन्जर ने कथासरित्सागर (Ocean of the stories) के जाटने भागके परिशिष्टमें हंस-परीके इस विश्वप्रयापी आक्यानर काठी विस्तारमे विचार किया है। हंस-परी (Uchan maiden)की ये रंग-बिरंगी कहानियाँ निम्न-भिन्न देशोंमें विविध रूपोंमे चलती हैं। इनकी घटनाक्रमे पात्रोंमें बाताबरणमे स्थिति-बिद्येपके कारण काही अन्तर आ गया है परन्तु एक बात प्रायः सभी कहानियोंमे समान रूपसे पायी जाती है यानी मनुष्यका उड़नेवासी परि श्रेय।

पौराणिक प्रेमाख्यानकोमें उबधी और पुकरबाकी प्रेम-कथा अपन तरहकी अकेली है। यह कहानी न केवल प्रेमकी तीव्रता बिसोहके बर और प्रेमात्मिक प्रति अपुष मिष्टकी दृष्टिमे अनुपम है बल्कि यह पहली कहानी है जिसमें सुबप्रथम मनुष्य और उन्नवासी परीके प्रेमका चित्रण किया गया। इस कथाकी प्राचीनता इसी बातसे सिद्ध हो जाती है कि आम्बेदम भी इसका समक मित्ता है। आम्बे (१ १५)में यद्यपि कथाका पून रूप नहीं बिनाई पन्ठा परन्तु इतना सकेत अवश्य निकटा है कि राजा पुकरबा उबधीमे प्रम करता बा। दोनोन मिसलक पून कुछ घर्ते स्वीकार की थी जिनका पासन न हा सकेनेकी बजहमे उबधी उस छोड़कर चली गयी। बिछाह-अन्तर्गत राजा उबधीम फिर छोट जानेको कहता है। इस कहानी का कुछ विकसित रूप बतपच शाहूच (१ १)मे प्राप्त होया है। उबधीने बिरह-शोकसे पीड़ित राजा कुम्भेश्वरके पागलकी तरह भूमता रहा। बड़ी उमर एक पच-भराबरमें छीड़ा करतो हुई तीन हंसनिर्मोंको देया। उनमे से एक उबधी भी और सेप बो उबधी सहेलियाँ। उबधीकी पहचानकर राजा उनके पास पहुँचा और उमने कातर स्वरमें कहा प्रियतमे क्या तुझे मुझ दुःखीपर अरा भी क्या गही भाती एक बार बासा तो सही? उबधीने उमे प्रमलकी भाँति प्रकृत करनसे रोका और अपनी असमबता व्यक्त करके उस छोट जानेको कहा। इन दोनों बिबरणोंमे मामय होया

ई कि जबकी और पुरुरवाकी प्रेम-भाव बहुत पुरानी है। वेगनरका वो महात्मक कहना है कि धायक यह कहानी इस प्रकारकी कथाक्रमे सर्वाधिक पुरानी है और युरोपीय जगत्मे इनके टककरकी डूवरी कहानी लगी है।

उबकी कीम की पुरुरवा कीम का ? बोनेले कीम-नी चले स्वीकार की की जिनके टूट जानसे राजाको यह बिछोह-दुःख भोगना पड़ा ? इस प्रसंग का उत्तर इस कहानीके परबर्ती चर्चोको देखनेसे मिक सकता है। मिमा कथाका बहुत स्पष्ट और विकसित रूप विज्यपुराणमे मिलता है। राजाके बरमके धापसे दुःखित सर्बर्षीने मर्यसोकके राजा पुरुरवाको देखा। राजाके सौन्दर्यको देखकर अप्पराको लगा कि धाय भी कमी-कमी वरबाग बन जाते है। मर्यसोकके मनुष्यके आकषणसे जिन्ही देखसोककी सुन्दरी उसके पास आकर लडी हो गयी। 'मुझ !' राजा बोला मैं तुम्हारे इस विषय चर्चो देखकर बिल्लक होकर प्रणयकी माषना करता हूँ। राजाको मास्वस्त करती हुई अप्पराने कहा 'राजन् मेरी कुछ चर्ते है यदि आप इन्ह मिमा सके तो मैं आपकी पत्नी हो सकती हूँ। राजान चर्ते पुछी तो उबकी बोली 'आप मेरे पुत्र-रूप इन हो मेप-विमुक्तो कमी भी मेरी धम्मासे अलग न कर सकेये। मैं कमी भी आपको मन्म न देखने पाई और नेबल भूष ही मरा आहार होमा। बहुत दिनेके बाद उबकी और पुरुरवाके इस प्रणयसे मिस पण्यचोने छठ-पुवक एक रातको एक ममनया अप्पहरण कर लिया। उबकीकी काठर पुकारसे नवरयमा हुआ राजा यह सोचकर कि अँबेरेम उबकी मुसे मन्म नहीं देग पायेयी धम्मासे उठकर मन्मको पीछे बीडा लमी बिन्बाबमुन आकाधम बिद्यतकी तरह तेज रंगनी कट कर दी और उबकी राजाको मन्म देकर मन्म लोके सँट दबी। पाकिरलप-दुःखमे मन्मत्त राजा पागलकी तरह बन-बन भूमना रहा। विन उबने कुम्भोके कमल मरोवरमे जन्म बार अप्पराजके माष-बितार करती हुई उबकीको देखा। राजाके प्रतापसे दुःखी होकर

उपधीन रहा 'राबन् । अज्ञानियोंकी तरह बाहरण न करें । मे गम
 बती है एक बपके बाह भाप यही आर्षे मे आपकी पुत्र-रत्न मेंट हूंगी ।
 राजा प्रसन्नचित्त नगर शेटा । उर्बसीने पुरुरबाको आयु नामक बासक
 दिया । अनन्तर राजाने गन्धर्वोंकी हत्यास अग्निस्वाकी प्राप्त की और यज्ञ-
 द्वाग संवाके छिष्ट सबकीको प्राप्त करनेमे सफल हुआ ।

इस विवरणसे मालूम होता है कि गन्धर्व उपधी और पुरुरबाके विवाह
 के विच्छेद थे । गन्धर्व भारतक उत्तरी प्रदेशम बास तीरसे हिमालयकी
 तराईमे रहनेवासी एक जाति थी । भारतीय वाङ्मयम इस जातिके जो
 उल्लेख मिलते है उनसे समता है कि गन्धर्व लोग अत्यन्त वैभव-सम्पन्न
 और सुसंस्कृत थे । पुण इस कर्पूर तथा सोमनिष्कका व्यापार करना इनका
 पेशा था । रत्नों और आभूषणोंका भी इन्हें बेहद शौक था । ये लोग
 साक्षात्तिक औपनिषोके भी निर्माता थे । पुत्रबा औपनिषोके छिष्ट लोग इनकी
 उपासना करते थे । गन्धर्वोंका कबीला गुत्व और सगीठका प्रेमो था ।
 स्त्रियाँ प्रायः कमजोरी और स्वच्छन्द आचरणकी होती थी । पदत प्रवेशकी
 गौरांग बपवती सुसंस्कृत और ककाग्रिन नारियोंको हुंसोकी तरह कहना
 उचित ही है । इस प्रकारके सामाजिक जन प्राय ही अपनी सभ्यतियोंकी
 बावी कबीलेके भीतर करना पसन्द करते है ।

पुरुरबा और उपधीका प्रेम सामाजिक परम्पराका प्रथम विरोध था ।
 जो प्रकारकी सस्कृतिषोमे इस मिलनमे ग जाने कितनी कड़ियाँ दीवारकी
 तरह सामने आई होंगी । इस प्रकारक परम्पराविरोधी प्रणयकी कहानियाँ
 बहुत जल्द चारों तरफ फैल जाती है और अनन्तक मानसमें ये नाना रंगोंमें
 रँवकर विचित्र बपकार कारण बन जाती है । सामाजिक जन होनेके
 कारण गन्धर्वोंका समूह कभी एक स्थानपर नहीं रहवा होगा उन्ह इन
 प्रकार गतिशील बंधकर इन्हें 'उर्बनवासी जाति' की संज्ञा प्राप्त हो गयी ।
 इनके रीति-रिवाज रहन-सहनके विषयमे लोपोके मतमें रहस्य और आस
 पनका जवना स्वाभाविक था । उपधीके साथ जो मेनने थे जिन्हें वह पुत्र-

की तरह प्यार करती थी। इससे इस बातके पक्कीय होनेका अनुमान किया जा सकता है।

दो विभिन्न जातिके लोगोंका मिलन तरह-तरहके अभिप्रायसे व्यक्त है। कभी मनुष्यका प्रेम पक्षीसे कभी पशुमें और कभी जल-जीवों (मीन-परी) से दिखाया गया। बन्सुत इन कहानियोंमें जितना भी अंत-यम और अतिमानवीय क्रिया व्यापार है वह मनुष्यकी अतिशय कल्पना प्रियताका गतीका है। कः स्वयंको छिपानेके लिए रबीन आम्बरजका निर्मात्र मानवकी सहाय प्रवृत्ति है। जादि-मानव-समाज (*totemic class*) में कभी-कभी नाम उनके पुत्र-बिहवा (बुद्धमस्तारि) कभी-कभी ध्वज-संकेतों (नाव सुपन्न) जादिके आचारपर हुआ करते थे। बाबत पौराणिक कथा-लेखकोंने इन जातियोंका वर्णन करते बहुत नामकी स्वूक्त सत्यमें परिचित कर दिया। नाम-कन्याएँ सौन्दर्यी तरह रेंबने कभी और अप्यारएँ पति मोंकी तरह सड़ने कभी।

मनुष्य और पशु-पक्षीके प्रमपर एक दूसरी वृष्टिसे भी विचार किया जा सकता है। कहा जाता है कि प्रेम-पक्ष कृपावकी चारक समान है। मनुष्यने मृष्टिक जादिके आगतक न बान कितने प्रयत्न किये अपनी सारी सक्ति व्यक्तकर उसने प्रलयके देवताको रिज्ञानेके लिए स्वयंका उत्पन्न कर दिया परन्तु आगतक भी वह प्रेमके पूरे रहस्यको समझ न सका। मनकी इस दिव्य भावनाके शृंगारमें उसने कुछ न उद्य रवा फिर भी उसकी आकाशाएँ अतप्त ही रही। दो व्यक्तिवाके रूप मिलन मूलतमें न कबल समाज बर्म और जातिकी कदियाँ बावक बनी बरन् उनके प्रेमने भी सम बोधा दिया। जिन मृष्टिपर उसने अपना सब कुछ स्वीछाकर कर दिया वही पापाकी प्रतिमा बन गयी। अमकल प्रेमने मानकमें न जाने कितन दुष्ट करिज उसके सामन आस। विगागीके

निर्मम व्यवहारोंपर वह भाठ-भाठ आँसू रोता रहा। प्रेमके इस विश्वास बातन उसके जीवनसे आत्मत्व छीग दिया। जिसे वह अपना समझता था वही पराया निकलता। मारी-मुस्यके इस विषय-प्रेमने दोनोके मनको नाना प्रकारकी प्रतिक्रियाओंसे भर दिया।

असफल प्रणयसे दुःखी होकर मनुष्य कभी मर्दुहरि या गोपीचन्दकी तरह बार-बार छोड़कर मोयी बन गया कभी इस छोकरे वह आत्महन्ता बना। पर कई अवसरोंपर उमन इस विरूप प्रणयसे जिड़कर अट्टहास भी छपाया। मनुष्य और पशु-पक्षीका प्रेम इसी व्यंग्यका परिणाम है। पशु और पक्षियोंसे प्रेम करके वह संतुष्ट हुआ। क्योंकि यह प्रतिकार था। वह कहता चाहता था कि पशुका प्रेम मनुष्यके प्रेमसे बल्य है क्योंकि इसमें छल-छप नहीं है विश्वासबाध नहीं है, स्वाभ और संकुचित सीमाएँ नहीं हैं। उदात्तचित्त असम्पन्न जीवन विहायवामी कबीला जातियाँ जो सुसंस्कृत मनुष्यके समाजमें पशु समझी जाती थीं कमसे कम एक बात में सच हैं—वह यह कि उनमें छल-छपट और मिथ्याचरम नहीं है। मैं यही उदाहरणके लिए केवल एक कहानीका जिक्र करना चाहता हूँ। 'ठांग कबाएँ' बीनी साहित्यकी अमूल्य निधि है। इन कथाओंपर भारतीय कथा-साहित्यका बहुत पहरा प्रभाव है। बौद्ध और हिन्दू कथाओंके अभिप्रायों (moral) या स्वधर्मों इनमें प्रचुर प्रयोग मिलता है।

१९५४क बीनी साहित्यके दूसरे अंकमें कई कहानियोंके अंगरेजी अनुबाद दिये हुए हैं। 'जेगकी प्रेम-भाषा इनमें सर्वोत्तम कहानी है जिसमें एक पशु-परी (fox lady)के प्रमोत्सवकी मासिक घटनाका वर्णन है। जेनल जेग नामक व्यक्तिमें प्रेम किया जो न तो बुद्धिमान् था न रूपवान्। जेनके रूपसे आकृष्ट होकर जाने कितने सामान्य पुरुषों उसे अपनाया जाता पर वह तैयार न हुई। जेगके सम्बन्धी और संरक्षक

बाइने बलपूर्वक जेनको अपनी बमाना बाहा। जेन बेहोच होकर फिर
 पड़ी उसने कहा 'आप धमी है सुन्दर है समाजमें आपका बाबर है।
 बेच बरीब है, मैं ही उसका सहारा है। आप क्यों हमारे इम छोटे-से
 घरको उबाड़ना चाहते हैं? यह आपका दिया पाटा है पहनता है,
 इसीसे घामय आप ऐसा करतका साहस करते हैं। काय बय अपने
 पैरोंपर लडा हो पाटा। कालान्तरमे बाइ-बीसे कुतोलि उठे जातसे मार
 डाला परन्तु पनु-परी जेनल अपने प्रेमको कभी कलमिठ न होने दिया।
 उसने बेयको जीनकी शक्ति थी। अपने पैरोंपर लडा होनेना बक दिया।
 पराबलम्बितासे घुटकारा बिलाया। यह पनु भी पर उम मीकडो मान
 बियेसि अच्छी थी जो बन-रूपसे आसक्त होकर अपनेको तथा अपने
 प्रेमको बेच देती है।

इस कथाके महत्त्वकी ओर नकित करते हुए सम्पादकने लिखा है कि
 बरबारीमें माचन-नामवासी सडकिमोंका जीवन अपमान और कु खने मघ
 हुआ बा। मंगीठ और नृत्यमे पकनवाली ये सडकिमा बाकूपट्ट सम
 और सुन्दर होती थी परन्तु समाजम इनका बाबर मही बा। यदि ने
 किसी धनी-मानी ब्यक्तिको ब्याहरी तो उसकी पत्नी मही रखेक ही बनकर
 रहना पड़ता। जेनको कथा इस प्रकारकी धर्नलिक प्रकाका बिरोध है। एक
 माचने-नामवासी सडकी भी नैतिक और सुखी जीवन ब्यतीत कर सारती
 है। पम समझी जानवाली ये सडकिमा उच्च परिवारोंकी औरतामे काम
 बन अच्छी है जिनके लिए नैतिकता सम्मान या आचरबका कोई महत्त्व
 मही।

पनु और मनुष्यके प्रेमकी पृष्ठभूमिमें न जाने चितना बड़ा दर्शनाप
 छिना है। इस कथाअंकि सिपुड अन्तरात्मम जान बिलने तरह छिने है
 जो हमें तत्कालीन समाज और उनके रीति-रिवाजको नमजनम महापता

दे सकते हैं। पुरूरवा और उर्वशीकी प्रेम-कथामें पशु-तत्वका प्रवेश हो
 संसृष्टियोंके मिश्रणका सूचक है। यही अभिप्राय या रुढ़ि बनकर काला
 न्तरमें विश्वकी सहस्रों कथाओंमें तरह-तरहसे उपस्थित हुआ। मनुष्यके
 प्रेमको सम्बन्धमान बनानेके लिए पशु-पत्नी न केवल घटकके रूपमें सहायक
 हुए बल्कि सम्होने अपनी कायाका आवरण भी दे लिया। रत्नसम और
 पद्मिनीके प्रेमको यदि हीरामन सुभोन साकार किया तो बूझरी और जाने
 किशन सुप्त प्रेमियोंको अपनी कस्राके परबेमें छिनाकर इस जातिके
 पक्षियाने उन्हें समाज और रावदण्डसे बचाया भी। पशु उपेक्षित है,
 विरस्कृत है हम उसे देखना तक नहीं चाहते। पर पशुने विरस्कारके इसी
 आवरणमें उन प्रेमियोंको सुरक्षित रखा जो समाजमें अपने रुढ़ि-विरोधी
 प्रेमके लिए अपमानित हो रहे थे। पशुने बुद्धिके टेन्टैगर मनुष्यको
 हृदयकी सुठताका नया सम्बेस दिया। छल छप कपट स्वार्थमें पछे
 भोगोके सामने पशु-व्यगृही सुठता सच्चाई और निस्संक्रताका प्रमाण
 पेश किया। उर्वशी और पुरूरवाकी प्रेम-कथा मानव-प्रेमके इसी मये
 अभियानका विजय-ध्वज है।



टेराकोटाका साक्ष्य

[उस दिन धुस्फुप्पिमा भी और इसी दिन कुम्भके लीसा-ग्लिउज मोबनकी परिष्कारा होती थी। कहते हैं कि बीरनकी बीरनीमे मानवी संगामे स्नान करके मोबनकी परिष्कारा करतसे मनुष्यके सभी मनोरथ पूरा होते हैं। मोबनका आकषय जपन अप्रथय रेशमी सुतल जात कैमे लीच लाया यह तो मुझे मालूम नहीं किन्तु मनमें कोई मनोरथ है इसे तो बहुत ईर्दमपर भी मैं जान न सका। इसीलिए तमाम माचिपेल्को उनकी मनोकामनाकी अर्घ्य-वाचापर बिबाकर मैं चुपचाप लडा रह गया। सबेरा हुआ तो मनने परिष्काराके किए मही आरोग्यके लिए पैरोमें घति मनी। सीधे पचठठे सबरीमें बसकी और बइता जा रहा था तो यामने कुछ छल्ल बिफनी पटरियोको देखकर छिठक गया। कितनी बिफनी कितनी सबत है ये पटरियाँ—जमीन असुतपूष 'टेराकोटा' इन पटरियो-पर कुछ लिखा है यह जानकर मुझे इतना कुतूहल नहीं हुआ कितना जानकर कि यह इबारत पूरी बिर्ठी है—रामेश्वरी राधाका पत्र कुम्भ ईपायनके नाम। हापरकी सर्वाधिक महत्त्वपूष नारीका पत्र उत बापके सबसे बड़े कबिके नाम। क्या कहा हामा कुम्भशियाने उन काकक बिना मनीपीको सम्बोधित करके 'एक मास इतल प्रमन ? नहीं नहीं बोझा रकिए और इसे पढ ताँ लीजिए।]

पूज्य पराबपत्र कुम्भ ईपायनके बरनोमें

बरमानेकी रामीका रापाका मतफोटि प्रथाम बाप इय पचठो पाकर बीरने क्योकि आपने यह मोचा भी न होया कि बरमानेकी यह ए मोचा एकदिन बिकालवरी कबि मनीपी

शापरौका छगु

व्याससे उनके सारे कृतिरत्नके लिए जबाबदेही माँगेगी। मगर मैं ऐसा कुछ
 करनकी इच्छासे यह पत्र नहीं लिख रही। क्योंकि मेरे लिए जपन
 जीवन या व्यक्तिरत्नका कमी कोई महत्त्व रहा ही कम फिर उमरे
 लिए आपसे कोई प्रश्न कर ऐसा तो राधा कमी कर न पायेगी। बचसे
 आपका 'भावगत' पढ़ा रह-रह कर यह प्रश्न मेरे मनको सारगता रहा है
 कि आपने ऐसा क्यों किया? आपने इतने विस्तृत नाम्यमें एक बार
 भी राधाका नाम लेना आवश्यक न समझा आपन कहीं भी वर्तमानकी
 इन कुछ नारीका स्मरण न किया क्यों? क्या एना करनेसे आपके भीला
 पुत्रपोसामकी कीर्तिमें कोई कमी या बाधा क्या गवाका नाम मस्तिष्कके
 समुग्धक पूर्वोंने भूमिक कर देता? क्या इसके नाम भावन भागवत-रचनाम
 अर्थात् आपकी ईश्वर-दान्तिको टेन कम जाती? फिर क्या था ऐसा विमने
 आपको 'उनकी विस्तृत भीलाओंके बचनमें मेरे नामको गकारणके लिए
 विवश किया?

मगर महाकवि मैं आपकी प्रतिभा और उम्मेदशास्त्रिणी प्रकाके किचित्
 भी जनाकरके भावम यह सब नहीं कर रही। क्योंकि ऐसा तो बही मोक्षका
 विमल आपक अमृत अतारोके अनिर्बचनीय रस-ऐश्वर्यका पान न किया
 हा। मैं जानूँ भी तो क्या भूल पाऊँगी कि आपन यमुनाके तटवर्ती बुन्दारग्य
 में पठित रामका जो बचन किया है उसने एक बार फिर मेरे मनम सोये
 करम्बोंका छेहरकर जगा दिया है। बेसा बसेली और अनक मुयन्किष्ट पुष्पों-
 ग आच्छादित यमुनाका वह कूस अपनी अपूर्व विभ्यतामें तरंगित हो रहा
 था उनी समय बन्दमाने प्राचीक सौदके मुखपर अपनी ममूष कोमल
 किरणोंम क्यार और रोसी मम दी। बाहु, कँसा अलम्ब का वह चन्द्र
 मण्डल और कँसी अमृतपूब थी वह पूर्णिमाकी राति। बन्दमाका बच नूतन
 केसरके समान पीत-रक्ताम था और कँसी अमृत संकोचमिभित अमिसापा-
 में बमक रहा था वह मुख। सारा बन-धान्य चाँदनीम आपकावित हो जग
 कि वह बैरन मात्रक बँधी सार ससारको अपनी ऐश्वर्यिक जयासीकी

कपेटमें ममेटी हुई झंझुट हो उठी। नृत्य और मन्दारकी बन्धन पावस बनी
 हवा उम बाँसुरीकी ध्वनिम इस तरह निक्षिप्त हो पयी कि उसक मालोपर
 लूनकी नरमी छलछला जायी। गोपियों अपनी सम्ब मुसकान बिकासपूज
 बितबन और तिरछे भीहोस स्वामका सम्मान क्रिया। और तब आरम्भ
 हुआ लीला-पुरयका वह महारास जिसकी एक-एक ध्वनि एक-एक गति
 एक-एक ठान इस अमापिनीन अपन हृदयमे पारसमबिकी तरह रँबीकर
 रही है। कबि हम तो उस महाबितिके अपुब जागन्तके भोक्ता थे कइगा
 बाहें भी तो क्या कह पायगे किन्तु अब मैं तुम्हारी सुत्किसे चिथित
 रासके बे मनोहर बुझ देखे तो मेरी जैसे आनुबोग छलछला जायी सब
 क्या एवा का सौम्य उस महारासका ? कहाँत देवा का तुमने बइ रास ?
 सुबघन चक्रकी महामण्डलाकार सपयतिकी गु अन्तकमे पुरलित उस मण्डपके
 ठा एक रिपीलिका भी बिना जासा प्रवेद्य न कर सकती थी फिर कैने
 समुपलब्ध क्रिया का नुमाका वह अनिवचनीय सौम्य ? कहाँसे मिठी थी
 तुम्हें वह अन्ध्याज-मनोहर अतछस्पष्टिनी कला-बृति ? बाह अब मैं तुम्हारे
 इन सम्मोंको पढ़ती हूँ तो रोम-रोममें जैग पंख लग जाते हैं। सरीरके
 बन्धु-बन्धुमें महाकालका अकुष्ठ नृत्य साकार हो उठता है।
 नृत्य आरम्भ हुआ कलाइयाके कंगल वीरके पामजेव और करधनी-
 के छोटे-छाटे बु बुसमोंकी समवेत ध्वनिसे बिछाएँ वृंज उठी। मनुताकी
 रमन-रेटीके बीच गीतनगार्मोम बलवित स्वाम ऐन प्रतीत हो रहे थे मानो
 पीछी-पीछी बमकटी हुई सुबर्णमभिजोकि बीच नीछ मबि अपनी वृष प्रयाये
 उहीप हो रहा हो वीरके लोठ नगन रेघनी बुपट्टेका तीव्र जापुजन
 भीहोका तस्मित बंकिम बिलाठ जाँचतका अमापास स्वल्पन कानके
 कुण्डलोंका इन्द्रपतुपी विद्यान स्तन-मण्डनकी अनुपम चिरकन। समने
 पीनेकी हुई कलाटपर छलछला उठी कबटी बिलित हो पयी नीबीकी
 टें सुल पयी। अपरिमेय यतिन नाचते हुए कृष्णके सरीरत छटी मोगिवाँ
 नी लपटी कि बाजल-कासे बासलोंमें पिपल बित्तुकी लहरें नचक रही

शिखरोंका संग

हैं किसीकी कबरीस तुझे फूट बिखरकर पृथ्वीपर जा यमे स्वासकी मरगीसे किसीके बखपर लगा बन्धनका जेप सूख गया ।

और इस प्रकार जब रास-बीछाके अमल समूचा युवतिबुन्द बरक गया कल्प हो गया तो उन्हें साथ लेकर वनेग्र नील यमुनामे इस तरह बुसे जैसे हृदियोंनेके मुखके साथ मन्तराज सरोवरमें प्रवेश करता है । उनके गलेमें पड़ी हुई आवाह पद्यमाता गोपियोके अंभोजकी रजड़से कुचल गयी थी बिचपर शृंगके-शृंग काले मीरे मँडप रहे थे । वह आनन्द वह उत्साह वह आह्लास—सब जैसे उस पूर्वमाफ़ी रातमें अनेक राकारों अपने बिल्लस सम्पादको लेकर पुंभीमूठ हो यमी थीं ।

सब कहती हैं कवि । मे रासका मह बिचल पककर अपनेको इत्याच मानने लगी मूस लगा कि मोहनके रासकी सारी गारकता तुम्हारी बाधीमें समाहित हो गयी है । किन्तु निश्चाय होगा तुम्हारा हृदय जिसमें प्रकृति-पुरुषकी गिराट बीलाका मह अतीन्द्रिय सौन्दर्य समा सका । किन्तु अपूर्व होयी तुम्हारी वनस्पती कि सुकल घरस्वतीके मन्त्र स्वन् तुम्हारी जिह्वाको आवाह बनाकर बस गये । किन्तु उन्मत्त रसयिक्त होना तुम्हारा मानस कि उसमें बहुविध रंभोके इतने भावदल एक साथ कह्य उठे ।

किन्तु, अपूर्व अतीन्द्रिय आनन्दकी यह बारा क्या एक क्षणके स्थिर भी तुम्हारे मनमें बिजकित नहीं हुई ? रह-रहकर अनाम मुखा-सित्पुमे सन्त-रन करती हुई तुम्हारी बुद्धि क्या एक बार भी प्रतिहत नहीं हुई ? क्या बृन्दा-बिपिनकी लीलाओंके समापनक समय राधाका नाम तुम्हारी जिह्वापर आकर तुम्हें अमिमूठ नहीं कर गया ? इसके उत्तरमे तुम चाहे जो भी कहो पर तुम्हारे मन्त्री पीडा छिपी न रह सकी । काब जेहा करके भी तुम सत्यकी बलती हुई बिनगाटीको राखियोकी डेरमें छिपा न सके । मनु रास के बचनमें गोपियोकी सारी कातरताका बिचल करते समय बन-बीचिका-पर जमरे परबिहनोंको देखकर सहम क्यों गये कवि ? रासोत्सुक गोपियोके

सामनेस मोहम अस्तबलि हो गये और बिहू-बिहन्म गोपियां तब-तब-
 पस्तवसे उगका पता पुछती प्रमद-बेष्टाएँ करती अपन स्वतस बिद्याओंको
 निगमिअत करती बुन्दारप्यमें पापत्की तरह कुमती रही। हुबमबसिठका यह
 निमम व्यवहार मुक्तिजनोंके हृदयको कमखिनी-वसपर विरे करका-पाठकी
 तरह बिबीक करमे समा। वे अथ-विगसिठ कष्टन 'हा इप्प हा इप्प।
 करती हुई कुररी पकीकी तरह बिलखने लगीं। तमी सामनेके अतावहुअने
 पाठ सुभ बासुकाके वसपर अकित हो बोने वैरेके चिह्न देसकर वे ठि
 पयो। उन पश्चिह्नोम एन तो पहचाना पर ना—अकूच अथ और क्रम
 की देखाओंने अलंकृत मोहनका किन्तु इतरा पश्चिह्न ? किसके वे रं
 चरक ? सपु-कपु चरक-चिह्नोमें एहीका अंत अपेसावृत अकि कष्ट
 और स्पष्ट ना—सिखिगीकी बिलम्बित पठि—हाव वह अचम्प ही कोई
 मुबती होतो गोपियोन सोचा और प्रेम-मिथित ईर्ष्यास प्रमत्त होकर वे
 बोळ पड़ो 'जैसे हचिगी अपन प्रापसबा मजराजके साथ मयी हो बैत ही
 मन्मन्मन् स्वामसुन्दरके साथ उनके कन्पेपर हाव रसकर चलनवाली
 किस कइमायिनीके ये चरण-चिह्न है ? आह कवि गोपियोके इत कुतूहल-
 स आप कितना परेचाम हुए। आपको क्या कि कही साथ रहस्य सुन न
 जाय। सीतापुस्योत्तमकी एक अमायिनी गोपीके साथ बिधेप प्रीतिकी
 कहानी अल-प्रवाद बनकर बासुमण्डलको घेर न ले इमीसिए आपने इन
 कुतूहलको दबानके सिए अपनी पूरी शक्तिके साथ कुछ न खोतनका निषध
 कर लिया किन्तु इतमी सावधानीके बाद भी आप उत तत्यको छिगा तके
 क्या ? अचानक वापके मुकस निष्कल गया

अमसाऽऽराक्षितो भूने मगवान् हरिरिस्वर ।
 कचो सिहास गोविन्दः प्रीतो सामनन्द रहः ॥

(भाषक १ १३ १२८)

और शायद आपको ध्यान न रहा महाकवि कि इन इसोके पदने
 शायने ह्यन् रापाका नाम प्रवेच कर पया। मेरे मानतकी समुची गुभ

द्विपारसेंअ सठ

प्रीति अपनी बदान्यताकी शक्ति केकर उपस्थित हो गयी। आराधिकाकी एका हाथ जोड़े आपके सामने पड़ी हो गयी। मैं इतनेसे भी अपनेको कम माम्यसाक्षिनी नहीं मानती कि महाकविके सम्बन्धमें अनायास इस गुण्य शमीनाका नाम मुद्रित हो गया।

मोहनकी उम मासकी छीछमबोली मधुचर्ममि मेरा नाम न था न सही मैंने अपनेको उनके मुखकी सत्सीदार माना ही कब ? किन्तु महाकवि कुछ तो मेरा अपना वा उसकी अभिव्यक्तिका अधिकार भी आपने क्यों छीन लिया ? कृष्णके प्रति मधु अभागिनीका प्रेम क्या इतना बड़ा गुस्तर अपराध था कि उसके लिए बाँसू बहानका भी मेरा हक न रहा। रास लीला ब्रजके मुखकी अन्तिम परिणति थी। कौन धाम्पता था कि उस गङ्गाकी सुभ्र उरगलज शीतलीके मुखमें मृत्तलम्बाक्षिणी अमावस्याकी काली छाया छिपी हुई है। किस माकूम या महाकवि कि कंकणका बहजन गुनुरोका रत्न मारकका प्रजन और करवनीका बाधजन म्पधाकी ऐसी ताल जमाने वा रहा है जिसकी साक़्ती कसकस हृदयका अनु-अनु चिरकाक तक कराहता रहेगा। कृष्णके बिरह-बुझको प्रज धीरे-धीरे सहता गया हृदयकी पीडा हार्डिमें बिरह-गीत बनकर कूटने लगी। दिन तो बीच-तीन करके फट जाता रास अवश्य नागिमकी तरह गुंजसक मारकर बैठ जाती पर मडरावि बीतते-बीतते गोपिनी शम्भा छोड़कर उठ पड़ती दीप जसाकर वास्तुदेवका पूजन करती भरको धाड़-बुहार कर साक़् करती और फिर वही विमोग बैठ जाती। उसकी कलाइयोंके स्वर्ण-करण दीपककी ज्योतिमें चमकते जामूपर्णोंके मणि प्ररीण हो उठते। कानोंके कुण्डल कुण्डल-रत्ने कपोलोंपर अपनी चमकस बुन-छाँही प्रकासकी मृष्टि करते और उनके कच्छम उठे हुए बिरहगीत प्रजकी गतिमेंको अबीन पीड़ासे भर बेते।

ऐसे ही पुन-भरें समयमें उडब आये। गोपियोके धीरजका बाँस टूट चुका था। उडबको देखते ही मनकी शीघ्र स्थिति पीड़ा-व्यथा एक साथ ही बह चमी। पास आये एक भ्रमरको सम्बोधित कर गोपियोने मोहनको

क्या-क्या नहीं कहा। उसी किताब छम्पट! किसी मनुष्यको यामिनी
 मारियेके बरसोंपर प्रक्षिपण करनेका ताना बिया किसीने स्वार्थी कहा
 किसीने पुष्प-रस-कोभी किसीने कपट मरी मनोहर मुसकानको कोठा
 किसीने छिरोछे वैमोही जादुगरीपर ध्वंस्य किये। किसीने उन्हें निर्मम
 उसी निर्मोही कहा किसीने बहुतराज नाम्नाज और छत्तियाकी उपमि
 दी। पर म्हाकवि उस भीडम एक ऐसी भी तो गोपी भी जिसन कुछ न
 कहा। क्या आपको याद न रहा कि प्रथमे एक ऐसी संठपठा भी थी जो प्राण
 कास उठकर दीप तो जलती थी वास्तुदेवकी पूजा तो करती थी रही तो
 बिलोती थी पर कभी उसके होठेपर जिह्व-नीतकी कटियाँ नहीं उठ पाती-
 थी कई बार मम्मी क्या पुरे जोरके साथ जमड़ी पर पीठ होठोंपर पड़ी
 बनकर सूख गये। वह चिर्क रोती रही चिर्क रोती और उठ दिन भी
 गोपियोंकी सारी आश्लेष-मरी बातोंके समाप्त हो जानेपर उसके अन्तमें जब
 उग्रम उग्र समजामेके लिए बोलन बजे तो उसने चिर्क एक प्रसन्न किंवा
 बा। आपने वह प्रसन्न तो लिखा है पर प्रसन्न करनवालीका नाम नहीं बिया

अपि वत मधुपुर्मानार्थपुत्रोऽधुनाऽऽसी
 स्मरति स पितृगहान् साम्ब वन्यूह्य गोपान् ।
 क्वचिदपि स कन्वा न किङ्करीषं शुर्पाति
 मुबमगुत्सुगन्धं मूर्ध्निधास्यत् कदा मु ॥

(भाष्यत १ । १७०। २१)

प्रियके बूठ मनुकर मुझे यह तो बताओ कि आपपुत्र मधुपुत्रीम कुनवे तो
 है ? क्या उन्हें नन्दबाबा मधोबामाया मित्र-सञ्चार्योन्नी कमी यात्र जाती है ?
 क्या हम दारिणीकी भी कभी बात बसपते हैं ? जाह, मधुप क्या किर कमी
 इन जीवतमें ऐसा अवसर आवेया कि वे अपनी मधुपकी कल्पने सुभासित
 मुना हमारे छिरपर रसेवे

महाकवि क्या इस प्रसन्न भी औरों-जैसा ही आश्लेष वा क्या इनमें
 भी कही ध्वंस्य वा उल्लासता वा ताना वा विदबासपातकी बात थी। यदि

धिररतिका सेतु

गहीं तो इस प्रश्नको भी आपन उन्हीं प्रश्नोंके साथ क्यों रक्त दिया । किसी ने उन्हें आयुध कहा था ? किसीने उनकी भुजाओंमें शान्तिशायक अमुककी गन्ध पायी थी ? राधा उन भुजाओंको पल्लेमें बाराण करनेकी अपेक्षा शीघ्र पर अथवाय करनमें ही शान्ति पाती थी । बाहू महाकवि राधा उन भुजाओंमें मात्रक कस्तूरीकी सुगन्ध नहीं हुईती थी इसीलिए उसके मनसे उनके लिए उदाहनेके बोझ नहीं उठे । यहाँ भी आपने राधाके कवचको बनाया ही रहने दिया । आन्तर क्यों ? क्या अपनी बिरह-बीड़ाको कह सकनेका भी अधिकार मेरा न था ?

किन्तु, मैं इससे भी डूबी क्यों होऊँ । जिसने समूचे तन मन प्राणको बलिष्ठ द्वासाकी तरह निचोड़कर उन चरणोंमें समर्पित कर लिया वह व्यक्तित्वकी सुरक्षाके नामपर यह सब कुछ क्यों कहने लगी । मेरे पक्का यह अभिप्राय निश्चिन्तक न था । मैं तो उनकी सुख-शान्ति और कीर्तिके लिए सब कर्कश सिर-साथे केन्द्र अज्ञात लोकमें लो जाता चाहती हूँ । मेरे जीवनकी परितापता सिर्फ इसमें थी कि मैं उनके हृदयमें गारी-समर्पणकी वह ज्योति बलाकर निर्वाणको प्राप्त हो जाऊँ जो सुर्गों-मुर्गों तक उनके पक्का प्रकाश बनी रहे, किन्तु वह मैं शायद मेरी बहुम्माबता ही होगी । मैं ज्योति प्रकाश कुछ न बन सकी मैं तो उन पैरोंपर शेषशरीरके फूँककी तरह सिर्फ चढ़ भर गयी । प्रकाश या ज्योति उन्हींमें माना यह भी उनकी छाकी मठा ही थी । मेरा प्रेम यदि महासगरमें उनके शरीरका कवच भी बन सका तो मेरे लिए यही बहुत है ।

डूबी सचमुच कहो तो कवि मैं इसलिए हुई थी कि तुमने मेरे प्रेम-को सौपनीय समझा उसे छिपानेकी कोसिधकी । फिर इसमें भी तुम्हें रोपी क्यों कहूँ ? मैं छाल बार कहूँ मैं तो क्या बुनिया मानेगी कि राधा और कृष्णका प्रेम आरमास आरमाका मिलन था । उसमें शरीरका ऐश्वर्य नहीं हृदयका रसतरण था । तुम्हारा मामरत ऐश्वर्यकी कहानी कहता है । हृदयकी पट्ट महासमिपके विवाहकी भाषा । समिपभी और सरयमामाके

प्रलयकी कहानी वहींतक विश्वका साथ देगी जहाँतक मनुष्यकी बुद्धि
 शरीर, क्रम और ऐश्वर्यकी सीमाको आखिरी मँडिर मानकर बैठ जायेगी
 पर जब विश्व मानवकी महाभाषा शुरू होगी तो वह सीमा पतन्य नहीं
 प्रस्थान-धिसा बनेगी और तब मनुष्यकी मानस-यात्राका नेतृत्व करेगी प्रजा।
 उस प्रजाके लोकमें कुप्य-प्रिया खिसकी नहीं "पया होगी। जीवका
 अन्त ऐश्वर्य मही आत्म होगा" "रखो बै स। महकवि मैं अन्तमें एक बार
 फिर मागवत-बैठी अमृत-बाककी रचनाके लिए तुम्हाप साबुबाद करती
 हूँ। धीक्य्य घरणं मम। इति। /

—पया

०

जेहि मन पवन न संघरै

‘नैतिकता ! आचार्य बिरसिमैरवने होंठोंको क्विचित् बळ करके ऐसा मुँह बनाया जैसे किसी कमकाष्ठीके सामने जम्ह बेते समय किसीने मबिरा का नाम किया हो। सुईकी मोचकी तरह कड़े बास हृदयकी किसी उस्बास-मयी मिहरनसे सबग हुए, मुचडौनेको अपने कड़े दाढमें बबोचते कस्त सिंहकी जाले जैसे एक बबीब बिरसित जेछा और अपनी टाकठके मान्तरिक एहसाससे उत्पन्न प्रसन्नतासे बमक उठयी है। बिरसिमैरवकी झुर्रियोंमें बैसे जाले बमकी नैतिकता पाबण्डियोंका कबब है, जनताको मुक्त बनाकर अपना उस्तू छोडा करलेबालोंका बृन्त टट्टर, जिसकी जोटसे बे निर्बोप और मामूम लोनोंका सिंकार करते हैं ! तुमने यह दाब जैसे ही सीखा है जैसे बंभल शिशुको निस्वेष्ट बनानेके लिए मूक मस्तारें मूठ-ब्रेतकी बाठ किया करती है। नम बूमगेसे मदि मुक्ति मिछे तो कुते और सिवार भी मुक्त है। मयूरपळ प्रह्वन करनेसे ही मुक्ति मिछे तो मयूर और बमरी बामें भी मुक्त है ! धिला चुनकर जानेसे ही मोस मिस्ता हो तो करि और तुरंग क्यों मुक्त नहीं है ? राजकुमार आचार-बिचार पुष्य-पापके बारेमें ये सापि मिष्या बारबाएँ तुम्हें तुम्हारे संस्कारोने बुट्टीमे पिसायी है। इसीलिए सख्त बीकन तुम्हारे लिए बनीतिक है प्रहृति तुम्हारे लिए बगम्य है, तुम मायके मोहक बाबरजम लिखे म्कट हो... ।

‘किन्तु आचार सख्त बीकनके नामपर टान्त्रिकोंने जो भत्याचार पैसा रखा है भैरबीके सन्धानके नामपर निरपराब सुन्दरियोंका अपहरण शक्तिकी प्रसन्नताके लिए निर्बोप ब्यक्तियोंकी बसि जनताको बास बेकर बासके बमानेकी प्रक्रिया लुका ब्यभिचार और नम मैबुन...’

‘हा हा हा ! बस करी बस ! तुम्हारे समा-पण्डित बैकसमनि जो
 ज्ञानका उपदेश तुम्हें दिया है उसे विरतिरूपके धामने कौड़ियोंके पीक
 क्यों सुटते हो ? तुम अपने बुद्ध बल्पर, सामयिक अहंकारको विरट्ट रूप
 लेकर अपनेको धारे विस्वके आचरणका नियन्त्रा मानते हो राजकुमार,
 जिसकी भुक्तिकी रक्षणमात्र विपक्षिते घट-सठ विष्णु आत्मोचित होते हैं
 उसकी आचरणको रोक्नेका वासिष्ठ प्रयत्न ! हा हा हा हा ! तुम धारे
 विरमको सही रास्तेपर के जाओगे ? सही रास्ता यानी योगसे विरक्ति !
 तुम आपसे कह सकते हो कि यह ज्ञानमा छोड़ दे पबगते तुम कहोने कि
 यह पति छोड़ दे । अमिका धर्म है जसामा और चरितार्था है प्रकाश ।
 तुम उसके सहज धर्मको नष्ट करके प्रकाश पाता चाहते हो । जाओ जाओ
 अपनी ठैली बह्दारबीनारीके अन्दर बन्द उस मूकमें बैठकर अपने बुद्ध
 हृदय कुण्ठि बह्दुआपी समा-पण्डितोंकी आदुकारिताको ज्ञानकी पराध्याप्य
 सम्प्रकर बमराज बननेका ढोंप रचामो ! यह सब तो तुम्हारी बुद्धिसे
 जानेसे रहा ।

‘आचार्य ! अपमान और स्थानिते राजकुमारकी आज्ञें मर जाती
 पामर जनपर छेष नहीं स्नेह इधराला चाहिए । क्या यह सही नहीं है
 कि योगके प्रति इस प्रकारकी आसक्ति हम पशु-सुक्लम परछाछपर छठारती
 है ? हमारे ऋषियों-मुनियोंने सहस्रों वर्षोंकी साधनाके बाद मनुष्यके ममते
 निवृत्ति मापने अनुसरणक आचारपर पाश्चविक प्रवृत्तियोंको दूर करनेका जो
 प्रयत्न किया है उसे आपका सहज माय नष्ट कर रहा है, इससे इन्द्रिय
 क्षिप्याको बढ़ावा मिल रहा है ।

‘राजकुमार हम अज्ञानीको उसकी विवपता मानकर दामा कर देते
 हैं पर अचरुधरे ज्ञानकी विठार्ई हमसे बरदाप्त नहीं होती । बेहसे लेकर
 आज तक आत्मनिग्रहका उपदेश दिया जा रहा है । क्या हुआ परिणाम ?
 तुमोये ? तुम सचने तुम्हारे काल ? अविचारित रमनीय तुननेके अम्मासत
 तुम्हारे बाल मुर्षके पशूप नहीं सह सकते । दास्य-भाषनके समय अपनी

विरलियोंका सेन

बाँके एक अज्ञात ऋषिके साथ कुँजमें जाते देख ऋषि बासक कराह उठा
 ना मुक्ती पत्नीको सन्तुष्ट करनेके लिए व्यवसन साधनाका बबतेह
 बनाया दम्भक ब्रह्मि देवकर भागवतकी कुरुमाता काम-मोहित हुई, माताका
 विरसदेर करके भी अचारी ऋषि-पुत्र काम-वासनाका गधा कष्ट न
 सका । अपनी मुक्ती कम्पाकी मनस्तुष्टिके लिए असुर पुरोहित सुहृद्वायने
 अपने आमाताको पुत्रसे जीवनका दान माँनेके लिए प्रेरित किया बीबर
 कम्पाके कम्के विच्छन्न मार्यपर पारासरका बहूतेव स्थिरक बना । तपस्मासे
 बड़ीमूठ घरीरबासा ऋषि शृंग नागरिकाओके कटाज-तन्तुओसे बँधकर
 पिता-शाय निर्धारित बहू-चयकी सीमा काँब गया” ।

‘आचार्य’

‘हा हा हा ! मैं पहलेसे जानता था राजकुमार कि तुम्हारे काम यह सब
 मुन न सकेंगे क्योंकि तुम उस सास्त्रको मानते हो जो विश्वका मूळ परती-
 में नहीं आकाशम हुईठा है, तुम अश्वको बधीमूठ करनेके लिए उसे बकला
 नहीं चाहते बस्याको मजबूत करना चाहते हो । मनको बधीमूठ करना
 है तो उसे उसीपर छोड़ दो मुबनविमोहिनी प्रकृतिके जिस बुर संघमें
 रह रहा है उसीमें रमने दो । तुम उस रोकनेकी कोशिश करोगे—व्याप्त-
 से बारनासे समाधिसे—तो जानते हो क्या हास्य होगी ? बौद्ध सिद्ध
 सरहपायके शब्दोंमें यह आत्म-बंधना है । चित्तकी कम्पित एकाग्रता तुम्हें
 अपने मनसे उत्पन्न बर्षोंमें भरमाती है । जाँच भूँकर कुछ न देखनेका बँध
 करते बन्न तुम अपने चिरासे उत्पन्न सकारको देखते हो । यह आत्म बौध
 है वृन्तित व्यभिचार ।”

‘आचार्य राजकुमार मुमकराया ‘बौद्ध आपके मायब है यह जान
 कर प्रसन्नता हुई ।”

‘तुम्हारी मुयकराहट नागन बज्जेकी हँसी है यह मुसे मीठी लगी ।
 मैं यही विविध सम्प्रदायोंके बर्षनकी व्याख्या करने नहीं बैठा हूँ । प्रश्न
 है केवल नैतिकता । तुम्हारी आपत्ति उन तयान परतोंपर है जो भोवका

सामनाका अनिर्णय साधन माफ़ते हैं। इसे प्रोग कहो प्रकृति कहो रस-
 साधना कहो जो भी चाहो कह लो पर एक बात याद रखो इससे आन
 तक कोई बचा नहीं है। बीड जैव जीव शाक्त वैष्णव कोई भी नहीं।
 विश्वास न हो तो 'महामुद्रोपवेश बयमुहापीठि' या 'अमृतनयनीठि' देखो।
 तुम्हें महामुद्राके साथ बीड साधकके रमयकी साधनाका ज्ञान हो जानेवा।
 शाक्त और जीव तो इसके लिए बदनाम हो ही चुके हैं। पर वैष्णव क्या
 इससे मुक्त है? रस-साधनाको तो उन्होंने 'राधातरण' के रूपमें पराकाष्ठ-
 पर पहुँचा दिया। और तब भी इससे बच न सके। उन्होंने भी बालेश्वरीजि
 उपासना की और संयमभी तथा विद्या-कामिनीके आत्मिकके गीत पाये

'पर परिणाम क्या हुआ आशय? व्यक्तिपर और हीनियसमापतिको
 ही साधना माननेवालासे कौन-सा ऐसा कार्य नहीं किया जो उन्हें पशु
 कड़े जानेसे रोक सके? इन्द्रियसिद्धि और शरीर-धारणको ही पुस्वार्थ
 मानना साम्य बुद्धिमानी नहीं है।

'कौन कहता है कि इन्द्रिय-सिद्धि बुद्धिमानी है। पशुकी सारी प्र-
 तिज्ञा मनुष्यको प्रकृतिये बाध रूपमें मिली है। इसीलिए तो हम कहते हैं
 कि जो कुछ तुम्हारा है उसे उत्सर्ग करके अपने वास्तविक स्वरूपको पह
 जानो। तुम यदि मानवकी मूल प्रकृतिको ही पाप कहोगे तो आरम्भ हो ब्रह्म
 हो जायेगा। मन केवल वास्तवके पुँजका नाम नहीं है, वह अमृत देनेवाली
 सिद्ध-मुद्रिका भी है। चित्त वह उबर भूमि है जिसमें मनुष्यको मृगाण
 बलानेवाली इच्छाओंके अंडुर जपते हैं। उसे कुचल कर तुम क्या पाओगे।
 कुचल सकोमे भी इसमें सत्येह है। इसीलिए राजकुमार हम कहते हैं कि
 जिसमें तुम बने हो उसीको न सुठसाओ। मोतीकी माता भी मकटके नखेमें
 कीचसे अधिक कुछ नहीं होती। चाह कर भी तुम 'मै' और 'तुम' का
 घेद नहीं मूल सफ़ते। मूल सफ़ते हो तुम? नापी और पुष्पका अंतर
 क्या सदा तुम्हारे चित्तमें मिलेप नहीं वीबा करता? और जबतक वह
 विशेष है तुम निष्काम नहीं हो सफ़ते। कामसे बन्ध चित्त डेकर तुम बहानी

प्राप्ति करोने । हा हा हा ! राजकुमार को 'मैं' और 'तुम' के अन्तरको भूल जाता है । महम् और शम्में बिसे सामरस्य दिखायी देता है उसके स्थिर गारीके अगों और साधना-पीठमें कोई अन्तर नहीं है ।

'गारी आपकी साधना-पीठ है आशर्म पर एक भृश हृदय खडकाको पुष्पित घञ्छोके फुमलाकर अपनी तपकवित्त उपस्थिका साधन बनाना क्या गारीके साथ अन्याय नहीं है ? म्हामुरा मीरबी प्रकृति पक्ति अस्मिता आदि सम्बोधन देकर गारीका ही अस्मिता प्रतिनिधि बताकर उस मूल बनाकर अपना उसक काम सीधा कर रहा है ? वैदिकतावादी वाच्यकी शास्त्रकार या भोगवादी तान्त्रिक— ?' राजकुमारने धर्म्यकी कर्मवृत्ताको हींठोके बहलासे प्रकल्पित करते हुए कहा 'बोलीपकरनकी कल्पित गरिमाको अमलनेमें गारी आज फूली नहीं समझी पर इस आत्म-बंधनाको बहू खडक हो सकेयी ?'

'आत्म-विद्वाने आत्म-बंधना बुरी नहीं है राजकुमार ! 'गारी बहो वृत्तित है बहो देवता निवास करते हैं यह वाक्य पित्ठी तान्त्रिकन नहीं कहा था । तुम्हारे देवताओंके निवास बीसे ही आबाद रहे और तुम्हारी पूज्य गारी-प्रतिमाए पाटलिपुत्र और अन्य बड़े नगरोंमें ठीकरोंके प्राच बिचरी रहीं । गारीको पूज्य तुम्हारी वैदिकस्थाने बनाया । पुष्पित घञ्छोके धाममें गारीको हमने कभी नहीं बाँधा । पंचकर्म्याओंकी बन्दनाका बोल हमने नहीं किया छतीकी ममदिका गुबनान हमने नहीं पाया पातिव्रतकी मर्पाको संस्थापित करनेवाली गारीकी ममि-परीशा हमने नहीं की । स्वर्बराका अपहरण हमन नहीं किया । सुबरी गारीके लिए म्हातू कुछ हमने नहीं देने गारीका सबला बनाकर बहिरकी व्याधाममें हमने नहीं भौला सास्त्राव करनेकी उद्यत विज्ञाताकी धर्म माननेवाली पामीके मिरको कष्टनेकी समकी हमन नहीं की । तान्त्रिकोंने कुछ नहीं किया व्यभिचार और नमताको प्रथय दिया तो दिया' पर वह तुम्हें मानना बड़ेना कि बीड भोगवादी आचरने गारीकी अस्मिता प्रतिनिधि मानकर

उसे एक नयी मूर्तिका प्रदान की। उसके पापापीको रीतोंकी बुझिसे नहीं
 ममकी यज्ञासे सजीव बनाया तुमने जिसे मरिच कहा था पापाका सोपान
 कहा था पतनके कूपमें गिरानेवाली कहा था उसे विस्मयिनीहीनी प्रकृतिकी
 सार्थकिक मूर्त्तवपुत्र भूमिभ्यक्ति कहकर सिद्धिप्रदायिनी देवीके रूपमें
 हमने प्रतिष्ठित किया।

केवल कल्पना-सोकमें आचार्य ! भूमिधारसे नारी शक्तिवपुत्र नहीं
 काश्चिदीन होती है।

राजकुमारके ठीके सञ्चालनी शंकार जमी मन्दिरके गर्भ-गृहमें घोषी ही
 थी कि बग्गी-मण्डपका मुख्य भाग कपूर-दीपोंकी स्रष्ट-स्रष्ट घाटसे रहा
 उठा। अस्त्रि-यंत्रमें बड़े हुए कपाळ-दीपोंको अक्षिपके पास रखकर एक
 मुबरीने बग्गीकी मूर्त्तिको प्रणाम किया। अस्तमेत सूयकी वैरिक आगमें
 कर्पूरी शीप बवाकुमुम्के फूलेकी तरह स्रष्टराने सये। अनगिनत दीपोंके
 कल्पनाल प्रकाशमें राजकुमारने देखा एक अपूर्व मुबरी तपश्चरसि
 तप काचन बल जयत प्रघसत लम्बाटपर योरोचनका शैरकी बल वैरिक
 सिद्धी साङ्गीमें लिपटी सुषिककम वेदुयष्टि हाथोंकी नील रक्त धिपट्टे
 विद्युत्प्रवाहिनी लक्ष्मिप्रामोकी तरह उद्गासित आरक्त नभमें मन्दिबर सय
 जैती नमक पतले होंठोंमें छिठीया नमकी तरह बंकिम आस्वस्त माण—
 'ताप !' विरतिभैरवकी आवाजमें करका बुझिकी यज्ञमहाष्ट की
 'यहाँ जाओ।

मुबरी सिद्धयतिसे बग्गी हुई यम-गृहमें पहुँची। बग्गे समय पिण्ड
 सिमोनेकी नसे पाटल कसीकी तरह कटक उठती। 'आजा हें आचार्य !'

'राजकुमार, मेरे कल्पना-सोककी यह नारी तुम्हारे सामने पड़ी है।
 ज्वला भोयोपकरण पुणित सञ्चोंमें भमित आरम्भबनाओ होनेवाली
 नारी। तुम इसका आसिपन करोने ? तुम पुस्य हो मुवा हो और यह
 बनेतिक साधनाका मन्दिर है, भूमिधारका स्वात—बोसो ?'

राजकुमारके वेदुरेपर शीपाधारकी छाया लोट रही थी। उसने मरबत

मुका ली थियर् आँसोंसे उसने युवतीके चेहरेपर देखा—न सज्जा न सिद्धक न कर न आक्रोश । होंठोंपर किंचित् बहू स्मितरेखा बकर भी पर उसमें उपहास है स्वप्न है, या उपेक्षा है—यह जानना कठिन था । वह ऐसे देख रही थी जैसे माता शिशुको देखती है राजकुमारकी आँखें जमीनमें गड़ गयीं । उसने जबतक गारीकी आँखोंमें विवसता देखी थी समपग और निरीहताका भाव देखा था बज्जासे आरक्त कपोलोंपर जबकालकी छाया देखी थी ।

'राजकुमार तुम्हारे सामसिक अहंकारका उपमणि ज्योतिसे क्या क्यों हो गया ? उठो-उठो करो आँक्यन ताकि तुम्हें मालूम हो जाये कि ऊम्बरेतम्की उचित जग्गिमे पाँकन पवत बहकर सार कैसे होते हैं ताकि तुम जान सको कि ऊमरसे मसूम खिलायी पकनेवाके मजिबर सर्पकी मुँकककमें बोधा कैसे टूट जाता है, ताकि तुम्हें अनुभव हो कि विद्युत्की धाराके मंस्यसे रक्तधिराएँ बड़ीमूत कैसे हो जाती हैं "

'आचार्य जमा करें । वाय मेने केवल विज्ञासाके बड़ीमूत होकर कड़ी बाँठे कही थीं । जब बनोके द्वारा ध्मिचारको पूकित होते देख मन संकाशु हो गया था ।

'पसुसे तुम क्या जासा करते हो राजकुमार ? ज्ञान केवल अधिकारीको दिया जाता है । ज्ञानी बाह्यजन्वरको ग्रहण करते हैं बायस कपूर नहीं मसका भोग करता है । स्मृतिकारोंने कहा था जहाँ बेबस धाससे जावसि बर्मका विचार न हो सके वहाँ 'वात्मगस्तुहि को बम मानना क्यों कहा था ऐसा ? प्रबेद मत् अधिकारीकी ध्मस्था करता है । जन्वि कारियोक्त प्रबेदसे मठकी बरिमा नह होती है । पात्राका अनुसार घुड बक्यारास भी हम सोमिठ और ज्ञास बस प्राप्त करते हैं । इसके सिव किसको बोपी कहोये ? वैष्यबोनि कहा था मनुष्यके प्राप्य दो हैं—ऐश्वय और रत्न । ध्मिमी कृष्णका ऐश्वय है, धमा रसतत्व । र्मिमी प्राप्य है, कर्म फल है धमा प्राप्य । तुम कर्मफलको बोने बिना रसतत्वको पा नहीं

सकते । सांसारिक बन्धन तुम्हारा प्राप्त कर है, हट नहीं । पशु प्रत्येक सुन्दरोंको प्राप्त मानता है, धरीर सुखको ही इष्ट मानकर पठमके वर्तमें फिरता है । उस धरीरका नहीं अन्त्याका धर्म है । धरीर सुखको ही इष्टिम भोक्तको ही परम सुख मानकर पशु भ्रममें भटकता है । धार रत्तो मन्की कामनाओंका विनास ही महामुख है । बीड तिडने कहा था कि जिस मनमें पवन तककी गति नहीं होती वही सूरज और चाँदका भी प्रवेद नहीं उस स्थितिमें बन्दकर ऐ चित्त विधाम कर ।

जेहि मय पवन न संचरइ, रवि ससि जाहि पवैस ।
तहि बड़ चित्त विधाम कर, सरहै अहंन उवैस ॥



कड़से के लौट आयी अम्मा हो—

अम्मा आबि अम्मा काल्हि होइवू सत्सु हमार—

मइया दूर गयी

मैं इस रातको सुनकर चौंक पड़ता हूँ। छात्र कोटिष्ठ करनेपर भी ठग्यामे खो पाला मुक्तिष्ठ है। सारी स्वरमोहिनी मेरे मनके एक छान्केसे टूट जाती है। भाई-बहनका स्वाद आते किछ बिस्तृत युगके गह-भ्रष्ट इतिहासका पला है यह! ममे मकाव कमानेके लिए नीब खोपी जा रही है। आजीसान आधुनिक संके ममे मकाव और नीबमें यह क्या दबा है! कुदाकसे टकराकर हड़कीका एक लम्बा-बीड़ा कंकाल बाहर आ जाता है। जान किछ समुद्रका अदृशित बल है यह जा सचिबोंकी रेतके नीचे दबा-बकापा बभी भी बथा हुआ है।

तब क्या जा पता नहीं? समुद्र अबकम जा चारों तरफ। सृष्टिमें सबसे बिस्तृत अंध उसीका जा। क्योंकि किछी बलवती इच्छाके बसीभूत होकर विवेक खो देनेपर भी ममीको समुद्रकी यात्रा न भूखी। नीले आकाश के नीचे नील बलरासिका अपार पारावार। अब लहरें उठतीं तो पुष्यभी किरणें उसपर द्विरम्पयर्मका एक गया आवरण डाल देती थीं बिस्फी बमकमें तब कुछ मुझरा लगता—। नील-नील बरख डोक। पुष्पीपर पने बबक थे। मनुष्य बतचरका जीवन व्यतीत करता जा। तब बसकी साल-साएँ उबलानेके आवरणपे किपटती नहीं थी मीर न उम्हें ध्वस्त करवेमें बह कभी संकोचका अनुभव ही करता जा। मधु बात और मधु बकके बीच बनी ममी एक दिन प्रकृतिके अपरूप सोनरसे विमुक्त किछी गयी भावना-से आकाश हो उठी। उसने अपने भाई ममीको 'प्रार्थना सखा बह मम्बोबिठ पिबा और हृदयकी कस्तूरबग्नी तीध बाधवासे डेरित होकर बोल उठे

हैं बब मैं इन विद्यार्थ सन्के अथ तुम्हो मितना चाहती हूँ। तुम माताकी कोवते उलान मेरे अमक सखा हो।

बहु तथा रत्न का इसी कारण श्रद्धायोंने इसे अश्वमेधकी मंत्र-मंथुपाय प्रतिष्ठित कर दिया ।

मानवीय कल्याण सुख और पवित्रताके उद्देश्यम यमने जो अग्नि प्रयत्निकी उसने सखियोंके हमारे मर्ममें व्याप्त अश्वकारको दूर किया है । इस उपबन्धयमि तप कर यमका हृदय कुन्दरकी तरह बमक उठा । और यम-यमीस यम-यमुना तक फैली हुई विकसित भारतीय संस्कृति साक्षी है कि यमीने यमुनाके रूपमें अपने भादिके भ्रातृत्वकी रक्षा करनेका अद्भुत कार्य पूरा किया । यमुनाका 'शैवा दूज' इतिहासकी एक नयी बटला बन गया । यम-यमीके अन्तर्भक्तिरु सम्बन्धके पीछे एक निगूढ अर्थ छिपा है । यम तो यमीका भाई है । उसके प्रति उसके मनमें स्नेह, ममता प्रेम्का होना नैसर्गिक है । किन्तु यमिनीत्वकी परीक्षा तो दूजरोके प्रति अपित मेवाने है । जो दूजरोको अपना परिवार बना ले बही बहन है । और जो ब्रिठने बड़े समूहको अपनी निस्वाय सभा ममता और प्रमके अन्वर्णमें बीच सके बहु उतनी ही महान् है । भगिनी अथवा 'विस्तर' अश्वके पीछे अद्भुत निस्वार्थ अविद्यानकी बही अद्भुत भावना अन्तर्निहित है ।

भारतीय पारिवारिक जीवनकी अजन्म-मुरारिका अनुमान लगाना हो तो इस भयिती अपना बहन अश्वके व्यापक गूढ अर्थोंकी व्याख्या उल्टी है । भारतीय परिवारय 'बहन' मेरुवण्ड है । जो सफटा है कि सृष्टिके आदिकान्-प्रेम-साधनाकी जीवित प्रतिनिधि है । जो सफटा है कि सृष्टिके आदिकान्-मं मातृसत्ताक परिवारमे स्पर्षा और शक्ति-परीक्षाके क्षेत्रमें बहु एक उय प्रतिबन्धी रही हो किन्तु सत्ताको हस्तगत करनेकी उन सारी चेष्टाओंको बहु बहुत पहले छोड़ चुकी है । समाज और परिवारकी स्वतितके नामपर एक परमं अगम लेना पत्न्या बहना और फिर किसी सामाजिक नियमको मानकर दूजरे स्वाभपर व्याह कर बने जाना यह एक बहुत बड़ा अधिशात है । अपनी ममता सेवा और कर्तव्य-परायणताके अकार दूजरे परिवारके आदर और स्नेहका भाव पाने मरम उस अविद्यानका महारण कम नहीं हो

बलिदान देनेमें बुराई क्या है ? इसनाम बर्न यदि इस देहको पाकर प्रसन्न होता है तो बमसाधारणकी भ्रूणस्थिति लिए उसे देनेमें क्या हर्ष है ? एक राजकुमारीको ऐसा विचार आया । कुटुम्बकी प्रजाकी और सैनिकोंकी मारकाटको रोधनेके लिए यदि कोई राजकुमारी विनाम पल्लवर प्राण दे दे तो कर्म उसकी प्रशंसा करते हैं । फिर परधर्मों के साथ बलात्कारसे होने वाला सन्म अशुभ्य क्यों है ? ऐसा सन्म भी तो एक प्रकारका बलिदान स्नात हो है — नुअरकके सुप्रसिद्ध कथाकार रमनसतत बेसानि 'महाद के पूज' उपन्यासमें बाबाबार्कि बलिदानकी इन शब्दोंमें अन्वयार्थना की है ।

कल्याण और सीमाप्यकी यह पारिवारिक लक्षित्त सर्वस्य बलिदान कर देनेवाली 'भविनी' क रूपमें मूर्तिमान् हो उठी । 'सिस्टर' शब्दकी भाव जो भी पुनर्लि हो उसके मध्यमें विषयव्यापी कल्याणकी एक अनुपम अर्थवत्ता छिपी हुई है । भाव 'सिस्टर' अन्तर्भावितक स्मार्तप्रदीप्त शैलिक का अन्वय बन गया है । किन्तु अन्वयकी सक्ति ही क्या उसके पवित्र भावकी अभिव्यञ्जना नहीं करती ? मानचर्च तो यह बोलकर होता है कि 'सिस्टर' शब्द शसारकी सभी भाषाओंमें सिटी-न-किटी रूपमें विद्यमान है । गुजराती में बरेली-से Sister, इच भाषामें Zoester, जर्मनमें Schwester मध्यकालीन अंगरेजीमें Suster स्कैंडिनेवियनमें Systrir, स्वीडेनकी भाषामें Systror सैलिनमें Socor और इन शब्दका मूल कहीं है । इत्यादिकलेपीप्रियया विटैलिका बेसिए और मूल स्पष्ट हो जायेगा । मूलमें है शब्द शब्द स्वस् । जिसका अर्थ अन्तरिमिष्टे वृष्टि । नुप्यु अत्यन्त अत्यन्त वा । शैलिन । स्वार्थ । अर्थान् जिसके कारण कल्याण हो शैलिन हो ।

और एक दिन ऐसा भी आया कि पारिवारिक कल्याण पत-बनना कल्याण बननेके लिए मन्त्र बन । मुझ देवी प्रकोप शब्द-सम्पत्त अपनी सारी शक्तके साथ उपस्थित होने से और इसका पशुका बनपीर पशुपार इमिडा-नुडके समप प्रकट हुआ । हुआये पापकोंकी शीत्कारसे आननाम बन गया । शब्दाधीन विटिच गया मन्त्री सिडनी इरबर्ट मुझ

जब उसके साथे दीवारों पर फिसलते हैं
 तब पीड़ा से प्याकुल
 अमचोल घायल उसे घूमने को
 कलबटे बदलते हैं ।

—सान्ध्य फिलोमीना

यह है दुलियोंका बछोर परिवार और यह है उस परिवारकी स्वास्ती
 जिसके बलिदानकी अपनी अनन्य धरानके फूल बेटे हुए बमापाने अपाहिजोंने
 समीने एक स्वरमे पुकारा 'सिस्टर ।



चित्र मूर्ति वास्तु-वास्तव या स्थापत्य कलाबाके द्वारा अथवा सम्यग्-सूत्रियों
 का निर्माण किया है। प्रथम उत्साहकी अवस्थामें मंदिरगत शोभन और प्रथम स्तोत्र
 प्रथम मंगीठ पूजा को प्रथम यज्ञकाल-नृत्य जन्मा को प्रथम पुष्प
 अथवा तिल हुमा को प्रथम रेखा मुष्प-द्वारपर अंकित हुई, जो प्रथम पुष्प
 मनुष्यके लिए निर्मित हुई उन सबमें इसी कामचक्रिकी उत्तमता व्याप्त
 थी। विश्व संस्कृति साक्षी है कि संसारका सर्वोत्तम मंगीठ काम्य चित्र
 मूर्ति वास्तु-सिन्धु इसी कामचक्रिकी प्रेरणाकी ही रेखा है। यही कामचक्रिकी
 चित्रका शाब्दिक है पावतीका वास्तव है, बेवनी का वास्तव है रोम है रोम है
 यही मन्दिरोंके समग्रहमें स्थापित मूर्ति है, यजन्ता एकाएक मुक्तेस्वर
 का मुष्प-होके प्रस्तर इसीकी अचिन्त्य लीलाको उत्कीर्ण किन्ने है वास्तव
 इसीकी प्रतिष्ठा है, पिरामिड इसीकी नाचा है रोम कीट अथवा केके
 मन्मात्रोपे इसीके प्रभाव है वानवेनकी रापनिवोमें विठोवीनकी कलामें
 इसीका स्वर है।

किन्तु उत्तरी दक्षिण सिद्ध उत्पत्तिका ही नहीं जन्मोपायी भी होती है।
 कामचक्रिकी निम्न उद्देश्यमें प्रेरित होकर वास्तव बनती है, अथवा अस्मिता
 साहित्य बनती है मोम सुरा बन जाता है, मन्दिर बनने और बेस्मात्माके
 रूप प्रद्वार कर देते हैं। यह काम उत्पत्तिका प्रथमके आसक्तते पिरकर
 दौर्भाग्य ममापति म संकुचित हो जाता है स्पृष्ट होकर विकृतिको प्राप्त
 होता है तब इने काम नहीं 'अधीन काम' या बौद्ध परिभाषामें 'विच्छा
 वार' रहते हैं। तब इसकी प्रक्रियामें उत्साह नहीं भय होता है राप
 नहीं रोग होता है, मुक्ति नहीं बन्पन होता है उत्पन्न नहीं फल हाता
 है। हमारी संस्कृतिके इतिहासमें एक एता ही काल आया था जब पुष्प-द्वार
 अब भय था। उस समय हमने पबडाकर अपने फलमें स्थापित
 होकर संसारको अनिरय बना कामको तारे बन्पनका कारण कहा। राप
 गुष्पा मुष्पा परिवाह पिपाया हमके रूप बनावे मने। सबने इगना
 विरोध किया लभीने काम गुष्पाके विनायका उपदेश दिया। मूल प्रक्रिया

शिल्पीका संग्रह

ब्रह्ममें वासना (सेक्स) का। ऊपर उठनेपर बौद्धिक बरतकर यही
 इच्छाशक्ति (विक्रम पावर) और वाष्पारिक्त-ब्रह्ममें अपने ऊपर पूर्ण
 नियंत्रण करके पूष शान्ति आनन्द अथवा मुक्तिका मास बन जाती है।
 प्राप्त मन बुद्धि और प्रज्ञाके ये चार स्तर कामशक्तिके चार बीजाक्षेत्र हैं।
 प्राणके लिए अन्न मनके लिए वासना बुद्धिके लिए इच्छा और प्रज्ञाके लिए
 बालत्वका योग पुमिधार है। कामशक्तिकी ऊष्ममुष्मी मात्रा इसी चारों
 क्षणोंका एकके-बाद-एक शोषन है। जिस व्यक्तिके पाठ पितनी बड़ी
 मूक है वासना है, इच्छा है आनन्द-कामना है, वह उठना ही अधिक
 शक्तिसम्पन्न है किन्तु यह शक्ति सम्पत्क संक्रम्य और महत् जड़स्वये परि
 वाहित होनेपर ही पीकके मास-ब्रह्ममें पूर्णकाम आत्माका अकारण कर
 सकती है। उल्ल जड़स्व या लुप्त जाणांसारै इस उठने ही बेबसे अशोमुष्मी
 भी बना सकती है।

कामशक्तिके चारों स्तरोंपर उसकी ऊष्ममुष्मी साधनका मात्र है
 ब्रह्मस्य। प्रायेक प्रक्रियामें अर्हका नियंत्रण। वैसे कि पी अरनिश्व कष्टे है
 'वासना (Desire) दिव्यजीवनके सिद्धान्तकी क्रियाशक्ति है जो व्यक्तिमें
 आत्मनिष्ठ बनाती है। इसे जब 'इच्छा' के नामपर सुष्ठानका अर्थ है
 दिव्य जीवनकी प्रक्रियाको सुष्ठाना। इच्छा या वासनाका तिरोधान ठमी
 होया जब वह अनन्त सत्ताकी इच्छा बन जायेगी और जब वह उन
 अनन्त सर्वनिष्ठ आनन्दमें अपनी शास्वत अनन्त पूषकामताको प्राप्त कर
 लेगी। तबतक निचले स्तरकी बुमुसासे लेकर उपले स्तरकी आनन्दपूर्ण
 पूषकामता तक पारस्परिक सहयोग और उत्तरके बलपर इसे बधि
 देना होया एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिको निम्न उष्मको उष्म निम्नको
 मनुष्य ईश्वरको और ईश्वर मनुष्यको अपना सर्वस्व देता है ताकि प्रत्येक
 दूसरेके द्वारा पूषकाम बन सके। बुमुसाका प्रथम विधेयका सम्भवमें
 मृत्युका अकृतमें लय हो जाना चाहिए क्योंकि यही मृष्टिके मूष्में निहित
 वासना अथवा कामशक्तिकी मास है यही इसकी साधकता है और बड़ी

१९२५-२६ की रिपोर्टमें स्पष्ट संकेत दिया है कि कुटुम्बजीवाकी प्राचीन-तम मूर्तियाँ नौवर्षन-भारतकी हैं। एक मधुरामे मिली है दूसरी महाबलि-पुरम्मे जो दोनों चौबी घाटीके पूर्वकी है। नौवर्षन-बुजा हमारे ताबनाके इतिहासका अन्तिकारी मोड़ है, नमपूजाके स्वातन्त्र प्रीतिपूजा। इन वर्षों इन्द्रकी पूजा करें जो अपने बखपाठसे हमें निरन्तर संवस्त करता है। हम उसके स्वातन्त्र बोकुम्बको बाध देनेवाके नयसकारी यौववर्तकी वर्षों न पूजे और तब जामा अष्टकूट। भूक और अन्न। मय और प्रीति। इन्द्र और अन्नकूट। सम्पूज बोकुम्ब एक बिण्डु कुटुम्बमें बरक मया सभी परिवारोंका जैसे एकीकरण हो गया। माञ्जरीकी इती आत्मविस्तारका सरस रूप है। इसी आत्मविस्तारने कालिय दमन इन्द्रमान मोचन बत्सामुर बुक-सुर बेनुकानुर-अप मुंजाप्रीके दामानकी दान्तिकी मदी कबाएँ अर्पित की। यह अन्न बुग्म और जलपर हीनेवाके उत्पातोंपर विजयका पाल है। अद्यय कौशमें सबनयस महाबलिके प्रचरणकी आनीकिक थापा।

रात मनामम कौशमें वासनाकी अम्पना है, बन्धन-अर्पित अल्पना जिसकी रेखाएँ एक ओर सौन्दर्यको मूर्त करती हैं तो दूसरी ओर अल्पके अल्पस नृत्नका संशोभन। राम नाटी और पुष्पके महाभक्तिकका विरट् पर्व है। प्राग और रथिकी अल्प अपूर्ण प्रथम अल्पना है। मृष्टिके अल्प-अल्प प्रथमान बुम्बकीय मिबुनसक्तिका यह महाकाव्य है, जितमें अल्प विष्य अल्प और अल्पका भावलेख मूर्तमान् हो उठा है। कामबासनाका अल्पन हो रूपीमें अल्प है। उसे सौन्दर्यविपायिनी कल्पामे सभिक्षित कर्के भाव परिवर्तन (Transformation)-द्वारा अथवा उसके अल्पक सामाजिक प्रकाश-द्वारा। कामबासनाकी अल्पना मय परवा प्रथाके चारण तरह तरहमें विस्तृत हुआ करता है। ई उद० के 'गाल्म आम् इदरकुड'में नै एव कुम्बिका दुडे एव दुमारो' टीपिक एक मिबन्ध है जिसमें अल्पने किया है कि जिस ममात्रमें अल्पना अर्थिक परवा है, अल्प अल्पानेवा रिवाज है जगमें कामबासना अल्पनी ही प्रथम है। बीदिपाके कल्पिबीपात्र जो प्राग अल्प

सम्मुख भी थी समस्याएँ बढ़ी थीं। उन सबमें उन्होंने इतनी कुशलतासे धरना कर्तव्य पूरा किया कि वे मीनैस्वरके मामले विख्यात हो गये। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि क्लेश-खींचते विमुख होकर मनके अग्र श्लोकमें अड़ीमूठ हो जाना योग नहीं है 'योग-कर्ममु-कीदरम्'। इसी कारण महाभारतको भी उनके बीचमध्य तीसरा मोड़ मानता हूँ। अर्थात् बुद्धिके अथवा ज्ञानमय कोषमें महाधर्मिका विकास होता है। यही अन्तर काय धर्मिके सभी दिग्गज आत्मज्ञान बुधकामताके समुद्रमें विखिल हो जाते हैं। कृष्णने अपने बीचके इतने अंशके अनुभवोंके निबोधको एक श्लोकमें यों रख दिया

आपूर्वमात्रमन्त्रप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति बद्धत् ।

तद्भक्तमा भं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति स कर्मकर्मि ॥

(गीता २।७०)

घातों औरके प्रबाहोंके अन्तरे भी जिस समुद्रकी अर्थात् अंग नहीं होती ऐसे समुद्रमें जिस प्रकार सब प्रकारका धम समा जाता है वैसे ही जिस व्यक्तिके चित्तमें सभी प्रकारके विषय अस्वीकार्य-अथवा जिसे जिना ही प्रवेश करते हैं वही धर्मिको प्राप्त करता है।

महाभारत कृष्णकी इसी धर्मिक-आत्मताका कमलेश है, जहाँ उन्होंने अपने धर्मिको सभी प्रकारके आत्मधर्मोंके समुद्र रख दिया धर्म गरी उद्योग। क्यों? ऐसा धर्मिक ऐसा विश्वास उनके चित्तमें अर्थात् आया? यह विश्वास और यह धर्मिक अर्थमूर्खी प्रथमने प्रदान की जो उनके बीचमध्य अर्थक कर्म बन सका। और यह सब कुछ उन्होंने विश्वमात्रताको अपना काय समझ कर दिया जो अर्थकर्मके लिए अर्थकर्मकी आवश्यकता है।

सभी प्रकारके अर्थकर्मके भीतर अपने कर्तव्यको पूरा करनेके बाद 'धारक-निवास' समुद्रके बीच अर्थकर्मके भीतर, पर अर्थकर्मके परकी स्थिति उनके बीचमध्य अर्थकर्म स्थिति है। धारका कृष्णकी स्थितिप्रवृत्ताका आधान है वहाँके सभी काय जैसे एक ऐसे धर्मिक-आद्य होते रहने हैं जिनमें न

गन्धने कपाविन संया मही है न आपकी काशी महाकात्मक त्रिसुखर
 स्थित पुष्प तयरी !”

महर्षी नरककालोकी टकराहटकी तरह जातया कर छत्यामूर्ति मृ
 हास कर उठी । लम्बे-लम्बे कुर्चोनि मरे ओठोमे जनमनाली बह हूँसी बकु
 देर तक दममान-तटपर टकराती रही ।

‘अपरसं बेजनेपर काशी ऐसी ही लगेसी जैसे तुमने उठे देखा है
 पर काशी इट पत्थरोमे इके बर्जर त्रीण तगरका नाम बहूँ है । काशी पर
 प्रकाशका आधार है जो इस कज्जल-बसन्तित बुमाच्छत्र बाजूरी कापार
 आराम्य आम्ता रहता है । काशी भारतीय इतिहासका मूल रूप है नर्म
 विभिन्न सम्प्रदायोमे अन्तराबसम्बन्धी पापाय-कथा है । काशी भारतीय
 मनीषाकी प्रत्यक्षरूपा है, कापो सुमप्रबलक अज्ञानापुरणका मलय-मन्त्र
 है । इसे बाइबल गद्दी प्रमाणमे नहीं तिरस्कारते नहीं प्रीठरते बउने
 प्रेमसे देखो तां मह काशी तुम्हारे सामने अपना मोफनीय रहस्य प्रकट कर देवी
 जो मत्स्या बपोनि इमारी मानकथाकी मनोरम छवियोंको संजोती रही है—’

‘मत्र अर्णोपर कृपालु हौं महानैरय कुतर्कमे पीवित हृदयमे विस्वास
 की आमा तुम्हारी कृपाल ही पकट हो सकती है । महाकात्म्य अयुष्म
 धनि-उजोतिव चक्राचीव नेव तुम्हारी कृपा-भूटिमे ही उन्मीलित हो
 सकते हैं ।

छत्यामूर्ति ओंवेदेमे विकीर हो बरी । काशी रात्रिकी कात्तियामे क्वा-
 की बुभिक धारा नन्बर बठिमे बह रही थी । मुझे लया जैसे नमठल्लर
 बहती बह उबसी बाप इच्छामुली होकर एरु बारबरीं जितिमात्रकी ठर
 मचल हो घरी है । उष धूपवि परदेपर बई तरछनी बानुतिवा उभर रही
 थी । मृपचम अटाभूट ममिषा पत्र सोम जागेट । नमचठ कष्टने छटी
 हूँ प्बनिवा नकमुत उपस मधु । पाबिच रजः मधुमत् । बला मधु
 अगावने । मिन्धवः मधु छरनि । म अोपधीः माप्यीः सन्तु’ उषा नपुर है,
 बुधिरुव मपुर है पवन नपुर मठिमे बह रहा है । गरिवां बबुका आव कर

सदी है उसी प्रकार तुम्हारा व्यवहार भी । यद्यपि उपस्थित बाध्य
वातावरण प्रतिवाद करनेके लिये सखीव मामले उठे पर अजातशत्रुने उसके
समझाकर धात कर दिया ।

अपराध क्षमा करें ब्रह्मन्, आपने अपनी उपस्थितिसे अजातशत्रुने
छुटाव किया है । आज्ञा करे जाय अजातशत्रु आपके सम्मानके लिये सब
प्रकारसे समुचित है ।

'राजन्, मैं तुम्हारे लिये बह्यतत्त्वका उपदेश करूँगा । पुत्र नेर्बोत
मनायत् विद्यागोपी ओर देखते हुए पाप्य वातावरणमें ब्रह्म ।

'छुटाव हुआ ब्रह्मन् आपने अतकक समान ही मेरा भी गौरव बना
मैं आपको एक महसस पीरें प्रदान करता हूँ और आपका उपदेश सुनने
लिये समुचित हूँ ।

इतना सुनकर अहं-विस्मयित गर्भसे यमा-गण्डतोको तुमस्य समस्तता
पाप्य वातावरणमें राजन्, यह जो मूकमण्डलमें अन्तर्गामी पुत्र है,
मैं इसीकी ब्रह्मबुद्धिसे उपासना करता हूँ ।

'मही नहीं आप उसकी कर्षा न करें वह तो सभी भूतोंका अस्तक
और दीप्तवान् पुत्र है । उसकी उपासनासे मनुष्य दीप्तिमान् बनता है, यह
ब्रह्म नहीं है ।

'तो वह जो मूकमण्डलका प्रभावान् पुत्र है वही ब्रह्म है ।"
'मही नहीं ब्रह्मन्, वह तो अस्वस्थितिकी स्वामी कर्षा है वह, ब्रह्म
नहीं है ।

तो वह जो मेषमण्डलमें अन्तर्गामी पुत्र है वही ब्रह्म है ।

'मही नहीं वह तो घण्टकी कर्षा है ब्रह्म नहीं है ।

'तो वह जो मल्लमण्डलमें अन्तर्गामी पुत्र है वही ब्रह्म है ।"

'मही ब्रह्मन् वह तो यज्ञका देवता है वह ब्रह्म नहीं है ।

ब्रह्मज्ञानुक्त पाप्य पुत्र हो गया । उसके लक्ष स्वामिनि उसक हृदयकी
आत्ममण्डित बीजयस्त्री माता मूलकर घूमिस हो गयी । उसन सज्जसमें बरदन

उत्सिच सगमतिहृत्सु सुदारुणन्त
 धावन्ति बोजन पर्व युलि मासवन्तौ ।
 इदी भिस्तस्ता मनो जितथा मुनिन्दो
 तं तेजसा भवतु ते जयमङ्गलानि ॥

कमकाष्ठकी बिभीषिकाजसे प्रजा बाहि-बाहि कर उठी । मूक परबुजो-
 के रक्तसे मानवताका भापन नील-सोहित हो गया । नीच-ऊँचके विभेदसे
 हमारे विवेकको कुहासा भर दिया । हमके विध्या बार-बर्फम प्रजा उलझ
 गयी । धर्मनिष्ठ अंगुलिमातकी तरह गर-कंकालकी भासा पहनकर कगुर्किफ
 जातक उत्पन्न करने लगे । माया-मोह और स्वार्थकी मार-मेला गहमो
 करोमें आनुष सेकर नीति और मर्यादा निरस्तैद करने लगी । पम्माके
 आत्माबसे पम्पुपठिका आसन डोल उठा । महाकात्त्या विमूल दोलायमान
 हो उठ्य । और तब जिसने बैर पूजा जुजुप्सा विचांठा हिठा और ऊरठा
 को अपगी मंत्री करवा नम्रता दया और अहिमाये उपसमित कर दिया
 वे ही मुनीन्द्र मुन्हाय मंगल करें --

“कौन कहता है कि इधने उरबेलाके बोधिवृक्षके नीचे ज्ञानकी प्राप्ति
 की है? तपस्वयकि बीच अनित्य शरीरकी रक्षाके लोभम जिनने अन्न बहन
 किया वह तपस्वी नहीं हो सकता । संसारके अन्न जनाको भ्रममें डालकर
 यह महात्मा भ्रमे बत बैठे ब्रह्मवादी पण्डितोंको यह कमी भी टम नहीं
 सकता । पुछो पुछो इस शास्त्रपुत्र सिद्धांतसे कि क्या इनने ब्रह्मका साधा-
 ल्यार किया है?” ब्रह्मवादी कमकाष्ठी सभी एक हाथर बामुजके
 लिए बुडको लम्कारने लगे ।

सुनो सुनो मत्ताकी यानिसे उत्पन्न होनेवाले प्रत्यक अणुको र्म
 ब्राह्मण नहीं मानता है । ब्राह्मण वह है जो लोमहीन और अरिष्टही है ।
 न जटाने न मोचन न जम्भन ब्राह्मण ब्राह्मण होता है विगम सत्य है
 गुणित है वही ब्राह्मण ब्राह्मण है ।

‘यह सब प्रत्याप सुनने हम नहीं गही जामे । जवतक तू यह मतो

शिवरौका मरु

टिड्डी दलकी तरह जलरापके विरि-संकेतोंसे घस्ता बनाती घस्य-व्यामना भारतभूमिपर टूट पड़ी। बबर हुषोंके आक्रमणसे मजुरा तकके प्रदेश पहले ही धमक्य भार हो चुके थे। बैकिरा और अजयपुरिस्थानके मय राय्य हठेमे इन बिनाघकारियोंकी मुरंत माथा बाज भी अंकित है।¹ हुषोंके बाद निरन्तर आक्रमणोंका क्रम जारी रहा। छटी बर्तीमें बरबने मित्त मने धर्मका उदय हुआ यह वैयक्तिक स्वतन्त्रतामें गड़ी बलभूषक धर्म-परिवर्तनमें विश्वास करता था। मुहम्मदकी शारीफा सौह-वचार निघाने-हतामने राय परिचयमे युरोप और पूर्वमें भारतकी और ब्रह्मसर हुआ। बर्बर ठेकार्ण हाथम अह्य और अकली उम्कार्ण सेकर उत्तर भारतमे फैलने लगीं।

अधर्मभूली आहुषीके मित्तियात्रमे यह सब कुछ बीते दिनकी घटना विभावलीकी तरह उभरता था। कालीका बादि किन्नेस्वर मन्विर टूट चुका था। बुधधिमनकी विद्व विवेचिबोंका प्रिच-वृषण बन गयी। धर्मके नामपर हिन्दू और मुसलमानोंका संघर्ष रचलेबने निरन्तर तय-बौधकी गतिमें एक भा गया। काशीका सन्त बाठावरण धर्मधर्म कल्पित भूमय सर गया। मनुष्यकी सेवा अन्ति प्रतिमाका कोई मूस्य न था। परिष्ठी और मीकविमनि मिष्ठा कर्मकाण्डके धेरेमें अकड़का दुःखी और वीन जनताको पीसता घुक् कर दिया।

कवच कैवल प्रकाशिका उम्बा निर्मल सुर।
 निसि श्रीधिवारीमिट गमी बाजे अनहृद पूर ॥
 कधीर बादल प्रेम का हम पे बरसा आइ।
 अंतरि मीगी आत्मा, हरी मई बनराइ ॥
 कधीर गुरु गले मित्नी, रहि गये अँटे लाय।
 वाति पँसि कुल सय मिटा नौष धराये छय ॥

1 Messias और Bethood के शौर्यम जता चलता है कि पँबनी छातीमे इसकी तज किस प्रकार स्वयसे मजुरा तक हुषोंकी बबर सेवा अन्तिकारणत रूपमा मन्वोविनाइ करवा रही है।

लाभमें कोई भी ऐसा न बचा जो सचमुचे ऊपर तिर निकाल मने जो
सहृदयोंके गर्जन-ध्वनको बरु मूहुटिगे देख सके। पर उन महामुद्रम
प्रताप ब्रह्मके पूम्पकी तरह खिने रहे। दुरसाजीके सम्बन्धमें

अकबर समैद अबाह तिहँ हूबा हिन्दू तरक।

मेवाडी तिह माहि पोकण फूल प्रतापसी ॥

अकबरिसे इक बार, दागल की सारी दुनी ॥

अणदागल असवार, रहिबो राण प्रतापसी ॥

मुसहित स्वास समाज, हिन्दू अकबर वस हूभा।

रोसीसो मूगराज पजे न राण प्रतापसी ॥

प्रतापकी बेशमक्ति त्याप सहनभीकटा भी मुमुपु बेशमे नव रतवका
संभार न कर सकी क्योंकि सौतोंको विस्वास ही नहीं होता था कि इतनी

बड़ी दुर्बल साम्राज्य-मत्ताके बिच्छू भावतहीन महाबहीन प्रताप कुछ कर
पायेंगे। तो क्या हम ऐसे संकटके समय हाथपर-हाथ गल बैठ जाता

बाहिए? क्या हमें अपनी राजसत्त्वकी अखरबकी मौल भावसे मह जाना
होमा? क्या त्याप और त्यापकी कमी विश्रम न होगी? क्या सामारिक

बैरम और साठीरिक शक्तिके बलपर हमेमा कत्पाबाठीकी ही जीठ होखी
रहेगी—ये प्रश्न थे उन बोर तमिस्रानुस महाराजिके जिसे बीरकर बाघीमें

एक नयी ब्योठि इन प्रश्नोंका समाधान लेकर उपस्थित हुई

बाड़े लल बहु बोर जुभारा।

जे सम्यट पर घन पर दारा ॥

मानहि मातु पिता नहि देवा।

साधुन सन करबाबहि सेना ॥

जिन्ह के सह आचरन मयानी ॥

ते जानहु निशिचर सम शानी ॥

अतिसम देखि परम की ग्लानो।

परम समति धरा अकृतानी ॥

इमझान

सनभूनाकी तरह काके घटीरपर अबजस्यी लकड़ियोंकी तरह एंटे हुए
 स्टंफिड बाल इराजने बीमलस मुझम बिठाकी साक सपसपाटी कपटकी तरह
 रकतवर्षी जीम बस्ये बल्ल वीरोंकी तसे बौल्यी जैसे हृदिका बिट्य रही
 हों—यही हूँ मैं। मैं बानी समसाग जिसे एक सभ नामने बड़ा देस तुम्हाटे
 जाँके लप जाली हूँ रोंस्टे बड़े हो जाते हूँ। घटीरसे पसीना छूटने लमता है
 मगर क्यों ? ऐसा ही ना तो फिर बगाबा क्यों मेरा नाम क्यों पूछा मुने
 छोडा किटकिट ? हबारों मालस तबेकी तरह कामी इस सकत छतोंमें बह
 बाग छिपाये हूँ जिसमें पहाड़ गिरें तो बसकर ताक बन जायें किन्तु मैंने
 क्या कमी उठ तक की ? राह चलतेको देस कमी तुमका मुनातेकी बी-
 ल्यासी या हाव पमारकर कमी बयाकी भीय माँसी ? बिपद्यताको चेहरेपर
 उमारकर तुम्हानुमुखिके लिए सोली मैंने नहीं कँसाबी— "कमी नहीं बह
 तो तुम करते हो"—तुम यानी आदमी यानी इनसान। जिन अपनी इरबत
 पर सब है, बड़प्पनका मोह है, जो अपनेको ममार मरका निवामक मानना
 है और जो मेरी इस छातोकी मयातक जगतमें सूखे तिमकेन्डी तरह जम-
 कर बुक हो जाता है। लेकिन तुमो इरो नहीं मेरे पास आओ। एक बार
 मुझे नजबीकसे देखो उस आँकमें जिसमें तुम अपने बड़े बापको देखते हो
 या जन्म देनेवाली माँको देखते हो। बिरबान मानो मैं सब कहवा हूँ भीतर
 में तबको तरह चलनेवाली यह छतों तुम्हें शीतल मालम होयी—एकदम
 शीतल आँकी पीरकी तरह बाकें और लोरियामें भरि हुईं। हाँ टीक
 जम पीपलकी जदमें बैठ जाओ। अरे नहीं बह मूलाके कँकाजानी आवाज
 ही है, वे तो उम बुरे पीपलके पत्ते हिल रहे हैं। ऊपर नग बैराते हा ?

स्मरण

लंबमूसाकी तरह काठे सरीरपर अबजली स्फुटिमौकी तरह एंटे हूँ
 कंटकित बाल डराने बीमत्स मुझम पिठाकी काठ लपकपाठी लपटकी तरह
 रक्तवर्षी बीम बकते बकत वैरोंकी गर्से बीमत्ती वीस हृदयियां चिटख रही
 हूँ—यही हूँ मैं। मैं बानी स्मरण जिसे एक लक्ष सामने बड़ा देख तुम्हारी
 बाँधें लप जाती हैं रोंपटे बड़े हो जाते हैं शरीरसे पमीना छूटने लगता है -
 मपर क्यों ? ऐसा ही ना तो फिर बगाना क्यों मेरा नाम क्यों पूछा मुझे
 छोडा किसलिए ? इबारों छालस लबेकी तरह काली इन सन्त छतोमें बह
 बाय छिपाने हूँ जिसमें पड़ाइ विरें तो जलकर जाऊ बन जायें किन्तु मैं
 क्या करी उऊ तक की ? राह बकतेको देख करी दुमड़ा मुतानेकी बीर
 लगामी या हाथ पसारकर करी बपाठी मौख मानी ? विपन्नताको चेदरेपर
 उमारकर छहानुमुठिके लिए लोकी मैंने नहीं पैलानी----- करी नहीं यह
 तो तुम करते हो—तुम मानी जादमी मानी इनघाल । जिन अपनी हरमत
 पर बर्न है बड़प्पलका मोड़ है, जो अपनेको मंभार भरका नियामक मानता
 है और जो येरी इन छातोकी मयानक ज्वालास मुझे तिनकेकी तरह जल-
 कर बूझ हो जाता है । लेकिन तुमो डरो नहीं येरे पल जाओ । एक बार
 मुझे गडवीकते देखो उस बाँधते जिनसे तुम अपने बूडे बापठो देखने हो
 या जग्य देनेवाली माँकी देखते हो । बिस्वाम मानो मैं सब कहता हूँ और
 मैं लबेकी तरह जलनेवाली यह छात्रो तुम्हें भोवत मालम हीनी—एकरम
 चीतल माँकी पीरकी तरह बकती और लोरिबाने मरी हुई । हाँ टीक
 उस पीपलकी जड़में बैठ जाओ । अरे नहीं यह मुठिके कंकालकी आबाज
 नहीं है, वे तो उस नूते पीपलके पल दिक रहे हैं । अरर बग देतते हो ?

आशाका प्राप्त करनेके लिए तैयार हो जाती 'आश्चर्य कर रहे हो ?
 सोचते होयें क्या असूत मन्त्र-शक्ति है, मरेको बिना सम्झनेकी कौसी शक्त
 है तुम्हारी जातिमें यही न किन्तु यह सब बकवास है । तुमने अपने
 आत्मीके मरगको बात तो जानकर सुनी होगी फिर भयको जीतकर असूत
 शक्ति प्राप्त करनेमें आश्चर्य क्यों ? केवल इच्छाशक्ति है यह जिसे
 प्रकृतिको विविध करके कोई भी पा सकता है किन्तु तुम्हारी जातिके वे
 महामन्त्रिजालो कापासिक पसुधे भी बुरे थे । उनही साधना फलका साधन
 की । सुन्दरियोका अपहरण प्रतिद्वन्द्वी यसस्वी कापासिककी हत्या बनवा-
 अपनी शक्तिजा आर्तक ईशानके लिए जितनी निर्दोष बालककी बलि यही
 इन सबके काम थे । एक दिन विविध प्रकृतिमें उनमें बहसा जिना । मुररे
 को ठग्यमूर्खी बनानेवाले ये इच्छावादी कापासिक शीतिल काशकी शपथ
 जवोमुखी हो गये । लँर छोड़ो भी यह सब जाने मैं क्यों तुम्ह बीते दिन
 की बातें बताग ल्या । वह सब तो पूरा पोका है कहने लपू तो अन्त न
 मिले । फिर जिसे इतना बकवास है आज कि पुत्रने जमानेकी बातें सुनकर
 बहत पाया करे । पर कहे क्या ? वह याद ही ऐसी है कि हृदयको कँपा
 जाती है केवल एक ठगीके लिए तारे जरीठको जयापा करता हूँ । सोचता
 हूँ कहीं निजमकी बैठका वह हीरा न प्ये जाये । समयकी काई उष छेने
 को बँक न ले । मुता वह राजा वा उसके अस्वमेवके बीरोकी सुमसे छापी
 पूष्पी मुशकित हो चुकी थी । मायकी विदम्बना ही बहो इसे पर मैं तो
 इसे अपनी क्रिस्मतीकी जीत कहता हूँ । वह दिन राठ मेरे पास रहने ल्या
 राजा समघानका पहरेदार हो गया । एक दिन उसकी रानी अपने इच्छतीं
 बैठेकी लाय छिमे इसी बगह आयी थी चरुमतीके बैठेके बदनपर पुत्र कञ्ज
 भी न था । पतिको देख रानी कूट-कूट कर रो लटी 'नाथ'
 'यह भ्रम है देखी मैं तुम्हारा नाथ नहीं इस समघानका पहरेदार
 हूँ---- वह बोया नियमके मुवाबिक तुम्हारे लङ्गेके कञ्जका एक
 हिस्सा---- वह जाने न बोळ सया परदन लुका थी ।

उसके खोखले मैने अपने खोखली तरह समझा है। उसके बाह्य मनको सहसाया है। उसके आँसुओंकी मोठीकी तरह संजोया है। तुम क्या समझते हो कि नि सहाय विषयके इकलौते बेटेकी अकाल मृत्युपर मुझे कुछ नहीं होता ? कभी चिताकी राखपर सवे गिर झुंते देख मेरा रोक-रोम धबके मारे काँप उठता है। कभी ब्याही पत्नीकी मृत्युपर बार-बार आँसू बहते नौजवानके दुःखको मैं समझता हूँ। सड़कपर पड़े बाने-बानेके मुहताब अपाहिब मिठमंकेकी लगी काँचको प्रवी फक जस्टे साबारित लामको सियार कुत्त खीच-खीचकर मोकते वह सब कुछ देखता हूँ। सामाजिक नर्बासाकी रजाके लिए, बिन ब्याही बेटेके खबरार बापकी आत्महत्याकी बहानियाँ मूतता हूँ। बापको तकलीफोंसे मुक्त करनेके लिए रस्तीमें लटक जानेवाली बटीकी काँच भी मूत आमानेके पाम ही जाती है।

'कमी-कमी लमे भी मौक आता है जब मुझे नहीं मालूम होता कि रौड या हंसू। सारी सम्पत्तिके लौभय अपने स्वर्गीय भाईके एक मात्र किनार पुत्रकी बहुर निकालेवाला छोटा भाई एसा दयनीय चेहरा बनाने आता है, जैसे घटीजेके मरनेक दुःखको सह न सकेना। चिन्ता-चिन्तापर मयबान्को कोसता है। भाईकी छीन लिया अब इस छोटी निघानीको भी छीनकर तुझे क्या मिला ? तू इतना निर्दयी कबसे हो गया ? वह अपनी छाती पीटकर कठोसे बना बैठा है। बाल नाचकर संभानी बन जाता बहुर है। अपनी कम सुन्दर या असुन्दर बीबीका यका पीटकर कभी सारीको इच्छुक बुचक मृत सरीरको कबेपर लाने आँसुओंकी पंगु जमड़ाने समझता है। अपने अल्प्य प्रसका इन्हार देकर सारी दुनियाको अपने घोफ्टे अधिभूत कर देता है। लम्पर गिर पीट-पीट कर अछेँ धोसता है। कभी चिताकी राखको आँसुओंमें मिबो देता है। अकर्मण्य प्रीङ अपने बच्चोंकी जिन्दगी मुबारकके लिए, इममारेणवाकोंको घोला देकर आत्महत्या कर लेता है। वह सब तुम्हारी जाति ही करती है। तुम्हारी सर्वश्रेष्ठ जाति। किन्तु इन सबोंको मैं नाबीब मूत का डरपोक समझकर धमा कर देता हूँ।

तरह हँकता या बिना बैठके बिपुकी तरह पवित्र और निरुद्ध ।
 उनके लिए सब बराबर था यम-अपमान यदा-अपयय । तुम्हें उसे
 गौरी मार भी थी 'बपाकि तुम तसकि सत्यमें डरते थे क्योंकि उसकी
 मामूम आँसे मदा तुम्हारे हृदयमें छिने कासिकको चुरती रहती थी—
 उनको चिन्ता भी बसी थी । मैं इस घदका भी साक्षी हूँ तुम्हारी
 आतिफ उन मनुष्यकी हृदियों और यम-अके फूलोंक लिए मेरी जातिमें
 होइ लय गयी थी 'उनकी चिन्ताके शब्द फूल ही तो मुझे मिले थे जो
 उन शक्रकर्ती राजाकी कहानीकी तरह पवित्र है । सब कहता हूँ, उस दिन
 मझ ऐसा लगा कि मृत्यु किसी कृतीक जीवनका अन्त नहीं होती । वह
 दिन तो उनके मरसनी जीवनका अन्तदिन था इनकी नीतिके विस्तार
 का नया दिन ।

'तुम्हारी आति न केवल अपने भीतर ही टुकड़े-टुकड़ेमें बँटी है बल्कि
 समस्त मनु आकषणकी इन कड़ी छतोंकी भी बेरोमें बाँट दिया है यहाँ
 केवल राजाके घब बनेंवे पण्डितके अस्त्रिकक । महाँ धुरके यहाँ इसके
 बहाँ उनके । सब कहता हूँ यह सब बैरकर बीये होता है एक समी
 करबट ल त्रिसमें जिन्ने लीय घबकी तरह सहयकर विर उठें । वे
 विक्रम धुत्र हृदयके जीव त्रिगुं अपनी पीटीके समान बुद्धिपर इतना लभ है ।
 सोयेकी तरह अपनी कावाको उठाये रोगको ही बुद्धिमाली बहूते है ।
 न ही वे अमम कुछ पाते हैं न मृत्युने लीपाते है । राजाकोके सब देये है
 तुम्हें । अब तो और बड़ धान ही बहाँ रह्यी फिर भी । काठकी लम्बी
 मंडूपा माने चाँदीके जड़ी हुई, ऊपर बेघकीमती पीठाम्बरका अम्बर
 हजार। बाकार् । मनुके कुँसे यतिगंमें बाइय छा भाते । घानकी पीठों-
 क माब दरबे-वीमे लेमे सुनारे जाते जाती आबने छँधारमें बीमला ही न
 रहेबी । सडके त्रिगुंके होय मेहतर मंकी आदि हजारेकी संज्ञान
 मनुमस्तिपीकी तरह बननगते बुद्धीकी तरह सोइते छात्र मूय ल
 त्रिगुंके बीबी चारों तालकर वे पीछीकी बग्यामें मनुजय यद बटोरते

लाल झमारतोंका नगर

बिरहिणी मारकीने सावनक दिनमें काले बादलोंकी छाँहमें सोयी हुयी हरी नीली घग्गी और धर-धरमें आनन्दोत्सव मनायी घायीन बुद्धिबोंको देन कर कहा बा कि माऊ हैस सावनमे ही सबसे अधिक सुखाना मसूम हाता है

धर नीली, धन दूपरी धरि गहगहरी गमारि ।
माऊदेस सुखामण्ड सावन सामीदार ॥

किन्तु उस सुखान सावनमे उस हरागायी बिरह-दग्धाका 'मासीदार' न आया मसी तीसै पीठमे इहिकों तकको कौपा देनेवाली बे रामे तिनकी पीठतगाते अकार नीके समुद्रोंके नीतर क्सेठ सद तीर्थिकाके सम्पुटमे पड़ी हुई स्वाति-बूँदें तक जम कर मीठी हो जाती हैं। माप चाहें बिरहिणी मारकीके इस वरसे एक बार नी म सिहरें किन्तु सीप समुद्र स्वाति-बूँद और मोठीके समाममे तो कौप अकस्य ही जायेंगे। ऐसी ही गलोंमे उम बरि मपन कोमापकी मुरछाम समेइ हो यवा ती म्वा आ-वर्म ?

जिणि रितु मोनी नोपबइ सीप समुद्रों भौंहि ।
निथ रितु डोला आवेउ, इम कीमार न जाइ ॥

कामना मुबरा अतुर्पें बयलीं रात्रबाई बने-जिगड़े दुनिया मरिसे बाब और मरकते मरि हुँ पर माऊदेसकी मे सुधारमच्छित रात्रें तनिक भी कमी-बैतीका स्वीकार न कर रही। और माऊके पन प्रदर्शनको क्या कहें जिगमे इन भबंकर अतुमे सुबह छाड़े-तीन बजे मुझे जपपूरके जंघन-पर उतार दिया। आतरामे आनेवाली इन पाटीयें रास्ते-भर बन्ध दिवने और उनाछम भरे बरिबोंकी छाँगी-सी बरपीस उपर बन्धीयन ककरेवा या

मोटियाका हुआ तो मोटी तिबोरीका अनुमान सहज सम्भाव्य है।
 घाँसानेटी नेट। एक तिलोसे डूबरे सिलोमें प्रवेश करनेका द्वार। जो
 अबतक देखा है वही अच्छा है, या जो आ रहा है वह? घाँसानेटी नेट
 समाधिपुस्तकी तरह घटस बड़ा दोनों तरहको दुनिगाको स्थितशक्ती
 तरह निहारता रहता है। उसके लिए यह और वह दोनों अपना है, वह
 सबका स्वागत करता है, एक ही तरहसे। हवाओंकी संख्यामें मूरे मटल्ले
 सबकी कबुतर जो इस विद्याल द्वारके छत्रोमें बावायनोंमें पुम्बजकी
 वरतों और सँबोमें अपना घर किये हैं एक स्वरके साथ फड़फड़ाकर जाते
 हैं रंगीत पतंगोंकी तरह नीसे आसमानमें किये हुए वे पक्षेक हर सब
 जाने किस मूठकी ताकतसे बिचकर इसी छम्बेपर छीट जाते हैं बुबह-धाव
 छोरे-छोरियाँ बाबल छीट जाते हैं वाने बाल जाते हैं और गाँवानेटी
 नेटके वे स्वागत-परिवे अपनी अस्थानी मुटरपुंसि इस मुनमाल छत्रको
 बाबाद किये रहते हैं।

बीड़ा रास्ता। जी हाँ यह बनपुरका मधहर बीराहा है। यहाँ नदी
 की विद्याल बाणकी तरह बीड़ी-बीड़ी बार सड़के मिलती हैं बीचमें एक
 बहुत बड़ा बुबोने डका हुआ कबुतरा है जो बारा राहकोको अपनी अपनी
 सीमाओंमें बाँपता है। मिलनको नियमित बनानेबासे इन टापुनुमा कबुतरों
 पर अजीबो-गरीब क्रिस्मके कोप जमे हुए बिन्धायी पड़ते हैं। एक तरहकूम्-
 हाट जहाँ छोटी-बड़ी बीगियों टोकरियोंमें कई तरहके कूल्की मासाएँ सजाये
 पूम्बिञ्जेता आसनी कम औरतें बयाहा। पानी कुछ काली-काली मानिनें
 पाडे रंघोंमें रंघी ओड़नियों और छोटके लहूँपोमें लिपटीं। मेरेक पूम्बोकी
 टोकरियाँ बयाहा थी। पीले-काल रंघके घेदेके पूम्बोकी मीठी पम्बकी इन
 बहारबीबारीके बयछम हुआमल बनानेके लिए बीटे नारबोनी लम्बी छत्तार
 बालाको आकार देती कँचियोंकी कूक तास्वा गिरपर मीडोम डिगल्ले
 सुरेकी रंघत देखते जाये बड़िए तो हचकियों अँबूठे आदिके छापाके काने
 मूरे नकये कँपाये यकितके लिए छोटी स्टेड और पन्नास किये मोटे बुम्बुल

बिपके हुए। प्राचीन जमानमें एक दिन ऐसे ही जब कासी-काली मुझीत पहाड़ीके ऊपर आठगड़ी बाबल बुमर भावे से एक बनेही जगड़े देबकर चिल्लाया हुआ भागा—बापर जो बाबल इतने बड़े पहाड़को निपल जानेके लिए झुका बना जा रहा है वह भला मेरी छोटी-सी 'बन को कैसे छोड़ेगा

अम्मा लगगा हूँ गरिहि, पहिउ रदन्तुउ जाइ ।

वे एहा गिरि गिलन मणु सा कि ज्यह जमाई ॥

किन्तु यह है मोठी ईपरी जिसकी मुकीली चौटी बालमानको मेरती सोना टाने खडो है। और बेचारे बाबल छिम्पकर ऊपर निपक बसे है। इस सीन्धर्म-श्रमता बु परीपर साधारण जनका आरोहण बन्ध है।

मुझे निरास भीत्रा देखकर रिक्ताभासा बोका 'हम तो पहले कहा कि ऊपर जाया मुम्किळ है। म्हराची ताका मइल है।

मैं रिक्तेवालेकी ओर देखता रह गया कुछ बोल न सका। उसकी बीघाम हमारी पराजयका कोई मूल्य न था वही निरङ्गम काबल जानें अपने कभी मोषा भी न होया कि इस ईपरीपर 'राभी ता का मइल क्यों है, बीककी बात्तिकाकी तरह अकर्ममें खड़ी इन अमाची ईपरीके मन्ठरपर बेवतीका वह राजभूट क्यों? पेड़ो मुरमुड़ोंके बीचमें बोझ ऊपर उठकर अपने अस्तित्वका बोध करनवासी इन पहाड़ीके लिए इनकी बड़ी गजा किसलिए? हजारों पढाफिबोंकी तरह हवाकी महरपर खंजरीके महरपते हुए पौबोंकी छाहमें एक राज विद्याम करनेकी तकनीर भी इनमें क्यों छीन ले गयी? मेरा मन न जान क्यों बड़ा निद्र हो गया था। रिक्तेपर बैठकर चला तो मनमें जाने कितना उबाव धरा था। प्रकृतिक अकल्प दुर्घम म्हराचिं मानवीय चरनकी प्रथम ज्ञानको कौन गुणाचिन न करेगा। आकाश-स्पर्शी हिमदितारोपी उल्ल खोटिमेंपर मानवीय साहसकी पलाकाएँ किसके मनमें गबकी जायना नहीं धरती? किन्तु जाने क्यों इन छोटी-सी ईपरीके निरपर रने से बीच

और अप्रतिहत पति होनेकी यह मानबी कल्पना भी बर्जीब है ।
बनारसबाजोंको जयपुरमें जिस सखस बड़ी दिनचर्या सामना करना

पड़ता है, वह पानकी बूकान हुईगा । ऐसा नहीं कि बूकानें नहीं मिलती
मिलती हैं पर मन मासिक बूकान पाना बाकई मुश्किल है । लम्बे-चौड़े
तकतेपर पचासों पत्ते सूख रहे हैं जिनपर नूने और कपड़ेका सेव लमा है ।
ये पूरे पत्ते बिकसुल कपड़े काष्ठकी तरह मालूम होते हैं । कई बार
मनको समझाया भाई देघ-देघकी बाछ है, किन्तु वह समझ न सका
और उस काष्ठकी पानको मुँहसे स्नाना नकारा न हुआ । एक बूकानमे
बापे पत्तेपर कटवा नूना लमानेको कहा तो पनबाड़ीने बुरकर देखा
परम्परा-बिरोधीको सामने बड़ा देस बह जल भुन रहा ही था कि
येने बम्मब-भर मुपाड़ीकी जयह दो-एक टकड़े रखनेको कहकर बुरघ
आक्रमण किया बिड़कर बोला 'पत्ते काको है क्या ? ये क्या उत्तर
देता बुकानी मना की मौँझकी घुटकी रोकी किसी कुरर पानका रूप बना
तो एक नया छिस्ता आ गया । एक मजबत जम पगाइपाटी बामिक
पनबाड़ीसे बोले 'भाई कीयाम है ?

पनबाड़ीके पसेकी बजास कथी खड़ी परवनको पुमाकर जिन
लास कर बोला 'साहब यह हिन्दूकी बूकान है ?'
साहब सरुपकया तबतक उनके स्वरम पनबाणी बड़बड़ाया पान

की बूकानपर कबाब सबाब माँघ रहे हैं भ्लेच्छ ।
अब समझम जो बात आयी तो हुईी रोचना मुश्किल हो गया इलाक
कि ई इस बटनासे जयपुरके ममी पनबाड़ियोंकी बुद्धिपर अविश्वासका
कारण नहीं समझता ।

बुधरे दिन आठ बजे होटलके बरबाडपर जाया ता देखा कठरा परि
बिठ रिजनावाला पहा है बरी पगाही बही बेचकी चेहरा बही काँचम
जाँले ।
बोला 'भांमेर बाबां है न सेठजी ।

लिए इस कल्पनामें भी मयका आधिपत्य छा गया ।

मैं झुमते-झुमते बक बुका था । एक लेबड़ीके पेड़के पास भाकर खड़ा हो गया । सूना-सूना यह पेड़ इससे अधिक चारों ओर और कुछ भी न था । पीला हब-भरा यह रेश ! मैं मन मारे इस उबाड़ प्रान्तकी देखता रहा । मुझे लगा जैसे मग्न मन्दिरकी किसी सन्धसे कोई सिद्ध कापालिक मेरे सामने धाकर खड़ा हो गया है । सम्झी स्वतः बतड़ी कुम्पित भीहें सहसा भाकर बोला 'बपों बेटे क्या देखता है । इधर जा इधर । हाँ और तेरी तो कुम्पितिनी जाग्रत है । और फिर वह अपने अँगुठेमें मेरी भीहोंने बीचके मायको छू देता है ।

दिखता हूँ कि आकाश कास-कासे बादलोंसे भर गया है । बादलोंने आगे पिपल बर्नकी बूटि बौड़ रखी है उसके आगे छोटे-छोटे लाम बंधु पक्षियोंका बक लेकता हुआ भागा जा रहा है ।

हवाके बपेडोंसे जयपुरके मुलाबी मकानोंपर लगे बहरंग अँधरेडी पोस्टर फड़फड़ा कर छट रहे हैं । सड़कें जलबूटिसे धुल कर साफ हो गयी हैं । अपाहिर्बोधा कही नामोनिशान नहीं मोठी रूँपरीकी छतीपर-म रापी छाके महलको उतार कर किसीने जमीनपर रख दिया है । आमेरक भजावसेप कितने सुन्दर और प्रसन्न लगते हैं । लेबड़ीके झुमने पड़ मुमकरा रहे हैं ।

'क्या यह सच है बाबा ?' मैं बूछता हूँ ।

'अविष्य बतायेगा । बाबाका कंकाल पिपलकर बूपमें बिसीन हो जाता है ।

बाके हर एक वर्तकको इस विधि संयोगपर आरधर्म-स्तम्भ रह जाता पड़ता है ।

जयपुरमें रहते एक पञ्चबाप बिता चुका था बुझाबी इमारतोंके इस नगरका वाक्यपर वीरोंमें रेखमी डोरियोंकी तरह लिपट जाता कारी चौड़ी सड़कें चौड़ा रास्ता सामानेरी पोस विपोकिया बाजार हुआ महुल अलबर्ट हाल समी कुछ एक अजीब स्मृकारकी मानसिक चिन्तनाका आमुर्तम था हने छोड़कर या इसके अजाकर अलय हू पाता नहा मुस्किम मासम होता । कमल-होचमें बन्द विमुक्त मनुकरके मकरण-पालको आनन्दकी परिपति बतानेवाले तो बहुत मिलेंगे किन्तु समय-वयमके हू अबाड़ोंमें पिसे बानेवाके इस ओरकी बुद्धिपर कौन तरस जाता है ? इनीलिए एक दिन बाधा मुहूर्तमें जब कि मनुष्यकी बुद्धि मोह-बधित नहीं रहती मैंने इस नगरको बिदाई की क्योंकि बिछड़कर जाता हुआ तो नगर ही था ये नहीं ।

जयपुर अकसतसे फुसकरामें आकर फिर साड़ी बरकनी होती है । मुझे मेडतारोड जाना था । जहाँसे छह मील दूर मेडताका शहर है, मीराका नगर । अपनी निपुण प्रम गाबनासे जिसमें सखियों तक भारतके शुष्क मनको स्नेह-मुवासे प्लवित क्रिया उसके नगरमें कुछ रम अवश्य हीबा इतरा अनुमान तो महज था किन्तु फुसराग स्थानके बाद राजस्थानके जिस क्पका वर्तन हुआ उससे कर्मठ जनताके प्रति अज्ञाकी भावना तो पैदा हो सकती है किन्तु नयन-मुसके स्नेही जनको कुछ विरक्तिका बोध भी हो तो आरधर्म नहो । हाँ फुसकराये केवल एक घण्टेके रातके बाद ही साँघर की यह मनोरथ सीस दिलायी पडती है जो अपनी तरफ्ता स्वच्छता और सरातासे इस ठण्ड नस्मूमिमें अभिनव रसका संचार करती है ।

कभी-कभी अकेले पाशाका भी एक अजीब आनन्द होता है । कोई पान न रहनेपर भी जन-मन मीन नहीं रहता । और ऐसी अवस्थामें मानसिक अज्ञान और बेपरकी सम्बो पड़ानोंमें काशी रात बालूम होती है ।

एक सरदारजी बोले । वे मेरे माथ जयपुरसे आ रहे थे और दिग्नेमें बैठे बटे बातचीतकी दौरानमे दह धान चुके थे कि मैं मेड़ता जा रहा हूँ । सरदारजीकी धार मैंन ध्यान नहीं दिया जा एसी बात नहीं । सफ़ेद कुरता पाजामा और सफ़ेद पगड़ीमें लफ़र बाकीबाके सरदारजीकी धार मैं कई बार देल चुका जा मोथा भी जा कि इतन मामूम और गरम सरदार मात्र तब मुसे क्यों नहीं दिखायी पड़े । गोबीली बाड़ी धुग भाँचे और रंगीन छीन्की पगड़ीबाके हर सरदारके अन्दर अकड़की अवस्थाभावी स्थितिकी मैं सतत गुन मानता जाया हूँ । कहीं एसे बेचार सरदार मैं हारै इसकी कल्पना मथ ही मुझे न थी । वे रास्ते-मर 'पाकस्तान' को गाली देने जा रहे थे बनपौर गाली किन्तु क्या बतावट थी जग बेहरेजा कि गालीको वाली गमझनकी थी न करता । जैसे कोई बच्चा मिट्टीके टूटे बिलोनेमे बाठ कर रहा हो कि तुम इतनी जल्दी दूँ क्यों गम या कि कोई क्या-हाग गही बबुलके पङ्घे पूछता हो कि तुम बबुलके पेड क्यों हा बरबदद क्यों न हुए । वे अकबर जयपुरमे 'मिर्जम बिज्रम' के मिर्जमिर्जम भाया करते ।

'माथीरा तो कोई टिम नहीं थी गतको जायगी मैं बज बनिया जापके माथ मैं भी शीक देर लूँ सरदारकी बातपर मुसे धारबध नहीं हुआ । सया कि इस बेहरेजाका ध्यक्षि मरि लीस देगलेकी बात करे तो कोई हज नहीं । जमके अन्दर प्रकृतिजी इन तगम वस्तुको देलनेकी इच्छा जयना स्वाभाविक है । उनके तीन भाई बीबी एक बच्ची मभी पाकस्तान क अन्विकाण्डको भेट कर चुके थे जाग परिवार लाकणार्थी जायम स्वाग हो चुका था ।

'भौन बहा है जी एक ऊँचे टीकरेपर बइकर सरदारजी बोले 'अपस्तार कणार्थी लीलाका गीन जाये है जी मया बाक्य इतना मया लीन सरदारको जागिय जमकीली लइतोनी रंगार्ये कबकी तरह

आश्रयमेदमनघघमते मदुर्षं
 विद्याधरः प्रसाधितास्ति शुक्मरा मे ।
 अस्यामरप्यमुषि तस्य यथा तपोमि
 दैषी हिमाद्रितनया नयनातिभित्तम् ॥

विद्याधरने काय बहा राजन् मी तुम्ह बहा पूं । एक तुम्ह भेंट स्वी
 करे । अपनी सलाफी यही छोड़ दो । प्रातः काल अपना कुम्ह पृथ्वीमें
 मान्य तुम अपनी राजधानीकी और बोडा बीडाली बने जाओ छबत्वार
 पीछ मुडकर मठ देवता । कुम्ह गाइकर ज्या ही राजा बला कि पत्नी
 कबबला बिगाक मित्पु उग्रस पडा । अन्धधनुम्बी कहर फूट पनी कहरों
 की गबना मुनकर राजा अपनेको रोक न सका और विद्याधरकी अतापनी
 के बाबजूद पीछे देखने अन्ना कहरें घाम्त हो गयी । विद्याधरने कहा
 'राजन्, आगत अभ्या नहीं किया । पैर अब यह एक शील मात्र रह
 जायगा । अन्धधियाका कुम्हत्र बचक पाँच योजनको पवित्र करता है
 उगवा पुत्र कबल लाकातर फल प्रदान करता है किन्तु गुरुधियाकी यह
 शील बीना सोमार्ने फल प्रदान करती

इन्दोः फुलस्य यशसा पसतिः कुस्त्रुण्यं
 सानं पवित्रयति योजनपञ्चकं तन् ।
 लाङ्घनारं पसति तरस्त्रवाननेन
 लाङ्घन्येऽपि भविता सचित्तस्तु पशुः ॥

जातिरु है कि बचि जयापक भी इस शीलकी विद्याधरने माननेके लिए
 विद्यय हुआ था । हाँ उगने एक बाण और बड़ टंगस बही ह । बह यह कि
 यह शील इग कोरुम भी 'छप देवी घामर नमर लब भी इस शीलने
 बनाया जाता था ।

'भीत गामाग है जा मरबाग्री कहने लमे पानीको देगतर
 आनी गामाग हो ही जाता है ।

मे आश्रयमे सग्दार्की ओर देगता रह गया किन्तु बहूँ ठी बनी

विभिन्न प्रकारका सम्मोहन बिखारकर लहरोंमें बहता हुआ बका जा रहा था । इसमें बचकर आ सकना मुश्किल था । सरदारजी अपने कामका हर्ष ही रहा था मुझे बाकी पकड़नी थी ।

सरदारजी लौटें मैंने कहा ।

'एक मिनिट जी' मैंने देखा सरदार पहाड़ी होनेमें तेजीके साथ नीचे उतर रहा है मैं भी साथ-साथ उसके पास तक पहुँचा । सरदारजीने एक चुल्हू पानी सिमा कीर जमे मुँहमें डालत हुए बोले हमराने हावका नमक पाके कौम क्रिमे याद मही करे है जी । एक बूँद भी तुममें रहना तो भूखनेम कुछ मुश्किल होगी ।

मैं सरदारकी ओर देखता रहा वह चुपचाप हँस रहा था ।



विचित्र प्रकारका सम्मोहन बिखारकर लड़कियों में बहता हुआ जाता रहा था। इतना बचकर भा सकना मुश्किल था। सरदारको अपने कामका हर्ष ही रहा था मुझे बाड़ी पकड़नी थी।

सरदारजी कीटों में कहा।

'एक मिनट की' मैं देखा सरदार पहाड़ी बोकनेसे तेजीके साथ नीचे उतर रहा है। मैं भी साव-साव उसके पास तक पहुँचा। सरदारजीन एक चुम्बू पानी सिमा और उस मुँहमें बाकने हुए बोले। हमराने हावना नमक पत्रक कौन किने माद मही कर है की। एक बूँब भी लूनमें रहेगा तो मुकमेम कुछ मुश्किल होगी।

मैं सरदारकी ओर देखता रहा वह चुपचाप हँस रहा था।



सुदूर भविष्यमें लोया है जिसको सुनहरी कल्पना उन बूझी बातोंमें हमेशा छापी रही। भविष्यमें जब निराशासे बारमें प्रचलित कबाएँ मूक हो जायेंगी संस्मरण विस्मृतिके गर्भमें जो जायेंगे मित्राके 'साधो-साध निस्तेज हो उठेंगे' तब जानबानी पीढ़ी निराशाके विषयमें गिक निराशासे पुछेगी उनको कृतिपोंसे पूछगी उम म्हाकविके व्यक्तित्वके विषयमें उसक बादा बरबक विषयम उसके जीवनके संघर्षमय लक्षणके विषयमें विरोधीसे विरोधी परिस्थितियोंमें भी निर्बल ब्रीपकको तरह अडिय बसती हुई उम काव्य-साधनाके विषयमें। और मुझे यह कहनेमें तनिक भी संकोच नहीं कि भविष्यके इन प्रसंगोंका जितना स्पष्ट उत्तर निराशाकी कृतियाँ दनी उतना स्पष्ट शायद ही उनके समसामयिक या बादके किसी कविकी कृतियाँ दे सकें।

निराशाका व्यक्तित्व अपनी तरहका बनेका है। ईने तो प्रत्येक कवि और साहित्यकारके लिए निश्चित व्यक्तित्व अनिवार्य अपेक्षित है किन्तु निश्चिन्ता विचित्रतामें नहीं है बस बहुत-से लोभ ममजते हैं। प्रत्येक कविक व्यक्तित्वकी निश्चिन्ताका एक ही मानदण्ड है और वह है उमके आत्मविश्वासकी शक्ति। निश्चिन्ता इन बातमें है कि किसी कविने अपने नामनाश्राप्त व्यक्तित्वको अपने बाहरकी वस्तुओंमें कित्त हब उच विस्तारित कर दिया। हर बड़ा कवि अपने व्यक्तित्वको अपने अहंको जीवनमें विमर्जित करके ही बड़ा हुआ है। अहंकी विकृति और अनुचित विस्फीति कविका हमेशा ही लपु बनाती है। इनी वस्तुकी ओर लक्ष्य करके टी एम इन्विज्जम सिखा है कि 'कविके लिए अपने व्यक्तित्वकी बहुमूल्य से-बहुमूल्य वस्तुका त्याग अनिवार्य है। वह अपना सब कुछ अपनी बहु मूल्यवान् कलाके लिए विमर्जित कर देता है। कविकी गति सततके आत्म-त्यागमें है सततके आत्मविश्वासमें है। किन्तु इन प्रकार आत्मत्याग और आत्मविमर्जन व ही कर सकते हैं जिसके पास अहं व्यक्तित्व हो। तन्त्र भावने जगल अहंको इदममें डुबा देना सबक बचनी बात नहीं है। इन

शत शुद्ध बोध-सूत्र से सूत्र मन का विवेक
 जिन में है सात्र धर्म का पृतपूर्णांमिवेक
 जो हुए प्रजापतियों के संयम से रक्षित
 वे शर हो गये आज रणमें भीहृत लण्डित

रामका असल सम्पूर्ण विश्वको विजित करकेवासे जानाके पीछे
 हो जानका उतना अकर्मोच नहीं है जितना उन 'देवी विद्या' पर वि
 पक्ति अचमरत रावणके माच है ।

जिब सहज रूप में संयत हो जानकी-प्राण
 घोले, आया न समझ में यह देवी विद्या
 रावण अघर्मरत भी अपना मै हुआ अपर
 यह रहा शक्ति का खेल समर शक्ति-शक्ति !

पर राम जीबनकी और नायकी यह विद्वन्मना देखकर मो विचलित
 न हुए । उन्होने अपनी आत्माको शक्तिके सम्पूर्ण विनशित कर देना
 संकल्प किया । किन्तु इस महत् लक्ष्यमें भी उन्हें मिडिकी ओर नहीं
 प्ररित किया—पूजाके अन्तिम दिन इन्हीपर अवहृत हो गये—रामका
 सारा विषय काय छटा

जिब जीबन या पाता ही आया है विरोध
 धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध

और राम जिन्होंने कभी न देखा जाना न पलायन जाना अपने
 महाक सम्पूर्ण आत्माका विनशित करनेका उद्यत हुए—वक्ति मिड हो
 गयी । यह है रामकी शक्तिपुत्रा ! किन्तु निराशाकी मरुबती-पुत्रा तो
 इसमें भी बिबट है इसल भी अधिष्ट संकट और जोगिमम मगी हुई
 क्वाक्ति रामके लिए जो देवी विद्या या यह निराशाके विना हमारे
 गमावकी विपत्ता थी । रामको एक देवी शक्तिके नामने सर्वाधि करना
 या पर निराशाको मरुबं जिब और मुन्दरके उन कपके प्रति या जीबनमें
 जाना प्रजापकी उन्नी हुई शिपिनियोंमें अतिशक्ति पाता है । उनमें मारी

बेसमा बाइता । सरोजकी अछानयिक मृत्युके बाद कवि अपनी स्थिति पर बार-बार मोक्षता है । अपने सारे कमचो बहु निरर्थक मानता है और अपने पितृत्वका निष्फल बहु जानता है कि मन कैसे कामयाब जाता है किन्तु शरीर बेइमं किमी-न-किसीके मुझका जन्म छोड़कर ही घम जाता है । इसलिए कविका दुमरेके मुझका जन्म हीन सैनेकी अपेक्षा आँसुओंमें ही अपने मरानि-भरे मुँहको चित्रित देन जैसा क्यासा पमाव आया

बन्ने मैं पिता निरर्थक वा
 कुछ भी तेरे हित न कर सक्य
 जाना तो अर्थांगमोपाय
 पर सदा रहा संकुचित काम
 ललकर अनर्थ आर्थिक पत्र पर
 हारता रहा मैं स्वाम समर
 शुभिते पहनाकर चीनांशुक
 रस सक्य न तुम्हे अतः दधिमुला
 क्षीण क्य न क्षीना कमी अथ
 मैं लल न सक्य प हग विपन्न
 अपने आँसुओं अतः विन्वित
 दले है अपने मुन्न चित

विस्मयजन्यी बापोंके धीरु और कथित होना बारी रोव निराशा की क्या इन पंक्तिओंमें ध्वनित नहीं होता

यह हिन्दी क्य स्नेहापहार
 यह नहीं हार मेरी मास्तर
 यह रसहार लाकरपर नर
 अभ्यथा जहाँ है भाव शुद्ध
 साहित्य बना काशुल प्रबुद्ध

यह है 'सराज-स्मृति' जिसने कवि अन्तमनके 'बय्यकठोर' को पूरी तरह सशरों कर गग दिया। इस श्यामक कर्मविपाकनी इन पुष्टभूमिमें निरासाकी कविताओंका विस्मरण किया जाने ला उनके काग्यने विरोधी स्वरका सही भव समझम आ सकता है। यह ग्लानि और त्रिनिशाया भाव ही उनके काग्यम माना रूपामें प्रस्तुतित हुआ है। कभी आश्लेष बनकर कभी अरयाभाराके लिए दुःखम्य ललकार बनकर कभी पातण्डियोंके विरुद्ध आर्कशकारी हुंकार बनकर। कभी यह भाव 'बादल राज' में अत्याचारकी मिटानेवाली शक्तियोके लिए आवाहन बनकर आता है कभी अंगना अंशमें लिपटे भी आनक अंशम कापनबास कतिक-शापकके विरुद्ध प्रदर्शकका विप्लव-भास बनकर आता है। यह भाव ऊपरमें जिस रूपमें आये इसके मूकम आत्म-व्यहृसनाका स्वर ठी पा हो। 'बनबेआ म इस स्वरका ही विगजन है। 'बनबेआ जैसे कविक जीवनका मया प्रमात बनकर बिल जड़ी है। कवि सोचता है कि आज वर्णमक परंपर जब बिलकर घात-घात श्यामक पुनर्कित करोम रखा' क मुकमो बूम रखा है उसका पंताम अग्निमय पुर्बव निधूम प्रसार मारे विप्लवका अपन प्रतापसे भस्मीभूत कर रखा है— 'उम समय में क्या कर रखा है मैं ?

हो गया व्यर्थ जीवन मै रण में गया हार

सोचा न कभी

अपने मबिष्य की रचना पर चाल रह सभी

कवि सोचता है कि काय मैं कोई राजपुत्र होता तो भेने ही मैं कर्मभंगे पूक हाता बिडालू माग मने अनुचर होने मने उमारके लिए मर्तजिर और उद्वरर होते। अन्नबारोंमें मेरे मयना मान होता भद्रकरर बिने जाने बिच छपते। राजपुत्र न होकर किमी म्मपतीबा बटा ही हस्ता तो साय समुद्र पार चिगाके लिए जाता। मेरे फिना बसही राजनीतिके बलधार होने— 'मनपर एवाप्रचित होकर भी साम्यवादका मया माने जनता उग्य भगता राष्ट्रपति बनायी। हिन्दोक सम्मत्न सभी

उसी समय पुजारी आया और बेलाको तोड़कर बसा। मैं प्रियके बरकोंमें जीवनका विसर्जन करने आ रही हूँ—और बेला बसी गयी कबिको सरयके लिए सब कुछ दे देनेका नया सन्देश देकर। बेला सरस्वतीके रूपमें मानो कवि पुण्योत्तमकी जयका नया सन्देश देने आयी थी और कविने उस सन्देशको मानकर सरयको साधनामें बिना प्राणिकी आकांक्षाके सब कुछ विसर्जित कर दिया। इसी आत्मविसर्जनकी पुण्य गाथा है गिराहा का व्यक्तित्व। आत्रके साहित्यकार यशसिन्हा डेप स्वार्थ एक दूमरेकी नीचे गिराहनेके प्रयत्नमें ही अपना व्यक्तित्व निरोजित कर रहे हैं उनका पाठ अपने सरयके लिए व्यक्ति और सम्राजको देनेके लिए कुछ बचा ही नहीं है। बस्तुतः गौरवान्वित व्यक्तित्व बही है जो आत्म-विसर्जन करे पर यह मामूली व्यक्तित्वके बचकी बात बिकम्बुल नहीं है।

पर कहाली बाबाक बेत्याक बाबा उठारकर पारिवारिक बचरोमकी प्रविष्ट्य पा सकी ।

जेवज उच समय बन्ना जब सामन्ती संस्कृति और सम्पत्ताकी खोजकी सारहीन दीवारें मये मुयके बपेड़ोंकी खोटसे महुरा उठीं । बबलुक जो मरठ बा बरेम्य और स्तुर्य पा बहु देखते ही देखते बूलमें छोटने लगा—क्योंकि उसकी ऊपरी बमक-बमकका केंबुल बन्दपडने छिने बहरको छिना म सका । चारों तरफ विनाशकी मूर्खनी लम्बहरोंकी भुँबकी धाराएँ, टूटी हुई परम्पराके पीर्य कबन्ना—निस्पन्द सम्पत्ताके मज तोरन—इस विष्वन्के बीच जो मया मध्यममें जन्म छे रखा पा बहु न केवल निर्वल और अनहाय बा बस्कि बहु अब भी लम्बहरोंकी लम्बिके सामने विवशतासे माया मुना देनेके लिए हुमेवा तत्पर बा । जेवजको इस विवशता और अपमानकी प्रविष्ट्य गानकर मरठकी तरफ भावनबाले मध्यमके तपाईवित बुद्धि बीबियोसि लक्ष्य गफरठ थो । चारके घासनमें लड़कड़ाते हुए क्यका उतन पागलखानेके 'बाइ नं छु' में विखाया और कातर और चापस्य बुद्धि बीबियोसि' गकाब कहानीमें बच्छी खबर ली । 'एक कम्ब' में उस दिन कृपण पोषाक-प्रदसनन लसक बा । कम्बके एक कमरेमें बहुत-से बुद्धिबीबी बैठे बचन राजनीति खादि मन्मीर मसलोंपर ऊँची ऊँची बातें कर रहे थे । तभी एक आदमी हाममें घराबकी खोटलें और ठाबमें कई बचान मन्दिवाँ लिये खेहुरेपर मकान वाले कमरेमें बातिक हुआ और आते ही उसने उम्हें बकरा छोड़कर बाहर निकल जानका हुकम दिया । बुद्धिबीबी लोग ठेगमें जा गये । बिस्काकर बोले 'कौन ही तुम इस तरहुरी बभइ बातें करलेबाक ? मठा यह भी कोई घराब पीनकी पगहू है ।' उस बादमीने और भी कर्जा की लड़ाईकी नीबठ आ बसी । मीनेअर और एक सुरसा-अपिचारी कमरेमें जाये और उन लोगोंने भी सत मकानपोसकी बहूँ घावक न पीनकी लकाएँ ही । तभी मकानपोसने अपनी मकान हटा बा—विश देलकर समी बकरने रहे कये । क्योंकि मकानके भीतर एक कस्तूनी बरतमीबिबोके ठिग

रद लाकटा है वह पीड़ात बर्बन होकर दूमरोंकी नहीं अपनी ही शक्ति करता है ।

बेचबका बिठ बीबसे सबसे अधिक बिड़ वो बहु है ठकस्तुठ कष्ट-कार । मादमी अब अपनको कुछ ऐसा दिखाना चाहता है बीता बहु नहीं है तो उमका सारा ब्यक्तित्व मन्दाबाके घेरोमें उठकर बबोब पुतलेकी महल बक्षितपार कर मता है । यह बनभट न बेचछ हमारे बाहुरी रूपको सिद्ध करती है बक्षि हमारी भीतरी ब्यक्तित्वका भी गष्ट करती है । बेचब अब भी ऐसे भोगीसे मिलवा वा बहु उनके मन्दाबको फड़फड़ उनके हृदयमें लाकनेकी कोसिछ काटा वा । अफसर तोप इतमिय कि एक बड़े कम्पाकारपर हमारे ब्यक्तित्वका भी कुछ प्रभाव पड़े गाना प्रकारकी इत्रिम बेष्टाएँ करते बे । गोर्कनि इन तरहके दो-बार बहुत ही सुन्दर संस्मरण लिखे है ।

एक बार एक अध्यापक बेचबस दिखने जावे । बेचब कसक अध्यापकोंके विषयम बहुत हु वो बीर बितित रहा करत बे । उनके रहन-सहनको छँबा उठानेके लिए बहु दिन उठ तरह-तरही बातें सोचा करते । उस अध्यापकने बेचबस मिलते ही लच्छरार इत्रिम तस्मम बहुत भाषामें बात चीठ शुरू कर बी । कुछ बेर तक ती बेचब इस सेकते रहे पर अब सहनकी सीमा पार हा मबी ती उम्हान अध्यापकको और देखते हुए गुछा 'न्या यह सच है कि आपके जिसेके किनी अध्यापकने एक बच्चेको बुटी तरह पीठा ?'

इतना सुनना वा कि बी मग्जन अपनी कुरमीमें उठल पड़े 'न्या आपका मतकब है कि मे बच्चोंको निरपत्तामें पीठ्या है ।'

'नहीं नहीं मैरा मतकब सिर्फ इतना वा कि बहु बटना आपके ही जिसेकी है, मैं अभी कुछ दिन परके बनबारमें पढ़ा बा— बेचबके बेहरेपर कई गुस्ता न वा । अध्यापक धाम्त हाकर बीठ मये बीर उम्होंने बड़ी संजीवपीठ बतला घुड़ विमा कि इन्ड तरह अपनी पारिवारिक

बन कर रह गयी है। चापें तरऊउबास मुरा धाममान बनी परती...
 बहरप बाताबरप... यहाँ तक कि मुझे फूल भी रंगहीन बिसाई पड़ते हैं।
 सपता है जैसे मरे जीवनको कोई रोप कम गया है।

‘कमता नहीं मँडम यह बाकई एक रोग है, इसका इलाज कराइए।
 इस पीक भाषामें ‘प्रबंधनाद्भुत रोप (Mojus Pretencalis) कहते हैं।
 प्रतीप्त धो कि इस बार उन महिलाने यह प्रबंधना नहीं बिसावी कि उन्ह
 पीक भाषा भाठी ह।

हँसी-झुपी अर्धम-बिनाइका यह बाताबरप केवल बेसबकी मारमिक
 कहानियोमि ही नजर आता है। बाइकी कहानियाँ तो जैसे साठ केनबसपर
 बासुके रंगोंसे रंगी हुई तस्वीरें हैं जिनको एक-एक कम्कपर कम्का पीडा
 और जवसाइकी समुन भावनाएँ मुर्छनाकी तरह घुमड़ छठती हैं। इरें
 और दुःखका धाब बेसबकी अब सीस और कटुतासे नहीं भरता बा।
 दुःख अब एक बेसन प्राणीकी तरह मनुष्यक मनम सोने अनबिस्त सपोंका
 सन्देश देकर आन जगा और बेसबने अपने पीडासे मरे हुयवम जिस
 मत्यको देखा वह बोधी बुद्धिबाइतासे कभी भी प्राप्त नहीं हो सक्ता बा।

डारबिड् कुतेबाली महिषा कोरस बसं सेबक फस सभी बासुबों
 और उनके बीच फसनेबाक सत्यकी भाषाएँ हैं। बेरी आचडकि रनेबस्व्याके
 बासुबोंमें उम बीन और दुःखी पीडाकी भाषा है जो समयपर मर न लके
 और अब इस पुष्पीपर कुछ न गमसते हुए-से जीवित है। ‘इन दरना क्या
 रूप है इस पीडाम क्या भासन्द है ? इस हय ‘बा बिरोबी’ (बन्दापोनिस्ट्रुस)
 कहानीम बड़ी अच्छी तरह देख पाठे हैं। डॉ फिरीलोकरा लहवर्षिक
 इकलौटा बेटा मर गया। माँ-बाप बोला बटेकी लायक पाग बँठे हैं।
 दोनोंने बेहुरोंपर अचेतनवास उत्पन्न पीडाके सौन्दर्यकी एक छाया है... एक
 आरुपक मामिक ऐसी छाया जिस मनुष्य आसानीसे नहीं छपस पाठे
 उसे कह पाता तो और भी मुश्किल है। उन कबक संबीतमे ही स्यन
 क्रिया बा सफटा है ‘इन सीन अचेतन पीडाला सौन्दर्य...। उठी समय

वह अपने सौतम उन वाम नायक पीपोंकी उबाड़ फेंकना चाहता है, जो
 सौतीको मुकमान पहुँचाते हैं। वह इस मनुष्यताके प्रत्येक रोगकी समझता
 है उसका इलाज करता है वहाँ कहीं रोग असाध्य है वहाँ भी वह निरन्तर
 नहीं होता बरिफ कभी-न-कभी आगेय्य होगा इस आशास निरन्तर उपचार
 में लगा रहता है। चेसबके मजम मनुष्य जातिके प्रति असीम जगाब तहानु-
 मूति भी है। वह मनुष्यके हृदयके हकमेसे-हकमे मुगम सिल पड़ता है,
 उसके दुःखमें रो पड़ता है। वह अद्यत्ममें मनुष्यकी जन्तरात्माके सौन्दर्यवा
 दिवनी है। उस बरसूरतीस सक्त चिड़ है और उत हमेबाके लिए माल्य
 बीषमसे हटा देनेके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील रहा। वामम तबकेते
 मनी तरहक ह्वातों-ह्वात मोपोंकी उगधी इस अपार भीडके पास कदा
 हुक्कर बडे ममतापुन निनीसे वह बैचता है और अपनी अयेप महासयताए
 साथ वह उनक मंगलको कामना करता है।

चेसब अपनी कसलके प्रति भी मामुली सक्त और जाबलक नहीं था।
 तास्तवाने खुद उसके मुँहपर उसकी 'बारसिहू कहलीकी टापीक की।
 उन्होंने कहा कि चेसबकी क्हालियोकी कलाकारिता उसी तरह बापीक
 ओर मादुक है जैसे लालपर हमारे बैचकी सडकिया बडे परियमन मजुदायी
 किया करती थी। चेसबने बड़ सकोचक साथ बडे धीरेसे कहा लेकिन
 उसम तो बहुत-सी मुटियाँ बर्तमान है।

अलबकी निम्ना भी कम न हुई। आलोचकोंके उमे बड़ी चिड़ थी।
 उसने लिखा है कि मैं आलोचकोंको उन मकिबयोंकी तरह मालता हूँ जो
 हकमें पुने बरतीका बीठनेका काम करतबासि पाड़ोंके पुड़ोंपर बैठ जाती है
 और जोरसे डंक मारती है ताकि वह समझ लके कि इन लंठारम मकिबयों-
 का भी अस्तित्व है जो अपनी छाप छोड़नेके लिए बेचन है। मैं पचोम
 यों तक अपनी क्हालियोके बारेमें आलोचकोंकी लमीधारें पड़ता आ रहा
 हूँ पर उनमें मुझे रंजनाक भी सत्य दिखायो नहीं पड़ता। बन से यही कहते
 हैं 'देवो मैं मजमना मकता हूँ मैं इतना मजमना मजना हूँ जितना मैं

मोमवत्ती बुझ गयी

पास्तरनाक

कुले दरबाजेसे कमरेक कीममें रखी एक मीठ दिवाली पड़ती है। मीठ पर एक कछनम सिपटा बज है। यह बड़ी मीठ है जिसपर उसन बोते दिनेमें अपनी रचनाएँ लिखी थीं। रचनाएँ—पाण्डुकेस सब पराक्रम रख दिये गये हैं और मात्र ऊपर मीठपर प्रबोदिका है। अचानक इन बुखको देखकर पास्तरनाक बड़ी पंक्ति बुनगुमा उठता है जो जिवामोमें बोबनके संपर्क पूरा जालोंमें हमेशा प्री हवाकी लहरोंपर तैरती हुई बिछर जाया करती थी। “मीठपर रखी एक शुभा है जो जल रही है—जलती रही है—?”

और मात्र यह समा बुझ गयी। जिवामोके सञ्चकक अन्त बँम ही हुआ जैसे उसने अपने प्रमुख पात्रको मरते देखनेकी कल्पना की थी।

मुरीको पुन हुआ था वी नवजात बच्चेको स्तनसे चिपकाय सोयी बत्ती ऐसी लकी थी मानो अन्तजान देह-हीपास्तोंकी यात्रा करता हुआ—मृत्यु के समुद्रोंके प्येड़ोंसे लड़ता हुआ कोई जहाज किनारे भाकर सड़ा हो जिसके भीतरसे आवत नवात्माओंस्र बौझ उतार लिया गया हो—पास्तरनाक मात्रसे सत्तर वर्ष पहले एक ऐसे ही जहाजसे उठरी नवात्मा था जिसके मनमें अन्तक ज्ञान-ज्ञानजाने देहोंकी मधुर-स्मृतिवाँ थी और हृदयमें मरमुटे प्येड़ोंसे लड़नेकी अटूट उर्ध्व मरी थी। सत्तका मल और हृदय औरेंद्रि कळ भिन्न था यह सही रिल मक्को मालूम हो गया जब कमी केन्द्रक संवने बाकूके तैल-मड्डुरीक जीवनपर एक निरिचित्र परिपाटीम पुन निर्मोत कव्यको तिलबानमें अचलन होकर देवान किया कि ‘पास्तरनाक

और जब व्यक्ति अपना कर्तव्य भूलकर मनुष्यवादा ही मानन करने पर
 चलाक ही जाती है तो वह उत्कृष्ट हो जाती है रक्तसौम्य बन जाती
 है। पास्तरनाकने ऐसी व्यक्ति बनाने के लिए आदर्शोंकी अपनी व्यक्ति
 स्थितिसे बर्णना की। पास्तरनाकका जीवन मुख्यतः अन्ततक एक अजीब
 आत्म-विद्वन्नाक इतिहास है। उसे पुरस्कार मिला साहित्य साधनाके
 लिए, पर प्रचार मिला राजनीतिको। उसने सत्यके लिए सदाई सड़ी
 पर विजय प्राप्त नहीं उन्हें मिठी को मुझ-सेवसे बहुत दूर थे। अपनी
 साधनाके लिए उसे पुरस्कार नहीं अपना मिला। कौटिलिजिनी ऐसी कि
 वह अपने समाजमें ही बहिष्कृत-बैसा हो गया। विचित्रवारी राजनीति
 साहित्यकारकी साधना उपर्युक्तकी और ईमानदारीपर केबा कुटिल व्यक्त
 करती है इसे पास्तरनाकसे समझा जा सकता है। वह सब कुछ होते हुए
 भी वह अन्ततक अपने साथपर बूढ़ रहा। अपनी अमममूमि और समाजसे वह
 विमुख न हुआ। वह यह मच्छी तरह समझता था कि इस पुरस्कारके पीछे
 उसके साहित्यिक मूर्खोंकी बर्णनाका बातना प्रयत्न नहीं है जिजना
 उसके वैद्य और साम्यवादके विद्वत् प्रचारके स्वापका। भिष्या कीतिके
 अविश्राम-दूषित प्रचार-मुष्ठापर उसने अपने व्यक्तिस्वको बड़ने न दिया।
 वह अहिंसा को पया पर उसने उफु न की। सत्य छोड़कर कीति बाना उसे
 स्वीकार न हुआ।

भाव पास्तरनाक नहीं है। उसके मनमें निरन्तर प्रयत्नित रहनेवाली
 पया बुझ चुकी है 'विवायोकी ईमटेड' बलिता बहुत प्यारी थी और
 पास्तरनाकको भी और भाव जब पास्तरनाक नहीं है तो हमें भी 'ईमटेड'
 की बार-बार याद रहती है... जाने क्यों ?

आवाजे बन्द हैं और मैं रंगमंच पर राहा हूँ
 दरवाजे के दरमने के सहारे मुझ हुआ।
 दूरागत प्यनि प्रतिप्यनि में दूँदता हूँ
 एक उत्तर

बेमानी जीवनका स्वामिसानी कलाकार अल्वेयर कामू

कामू नहीं रहा। पत्रोंमें एक समाचार छाया है कि ४ जनवरीको (१९९) पेरिसके ब्रिच-मूर्ब स्थित सेग्रेमें एक मोटर-दुर्घटनामें कामूकी मृत्यु हो गयी। 'जाँन कुल'स खाँबर काइलैम्बुस' के कैमलको उरख रखने इमेछा इस प्रसंगपर कि क्या सबसुख बड़ इन संसारसे सम्पुष्ट नहीं है, अपने हृदय की सारी ईमानदारीके साथ एक ही उत्तर दिया नहीं बड़ सच्चा मुस बिछबुल बेमानी प्रतीत होता है। और किम मामूम था कि बेमानी डिम्बगोका इतना बड़ा सार्विक कलाकार अस्तित्वावादी विचारवाचक असाधारण मस्तिष्क और बीसवीं सताब्दीके सुसुक मानसिक अन्तर्दृष्टका इतना बड़ा पारखी 'एक बेमानी तरहकी दुर्घटनाका चिह्न हो जायेगा।

कामूको इन विस्वकी किसी भी घटनाके भीतर कभी कोई विशेष-मूर्ब कारण कारं छुट या तुक नहीं मिला। वैसा बीबनमें बैसा ही उसकी मूर्मुमें जी इस बेमानी नियतिके हाथ है। नवाचित् बड़ परिष्कमें होनेवाली इन घटनाकी एक इककी-नी अलक भी बैस पाया होता तो इतने व्यंग्यपूर्ण बु-खद सन्दकी सत्तन कभी अघट्यरना न की होती।

कामूके छोटे-से जीवनका सबसे महत्त्वपूर्ण टक बग किम थाया जब बड़ मोबस साहित्य पुरस्कार प्राथिक अघसरपर अवादेमीके सदस्यों और अन्त-र्राष्ट्रीय विद्वज्जनक सम्मुख अपनी कुठअठा प्रकट करनेके लिए खड़ा हुआ था।ने बड़े तरीके साथसे कहा मैं इस सूचनाके मिलनेपर इतना अतर्कित ही गया हूँ कि कुछ समयम नहीं आ रहा है कि क्या बड़ें। मैं एक बैतहारे

सामयिकाके लिए पुनर्हजार कहे जाते हैं। सफलमें बाबाकी बाकबाबो असत्यका सुन्दर और सम्मानित रूप...सत्यकी बेपर्वाई नैतिकताके दुर्बोध अर्थ अर्थके एकत्र सम्मेलन...सत्यको अशुचित प्रयोग जिसे सही मानें किसे एकत्र! यह सारा भ्रमबाध आत्मीके मनमें एक अद्भुत अति विचित्रताको रूप है। 'अजनबी' में नामक कहता है

माँ बाबू मरी घायल कस पता नहीं मुझे ठीक मालूम नहीं कुछ। मीरसास अन्वीरियासे झंझ जाया है। माँकी मृत्युपर उसे आइने शामिल होनेके लिए छुट्टी चाहिए। वह अपने माँकेसे कहता है

तमा करनेसे इनमें मेरा कुछ बोध नहीं है' बाबूमें उसे सबता है कि वह सब कहनेकी क्या जरूरत थी। माँके यदि धूर जाये तो सहानुभूति विद्याय उसके लिए मैं आग्रह क्यों करूँ...

इस दुनियामें माँकी मृत्युका दुःख भी 'तमाया' होता था रहा है... अनुभव पीड़ा सहानुभूति सत्रीक सम्बन्ध और अब बदल बन है। नामकी इस निराशा-बादिनाका सबसे सुन्दर नमूना 'सिद्धिकमरी' क्या मैं उमरता है।

देवताअग्नि सिद्धिकमको बण्ड दिया कि वह निरन्तर एक विद्यालय बट्टानको पहाड़ीकी चोटी तक पहुँचाय वहसि बट्टान अपने भारसे लुबकितकर फिर जाया करती थी। सत्योंने डीक हो सोचा था कि निरर्थक और बेकारके सम्बन्ध बण्डकर दूसरी कोई बर्तकर सजा हो ही नहीं सप्टो।

सिद्धिकमको वह सजा क्यों मिली? होमरको यदि सही मानें तो सिद्धिकस घटीरवारियाम सबसे अधिक बुद्धियान् और चतुर था। वहा जाता है कि उसने एरोपसरी अड़को एजिनाके इरथक्य मेह बताया था। पुपिटरने एजिनाका अपहरण किया है...यह बात उसने सत्यके नामपर एजिनाके पिताको बता दी। और इस घयका बण्ड मिला अन्धपाटीका कारावास और बैकार परिश्रमकी भी-सोड सजा। बीचमें अपनी पत्नीके प्रेयकी पटीया केनर बहान उसने प्कनोसे एक महीनेकी छुट्टी मानी।

वहाँ सामान्य स्तरके लोग शक्तिके निबन्धा होकर सब कुछ करनेकी स्थितिमें
 नते हों हमें वही रास्ता नहीं दिया सकते बुद्धिका वहाँ ऐसा बतान हो
 चुका हो कि वह युवा और अत्याचारकी ही अपना उन्हें स्व मान के ठो
 हमें आत्मनिपेक्षके बख्तर हो उही अपन जीवन और मरणाकी प्रतिष्ठानकी
 बचानेका प्रयत्न करना होगा । इनके लिए मैं सैद्धांतके प्राप्तिके भी समझता
 हूँ । वह धार्य है, चोट खाकर ही अहित अन्यायके पीड़ित पर पूरे बोझके
 ताब न्यायके लिए प्रयत्नशील बिना समझ और तर्कके अपन कृतित्वके प्रति
 आस्थावान् तथा पीड़ा और सोचके बीच बिहीर्म—एक धार्यके अपने
 अहित व्यक्तित्वके बीच भी ऐसी कृतिविके सृजनके लिए बुद्ध-प्रतिज्ञा बिना
 वह तर्कके साथ अपने युवकी बिनाआत्मक प्रवृत्तियोंके बीच लड़ा कर सके ।

कामुन न केवल व्यक्ति-स्वातन्त्र्यकी रक्षाके लिए अपनी कृतिविके
 अनवरत प्रयत्न किया बल्कि उसने मुझ भी नाजीवादके विरुद्ध अपने देशकी
 आजादीकी रक्षाके लिए लड़ाई लड़ी । अबापकी आजादीके कट्टर शत्रुवैले
 क्यूते हुए उसने जा आत्मक प्राप्त किया उसीके कारण वह निर्भीक
 होकर वह वह अल्प विरुद्ध अधिकतम मालवोंको एकजाने मुकम
 बाचना सैद्धांतका अधिक दर्शन है । बासना और असत्य हमेशा असत्य
 पैदा करते हैं इसलिए हमसे हमारा कभी समझौता नहीं हो सकता । इस
 लिए हर सैद्धांतको वह दो प्रतिज्ञाएँ बार रक्ती चाहिए कि उसके विषयमें
 हम जो कुछ भी जानते हैं उसके लिए मूठ बीतकैत विकृत इन्कार करना
 और अत्याचारके विरोध बाहे वह किसी भी तरहका हो औरपर
 आबाद उठाना ।

कामु अपनी इस प्रतिज्ञाके एक बार अवश्य फिर गया जब उसने
 आजीरिमाई अन्तर्गत स्वतन्त्रताके लड़ाईमें अबापका साथ न देकर अपने
 देशके स्वतन्त्र अधिकारियोंकी द्विबाध की । उसने एक सचु अत्याचारके लिए
 बृहत्तर अत्याचारकी विचारित कर दिया । कामुकी वह कठोरी उसके प्रया
 संके नममें हमेशा चुभती रहेगी ।

जोसम-भरी जिन्दगीका 'मातादोर'

हेमिरवे

कितीने कहा है कि मृत्यु जिन्दगीका भारना है। यह बात इतने बड़ी कम्से घाबर ही किसी अन्य व्यक्तिके बारेमें बसा होती है जितना कि हेमिरवेके। कठोर परिश्रमसे तथा हुमा घरीर समझे बबड़े कड़े-कड़े तीखे बालोंसे घरा बेहूरा चौड़ा बकला मुरे बालोंसे बिरा सीना—मृत्युसे सेकनेबाला एक ऐसा बीकानी उसके तमाम उपन्यासोंका नायक है। और कोन कहता है कि कहानोकार अपने पात्रोंमें नहीं जाता। कभी उसने कहा था कि प्रत्येक कहानी जो बीसठते अधिक खींची जाती है, मौतमें समाप्त होती है, और आज हेमिरवेकी जिन्दगीकी रंभीन धीर्मपूर्ण साइसिक काबलि भरी कहानी जो पिछके पाँच-साठ बपोंसे बनावरयक रूपमें उसके न बाहूते हुए भी खींची जा रही थी—मौतमें समाप्त हो गयी।

२१ जुलाई १८९८ ई० में इलिनोइसके एक डॉक्टरके घर यह पैदा हुआ। पिता मरीजोंको बिकिरमाये बचे हुए समयको धिंकार और मछली पकड़नेके काममें गुजारा करना था और उसने एक उशर पिताकी तरह अपने पृथकी भी जीवनकी कठिनाइयोंसे जूमने और मृत्युकी तिसरी उड़ानेकी पूरी धिंका बो। प्रथम विश्वयुद्ध में सड़केन सड़ाईकी अगली पाँचक सेनिककी जिन्दगीकी तमना बाहिर की तो बाँसक कमजोरी बुनि बनकर उसके पैरोंसे लिफ्ट गयी। पर यह दुर्बलताओंके सामने भाबा टैकनेके त्रिप पैदा ही कर हुआ था। उसन रेड क्रॉसको वरण की और इटलीकी सड़ाईके बुहिनार जा पहुँचा। सड़ाईमें जमे हो महान् कुरतकार दिके—एक यह

समझकर साध करते समय कारतूतके घूट जानेसे उसकी मृत्यु हो गयी । जैसे कि शिम्बरीमें बसे ही मृत्युमें कठोरता बोधम-प्रियता और सहृदयता उसका साध न छोड़ा ।

१९२६ ई में जब हुमिन्नेका पहला उपन्यास 'क्रिमेस्टा' प्रकाशित हुआ तो उसने अपनी रचनात्मक शक्ति की आकाशक भाषा और अक्षरों के बेनेबाजी मायताओंके बलपर जिसमें माधुर्यका एक कण भी रहने देना वह गुनाह समझता था बालोचकोंको मानो पूंसे मार-मारकर अपनी ओर आकृष्ट किया । मुठके परिवेशमें जिससे उपन्यास 'ए फेयर बेक टु द आर्मिड ने तो उसकी बेमुरम्भत सीलीका सिकता ही जमा दिया । जीवन कितना बड़ा परोसा-स्वप्न है । इसमें बड़ी ओतता है जो इसके ऊपर निष्ठा समता प्रवृत्तन सम्पत्ता और शराउरके बमझीके परदेको फड़कर तकमें विद्यमान वास्तविकताको देख पाता है । विविध व्यक्ति समाज और राष्ट्र दोनों ही अपनी स्वाधुतिके लिए इस सामाज्य व्यक्ति-वृत्ताको एक प्राणहीन मशीनकी तरह इस्तेमाल करना चाहते हैं । इस बोधनकी कड़ाई-सीधी अनुभूतिवाँ उसे निरन्तर सीखा बनाती नहीं । वह एक निर्मोही व्यक्तिकी तरह समाजके भीतर रहते हुए भी मध्यमके बाहर होता गया । कड़ाईके शीराममें उसे जमा कि कड़ाई-सीधी नहीं थी बलु बुनियामें कोई नहीं है । किन्तु कितने आश्चर्यकी बात है कि इस कड़ाईको जामड ठहुरनेके लिए स्थित व्यक्तिप्रार्थीके लोभ ऊँचो-ऊँची बातें करते हैं इसे आदर्श सम्पत्ता और मानवताकी रक्षाके नामपर अनिबाम वस्तु मानते हैं । इन उपन्यासके अरिज छेडरिज हेनरीकी कायामें जैसे लुब बैठकर हेमिग्वे ही विस्मय डठा 'अकिरान पण महत्त्वपूर्ण बोधन...हूँ...'ने शरद बिलकुड अचहीन है फरेज है बोका है...मे मुठमें शोके बागबाने अनुज्योंको लिई ठमनेके लिए ही इस्तेमाल क्रिमे बाते हैं... । यह सब जानते हुए भी वह मुठमें शोका तो नहीं गया मगर उसकी बोधम-प्रियता उसे बजाव् वहाँ खींचकर ले गयी और जब वह चलन गया तो उसे भी वह सब कुछ

बढ़ते अन्वकारमें निरन्तर सोचता रहा 'कैवलीन'—'बेचाटी मोल्लो बाकिना'—'मेरे हृदयको मड़कन केट । आज तुम्हारी बीड़ाका जन्त नहीं । हम दोनोंके सहवासका यह पख मिसा है तुम्हें—'जमा एक दुधरेको प्यार करनेका बहो परिणाम होता है । यह बहुत-बहुत म्वाकुल हो जाता है । जबकी मृत्यु तो जैसे जैसे पापक ही कर देती है किन्तु यही प्रेम उसे एक दिन बहुत पन्वी बीब माजूम होता है । 'दु हैब बार हैब नाट में जती प्रेमपर बीजकर यह बीबज्ज पड़ा 'यह प्रेम बहुत बड़ी बीब बी बी न ? मैं तुम्हारा बोस्त प्य—'प्रिय था' चुप करो—'यह प्रेम भी बीली ही पन्वी बीब है, झूठ करेब । यह प्रेम कुनैन है, कुनैन है—' कुनैन है कुनैन है । मैं इससे कही बहरा न हो पाऊँ !

हम उसको बीनसाइटसे बिड़कर उसे बहुत क्रूर, निर्मम अलम्प तक कह सकते हैं । यही कहा भी बहुतोंने मगर किसीने सायब उसके मनके बन बाबोंको देखनेकी कोपिय ही नहीं की । ए फेयर बैल टु व जामु ल' में उस प्रेमपबिकन बहा था 'हमारे बीबनका सुनापन सवाके लिए हमसे विदा ही चुका है' एक मनोसा जामन्य बीर उत्पान्—'।' दुधरी सुबहु बटकर उसने देखा था कि तुमकी किरबें किड़कीसे म्बरेमें झीक रही थी—'कंकरिके रास्ते बुयोधी क्तार' और लीकके किनारे एक पत्थरकी बीचार' झीकके बस और एक दुधरेसे पुड़ी हुई क्वंत्-मृंषबाएँ—'और लीकके नीले पत्थरपर बिरकर्ता हुई सुर्न-रविमयो । यह लड़ा-लड़ा मृग्यमाथसे निहारता छल । ज्यों ही मुझा तो देखा कि कंटेकी नीब हूट चुकी है—'और वह उसे ही देख रही है—' बड़ी म्मक्ति इतना लीसा—'इतना तल्ल ज्यों ही गया कि उसने प्रेमको बापकपके पीछे लटकते परदेकी लख पन्ना कहा ।

हीनती चरना है, "मनुष्य कितना एकाकी है कितना डटाबना है यह एकाण्त । मनुष्य इन डटाबनेपनके बिबद्ध मरि अपनी निर्बीकताका परिचय देता है और उसकी निर्मयता सिर चठाली है तो बुनिया उसे पीने नहीं

योञ्जानाएँ साँपके पेटकी तरह लीच रही हैं पर पिछके म्यारह वर्षोंमें कुछ
 ऐसा नहीं हुआ जिसको बाधा जमाने भूखी बनता नेताओंकी अयकारसे
 बाकाय दिखाती रही। समय अज्ञान्यार मोटी तगइबाहूँ और सन्धे भले।
 मिछा पाचना आँके बगले और जगताका पेट काट-काटकर जारी भारी
 बाँधोंका निर्माण किया जा रहा है पर किसीमें लकड़ीके पट्टे सब जातेते
 किसीमें प्रकृत तरहके सामान उभ कामसे छिद्र हो गये—मयाजक छिद्र।
 वह छिद्रान्धेपन नहीं है दुःखकी बाहरके छिद्र है वे जो रोज अपनी
 संख्यामें कुली-बोपुनी बुद्धि करते जा रहे हैं। वे छिद्र अपने ही लोभसे
 बनाये हैं क्योंकि उन्हें जनताके दुःख-दर्दके कोई मतसब नहीं उन्हें तो
 अन्नतर चाहिए और ऐसा अन्नतर शायद ही कभी जामे। बाँधियमें पड़े
 परिवारमें आँके पलसे जो लवलील ऐम्बाशी जानी है, वह स्वस्व परि
 वारोंमें कभी बिछामी नहीं पड़ती।

'दिनकर ने दिल्लीपर एक कविता लिखी है बड़े मुस्तेमें। रेबानी
 नगरकी बाँधनी रातोंमें समयानकी चोखारें नहीं बर्हुँबती। उन्हेंनि जन्ममें
 कहा

बलते हैं तो वे गाँव देश के बला करे
 आराम मयी दिल्ली अपना कब छोड़ेगी
 या रक्सेगी मरघट में भी रेहमी महल
 या भौंधी की लाकर पपेट सब छोड़ेगी

वह जालके 'उरउम्पूअरि'की पबइाहूट है, तो औरोंकी क्या हाकत
 होपी !

वे जो दिल्लीके पिछके लोये इतिहासकी ओर देखता हूँ तो एक अजीब
 दर आत्मत्यागि और बहुतउसे दिक भर जाता है। दिल्लीका उलन काउर
 की नाव है जो इनमे बिनाक वह परिनिपतिबोकि अयकर भँवर-आलयमें विष्ट
 बिना रहा नहीं। जताका ऐसा अयकर केन्नीकरण—बन्ध व्यनिबोकि
 हायमें सम्पूर्ण देश छिप्टकर रह गया है। और जिस देशमें इस प्रकारका

पड़ना और उनके बच्चेसे कई मध्यमोंकी शिक्षकोंके सीसे टूट गये ।

मह जाँची है—जाँची नहीं उसकी भूमिका । मैं अपने प्रयासक मित्र-
के बहाने सबसे कहना चाहता हूँ कि मित्रो इस जाँचीमें केवल खोजने
की ही आत्मरत बृद्ध हो गयी उसमेंसे बनीबेक-बनीबा बच्चकेके पैरमें
जानेवाला है । समयमें आकर बलाबा जब कुछ न बचेगा । जब अनुप्य
नहीं रहेगा तो इसकी बात कीरी बकवास है । इस बारका पृष्ठ वह
महानारण्य है जिसमें हारनेवाला ता नष्ट होया श्री अंतमबाका भी बरछने
गसे बिना गयी रहेगा ।

बहुता सामाजिक गैरत इस जाँचीके बिहूँको देखकर चिन्तित हो गया ।
'कुल' मैनजीनमें एक अन्तर्जाती कपी है जिसमें रसेलन करा कि कस्तके
प्रधानमन्त्री निकिता का रसेल और अमरीकी राजसचिव बसेल दोनों ही
राजस प्रतिद्वन्दी है जिन्हें अपनी मिथ्या कीतिके जाने कुछ नहीं रियायी
पड़ता । ये दोनों महानुभाव अपनी अन्त नीतियोंकी सीमाओंसे ऊपर उठकर
अनुप्यताके बिनासके उत्तरेको गयी बस करते । जनेवामें अन्तुसकिके
कान्तिमम प्रबोधोंपर होनवाली वैज्ञानिक परिपद्में विष पैदा हा गयी और
सम्बन्धन बीच ही में बन्द हो गया ।

अन्तु-गरीबसे उत्पन्न उत्तरेकी जाँचके लिए नियुक्त राष्ट्रसंघीय वैज्ञा-
निक परिपद्ने जो वैम्पलेट छाया है उसमें बालूम होता है कि रेडियोबकि-
यताका बचाव दिनों-दिन बढ़ रहा है और वायुमण्डल अंततसे पयाग दुपित
हो चुका है ।

आप पूछेंगे यह तो सुना पर इनका भ्रान्त और साहित्यकारके क्या
सम्बन्ध है ? मैं भी पूछना हूँ इसका भ्रान्त और साहित्यकारके क्या
सम्बन्ध ? मेरी समझसे सम्बन्ध है और बहुत पतरा है । मैं भ्रान्तकी उप-
योधितापर विचार नहीं करना चाहता । मैं जानता हूँ हिन्दीके बहूतेरे
साहित्यकारोंके मनमें इन आन्दोलनमें कोई आकर्षण नहीं बनाया है ।
इमें इन आन्दोलनकी व्यावहारिकतापर पूरा भरोसा नहीं । हिन्दीके एक

रैल्वका उपाख्यान आता है। आनभुति राजा इतना बर्हकारी हो गया कि उसने सोचा कि सारा विश्व उसीके सहारे कायम है। उसका प्रताप धु-धोकाकी तरह बढने लगा। एक बार क्रिस्टोके पाससे गुजरते हुए वो बात्रियोमें-से एक बोला 'अप डूर हटकर बको। देखते नहीं आनभुतिका तेज बान्नीकी तरह प्रज्वलित है, कहीं तुम इससे बल न आओ।

उसका साथी बोला 'क्या आनभुति का तेज पाड़ीवाल रैल्वसे भी ज्यादा प्रबल है।

उबा तमतमाया रैल्वके पाम पहुँचा। उसन अतुसिन्न सम्पत्ति और बनको सामने रखकर कहा 'आप इसे स्वीकार करें और बतायें कि आपका प्रताप इतना प्रबल कैसे है? रैल्वने उनके घनपर ठाकर मार बी और बोला 'सूइ क्या तू मुसे अपनी सम्पत्तिसे खरीब कैना। तू समझता है कि तू ही विश्वका नियन्त्रा है। मूख सभी भूनामें व्याप्त उस एक शक्तिको ओ नहीं पहचानता उसका विनाश अक्षयम्माधी है।

मेगसेसे पुरस्कार मिला है विनोबाको कम्युनिस्ट मिशनोंको इसन बब्रानको आवस्यकता नहीं है। विनोबा सम्पत्तिसे नहीं खरीबे वा उखते। वे बिक भी बायें तब भी मूदान नहीं बिकेवा। उनके पोछेका बर्णन नहीं बिकेगा।

मे व्यक्तिके बारेमें कुछ कहना नहीं चाहता। विनोबामें बह शक्ति हो भी सकती है नहीं भी हो सकती। मे ता उन हजारों विनोबाबाक बारेम कह रहा हूँ ओ विश्वके प्रत्येक कोनेमें है पर जिनको आबाज कोई नहीं सुनता। क्यों? क्योंकि उनके अन्दर बह शक्ति प्रस्फुटित नहीं हुई अितनी आवस्यकता है। बह शक्ति बनता दे सकती है। शक्ति परवरकी मूर्तिम नहीं होती। पुजारीकी अग्रामे होती है। विनोबा ओ निमित्त मात्र है उदाहरण है। साहित्यकार उस शक्तिका श्रुति है मन्त्रदाता। साहित्यकार जब इस प्रकारके व्यक्तिके बारेमें सोचैवा मनुष्यताक आसे आनल मकरसे उसकी रया करनेके लिए जब बह कटिबद्ध होना तो ऐने

शंकापुत्र बनाम अनास्थाके बेटे

आम तीरसे समूचे नये साहित्यके विषयमें और सास तीरसे नयी कविताके विषयमें एक बात यों सुनायी पड़ती है 'शंका अनास्था और कुष्ठाका साहित्य। अन्धन्मा तो सब होता है जब प्रायः निश्चित परिपाटीकी प्रवृत्तिमूच्छक आलोचनाका सृजन करनेवाले आलोचक बिरादरीके उन रचनाकारोंपर भी इस बातका प्रयोग करते नहीं हिचकते जिन्होंने नयी कविताकी धौलीको मोजू सम्झकर अपना लिया है। वे समीक्षक नये साहित्यके विषयमें अपना क्लेशका सुनाकर कुछ इस अन्धाबूते परबन घटककर मुसकराते हैं योया कह रहे हों कह दिया न माने नहीं आक्षिप्तको कहना ही पड़ा। दुर्भाग्यवश हिन्दोका केवलक ऐसा अहितावादी बीच है कि वह ऐसे क्लेशकेर कुछ न कहते हुए आत्मन्मानिसे परबन मुक्य भेता है।

अससमें यह सारो कठिनाई, सज्योंके जन्त इस्तेमाक वा कि ठीक अब न जाननेके करण हुई है। शंका और अनास्थाको न केवल सपुमार्य बोधक बना लिया गया बल्कि उनके विभिन्न पक्षुओं और सम्बन्धितगारी अर्थ-भेदको भी भुलानेकी कीघिष की पबो है। एक व्यक्ति यदि किसी पवार्य या भावस्थितिके प्रति टंका रखता है तो इसका अय नहीं कि वह अनास्थाको प्रभय देता है। इस अवाचित स्थितिके कारण साहित्यमें एक ओर अन्धन्मा समीक्षाको राधि एकत्र होती है और दूसरी ओर केवलक स्वत्व और आस्थावातुका प्रितान पालके निमित्त पेटेष्ट समाचारोंको अपनी रचनाके अन्तमें पूँछकी तरह जोड़ना आरम्भ कर देते हैं। आजके समाजमें जब कि अचन दिनपर-दिन अधिक उलझनसे बिरदा था रहा है तित

नहीं करते कि हम समझे कर रहे हैं। हिम्माका अस्तित्व कठक अस्तित्व
 का परिणाम है। इसलिए नूँकि मैं समझे करता हूँ इसलिए मैं हूँ। मैं
 सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ। मैं जितना ही संका करता हूँ उतना ही सोचता
 हूँ और जितना अधिक सोचता हूँ उतना ही अपन अस्तित्वके बारेमें मरा
 विश्वास बढ़ता जाता है (Je pense donc je suis) देकलने पदुम्ने
 बार दर्शनको प्राचीन आचार्योंके असाधारण ज्ञान और मध्यकालीन शार्प
 निकोकें नीति-शास्त्रीय आचारसभसे निकालकर व्यावहारिक अस्तित्वपर
 प्रतिष्ठित किया। एक कल्पित महत्तम सत्य (ईश्वर) से व्यक्ति सत्यकी
 ओर नहीं बल्कि व्यक्ति सत्यसे महत्त् और महत्तर सत्यकी प्राप्तिकी ओर
 प्रेरित किया। सत्य यदि प्राप्य है तो व्यक्तिकी सीमित साहिका-शक्तिसे
 माध्यमसे ही प्राप्य हो सकता है हाकिंकि वह सत्य सुदमें व्यक्तिसीमित
 नहीं होता। वस्तुतः अपने सत्यको जो जितना अधिक व्यापक सत्यका रूप
 दे सके वह महत्तम सत्यके उतने व्यापक अंशको समझनेमें समर्थ होता है।
 अनास्था इससे ठीक विपरीत है। किसी क्षेत्रमें अनास्था न होना
 अनास्थाका अनिर्धार्य भाग है। कोई व्यक्ति समाजमें अनास्था नहीं रखता
 पुछनी परम्पराओंमें अनास्था नहीं रखता ईश्वर और ईश्वरीय विधानमें
 अनास्था नहीं रखता न सही इतने मात्रसे उसे अनास्थावान् कहना उचित
 नहीं होया। संकाको साधनके रूपमें नियोजित करके बहुमूले इरमुकी और
 प्रेरित सत्यान्वेषी भी किसी क्षेत्रमें अनास्था नहीं रखता जबतक कि अनास्था-
 के एक निदिष्ट आचारकी सोच नहीं कर केता उसे अनास्था केवल एक शोक
 में होतो है यानी ई में अपनम। अनास्था उसे कहेंगे जब अपनेमें जो
 अनास्था न रहे। अनास्थावान् व्यक्ति वह है जिसे सुद तकमें विरवात नहीं।
 और यह स्थिति निस्सन्देह नूँजित और निम्ननीय है। इसलिए केवल कुछ
 अनास्था या निरपना-मूषक परिस्थितियोंके आधारपर किसी व्यक्तिको
 निरपनाकारी या अनास्थाहीन कह देना ठीक नहीं। साहित्यमें तो यह निश्च
 और भी ब्यादा घातक हो जाता है क्योंकि केवल अपनी रचनामें अपन

अन्वेषणर कामू वह मानते हैं कि वह जीवन अत्याधिक और अभिनिश्चिता स्थित हुए हैं। इतत अन्वेषणको मान सैनेके बाव मनुष्य अपने लिए शार्पकता पैदा करता है और अन्तमें अपने नामका लुप्त निर्माता बन जाता है। कामूमें किस परिस्थितिमें इस सत्य वा तथ्यको स्वीकार किया यह अपने 'बोरेक माइज' भाषणमें स्पष्ट हो जाता है। 'अन्वेषण मैगजीन'के अन्वेषणमें उनके भाषणका अंतरेजी अनुवाद किया है।

कामू निराशावादी नहीं हैं और न अनास्थावादी ही क्योंकि उसे अन्वेषण विश्वास है अपनी कलापर विश्वास है। इतका सकुण उद्यमी रचनाएँ हैं। जैसे अन्वेषण वाली और सिद्धिफलकी कला कामूकी शक्ति-के सूत्रक है। अन्वेषणमें ऐसे क्षण आते हैं जब मनुष्यकी आस्था टूट जाती है, विश्वास भंग होकर डूब जाता है वर मनुष्यकी अन्वेषण विज्ञानिया उसे निरन्तर हासल बेभागी रहती है। 'सिद्धिफल' आजके समाजमें दुबाराँ की संक्रामे किस आर्थेने अन्वेषण अन्वेषण शक्तिशास्त्रीके हाथका माथीव शिलोना बनकर रह नहीं है। समाज घामन-वादी अन्वेषण-वादी के मन्वेषण हाथ किसी व्यक्ति या देशका रीरते निकल आते हैं और हम कुछ कर नहीं पाते। मनुष्य अन्वेषण अन्वेषणके लिए संघर्ष करती-करते मर जाता है, उसकी आवाज सुनकर भी कोई कुछ नहीं कर पाता। 'सिद्धिफल'की देखताओंने दण्ड इतकिए दिया कि वह न्यायके न्यायका अन्वेषण था। दण्ड भी क्या? अन्वेषण अन्वेषण। देखता आते थे कि अन्वेषण अन्वेषण और कोई दण्ड नहीं है। अन्वेषण-वादीमें भारी अन्वेषणको डकककर पीटी तक के बाग। पीटी तक पहुँचनेके पहले अन्वेषण सुनकर जाती और 'सिद्धिफल' उसे फिर ऊपर डककना पुन कर देता है। बीचमें एक मासकी लुट्टी लेकर वह अपनी पत्नीका प्रेम आँसुने बना तो अन्वेषणकी अन्वेषण सुनकर, समुद्र की कहुरोमें ऐसा बचता कि हाथियोंका दिन ही मूल बना—अन्वेषणके अन्वेषण अन्वेषण उसे शीघ्रकर पुन उसी अन्वेषण-वादीमें पौक दिया। वना अन्वेषण वा 'सिद्धिफल' का? पीटी व कि वह न्यायके न्याय वा उसे अन्वेषणके सुनते

अपने घर कामू यह मानते हैं कि यह जीवन अताकिक और अनिश्चितता
 छिपे हुए है। इस सच्चाईको जान देनेके बाद मनुष्य अपने लिए सार्थकता
 पैदा करता है और अन्तमें अपने भाग्यका मुद निर्माता बन जाता है।
 कामूने किस परिस्थितिमें इस सत्य या तथ्यको स्वीकार किया वह उसके
 'नोबेल प्राइज' भावनासे स्पष्ट हो जाता है। रुग्ण मीमडीनके अनु-
 बंधमें उनके भावनाका अंदरेकी अनुभाव छपा है।

कामू निराशावादी नहीं है और न अनास्थावादी ही क्योंकि उसे
 आनेपर विश्वास है, अपनी कक्षापर विश्वास है। इसका उद्युत उसकी
 रचनाएँ हैं। जेन अन्नमो बायी और सिधिकयकी कथा कामूकी अक्षि-
 के सूचक है। सिधियीय ऐसे जन्म जाते हैं जब मनुष्यकी आस्था जिन
 काठी है, विश्वास महत्तर बढ़ जाते हैं पर मनुष्यकी अन्तम जिजीविषा
 उसे निरन्तर डारम बीजातो रहती है। सिधिकय आरक समाजमें हाराएँ
 को सक्षम मिल जायेंगे जिनकी जिम्मेवो अक्षिवालीके हाथका नापीर
 जिसीना बनकर रह गयी है। समाज साधन-पाटी अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-
 वादीके मजबूत हाथ किसी व्यक्ति या देशको रीबते निकल जाते हैं और
 हम कुछ कर नहीं पाते। मनुष्य बेहतर जिम्मेवोके लिए संघर्ष करते-करते
 पर जाता है उसकी आवाज सुनकर भी कोई कुछ नहीं कर पाता।
 'सिधिकय'को देखताअनि दण्ड इसलिये किया कि वह म्यायके पद्यका समर्पक
 था। दण्ड भी क्या? अन्त अन्त। देखता जानते थे कि अर्थ अर्थ बड़ा
 और कोई दण्ड नहीं है। अन्त-पाटीमें मारी बट्टानको डकेलकर बोटी तक
 के जाना। बोटी तक पहुँचनेके पहले बट्टान मुड़क जाती और 'सिधिकय'
 उसे फिर ऊपर डकेलना शुरू कर देता है। बीचम एक नावकी छुट्टी सेक
 वह अपनी पत्नीका प्रेम जानने गया तो बरतीकी पग फूलकी गुणगु, सगुड
 की सहरोमें ऐसा लज्जा कि हाडिटीका दिन ही भूम गया—उधरसकके अन्दर
 पंजेंने उठे बीबकर पुन बली अन्त-पाटीमें फँक दिया। क्या अपराध था
 'सिधिकय'का? नहीं न कि वह म्यायके पद्यमें था उसे परतीसे पूजने

होना ही पक्का है- उनको बताती एक बहुत-बड़े विस्वासको बन्ध देती है क्योंकि पूजनेकी ताकत देती है। आलोचकका कथम्प है, हम बारीक अन्तरको समझकर भास्वा और बनाव्यामें अर्थ करना संका और निराशा का अन्तर बताता। सीधतामें आप ऐसे साहित्यका अनमानित करनेके लक्ष्यकी न बन जायें जो सहस्रों पीढ़ीके व्यक्तियोंके मनमें गरी उदासीको सहानुभूतिके साथ समस्त हुए उन्हें बोधकी सुधिसि बोझा बाधता है।



कते किमी और दोषमें आता चाहिए था । इस तरहके आलोचकोंके कई वर्ष गानी कुनमें होते हैं । राजरोजरने किन्ना है साहित्यिक सबसे बड़े अनु वे आलोचक हैं जो सद्-बसुका विवेक नहीं रखते । इनके भी कई प्रकार हैं । अरोचकी सतुभाम्बवहारी और बसरी । अरोचकी समालोचक वे हैं जिन्हें बन्धनेसे बन्धी रचना भी नहीं बंधती । स्वानाबिक अरोचकता सैकड़ों संस्कारोंसे भी दूर नहीं की जा सकती । बिल प्रकार कि किठनी ही-बार ओपबिर्वा-श्राय संस्कार किये जानेपर भी रचिकी काकिमा नहीं मिटती । सतुभाम्बवहारी आलोचक नये नामुक होते हैं वे प्रत्येक वस्तुपर बाहे बह भरी हो या बुरी बाह-बाह कर बैठते हैं । इस प्रकारकी आलोचना प्राय मॉण्डियोमि बेहाबोते ब्यक्त हुमा करती है । मत्तरी आलोचक ऊँचीने-ऊँची रचनाको भी पतन्व नहीं करते । डिप्राम्बेपन ही उनका धर्म है ।

आलोचक कोई बाहरसे आमा हुमा प्राची नहीं है । वह इनारे बीच ही है, यामी हमी है । इस प्रकारके आलोचक बननेकी प्रेरणाएँ कई तरहसे निकली हैं । वेधेवर आलोचकोंके बिक्र कर प्रतिग्रभी रचनाकारके आक्रमणका उत्तर देनेके लिए या सम्मानप्राप्त कुबुर्त साहित्यिकोंको धकिमाने या उनका पगती उन्नात्मिक निमित्त रचनाकार आलोचक का नामा पारय करता है । उपनामके छिबी नमी आलोचनाबिक विरोधमें इतर काजी कुछ रुडा पया है । उपनामके सिखता बुरा नहीं है । उदा इरचके लिए, यदि कोई उपनामस आचक पास एक पन सिखे कि बन्धु, आपका स्वास्थ्य बहा पिर यवा है बहुरा बिरुत है मानस मलिन । देननते बुना हीठी है । आपकी जो रोप हुमा है उसे मे बानज है दबा वह है उपचार करके देखिएवा । आप बस ब्यक्तिसे बकर नाउज होने क्योंकि वह कुछ बुरी बातें बिल आप टिपाते हैं बाल रडा है । नर यदि उपमूष उसकी बजाबी दबाते आप स्वस्थ होते हैं तो यय आर ऊपरने न छोड़ी बीउरसे उसके प्रति कुतब नहीं होते ? किन्तु यदि उपनामके

बन्ध करकेका प्रबल करते हैं। किसी एक व्यक्तिसे बिड़ें तो उसके विरोधी बन्ध सौम्यके साथ हवारी स्वाभाविक होती क्रमम हो जाती है। ऐसे बन्धुभावितके द्वेषी साहित्यकार बन्धु मौके-बेमौके प्रत्येक सम्बन्धमें विचार विमर्श वा किसी अन्य सेविचार आदिमें अपने स्वस्त अभिप्रायोंको काटती मुक्तता बढ़ाकर प्रस्तुत करते रहते हैं। कभी-कभी बन्धु (बैसा वे समझते हैं)-पक्षीय दलमें फूट डालनेके लिए कई हल्कपट्टे व्यवहारमें आते हैं। जैसे एक कहानीकार वा किसी कहानीकारोंको इच्छा मष्ट करकेके बन्धुवैसे यों पैतरेबाबी करता है। एकसे विचारेपर कहेया "भाई तुमने तो वो भार मास्टरपीठ भीजें सिधो भी हैं पर वो तुम्हारे बोस्त" और अब बोस्तमें मिले तो ऊपरकी बातें ज्योंकी-त्यों दोहराकर कहेया सब कहता हूँ भई तुम्हारे तो कुछ भीजें हैं और खेरी पर उन साहसको तो तुम हाथिज ।"

मेरी समझसे वह साठी पढ़बड़ी मैं और इबके इस अव्यंकर विपर्यायके कारण हुई है। पानीकी लहरपर तैरती हुई लहरमें बिठना बार-बारबा है लठना लकमें नहीं। क्यों ? क्योंकि पानीके झारकी लहरें, लहरें पड़के हैं पानी बारमें। लहरोंका पानी नहीं होता पानीकी लहरें होती हैं। लहरपर तैरनेवालेके लिए चारता बन्ध है, येन सीमित है, पाब अवकट है, बन्धु-बुल्की है, इधीलिय सब जगह मतिरोध है। किन्तु जो लहरसे लककी ओर बन्धु है उनका रास्ता बिध है बूबनेका मजा अकहदा है अनुभव बल्ल है उपलब्धि अरुण है। इधमें तो अदरोध नहीं है, न मतिरोध न मतिरोध। इस लहरकी विचितीमें पानीकी मर्बादा सर्वोपरि है। मैं और हमके भीतर इती एकठाली मर्बादा समानबन्धिता होनी चाहिए।

आप बहोसे यह सब तो है पर जनाब आप कीन पूबके पीबे हैं जो बीरहरसे यह उपदेश सुनावे बले हैं। दुपरा बोबा नहीं हूँ इतलिय, बन्धु, इस विचयका पीबक मैं और इब है। तुम वा आप नहीं।

मरना करनेका प्रयत्न करते हैं। किसी एक व्यक्तिसे बिड़ें हो उसके विरोधी बन्धन कोनेके साथ हमारी स्वाभाविक होती कामना हो जाती है। ऐसे असूयावृत्तिके हेतु साहित्यकार बन्धु सीढे-बेसीढे प्रत्येक सम्बन्धमें विचार विमर्श या किसी बन्धु सेमिहार आदिमें आपने ध्यात अधिप्रायोंको काफ़ी मुताय्या बढ़कर प्रस्तुत करते रहते हैं। कभी-कभी बन्धु (बीठा के समझते हैं)-पसीब दलमें पूट डालनेके लिए कई इकठ्ठे व्यवहारमें आते हैं। बीठे एक कड़नीकार को विकली कहानीकारोंको इकट्ठा मष्ट करनेके मनसुबेसे बों पैठरबाबी करता है। एकठे मिलनेपर कहेगा 'घाई तुम्हने तो दो-बार 'मास्टरपीठ' चीबें लिखी थीं पर वो तुम्हारे बोस्त'। और एक बोस्तसे मिले तो ऊपरकी बातें ज्योंकी-त्यों दोहराकर कहेगा 'तब कहता हूँ भई तुम्हारी तो कुछ चीजें हैं और एही पर बन साहबको ता पूरा हाकिम।'

मेरी समझसे यह सारी बढ़बड़ी 'मैं' और 'हम'के इत बरबकर विपरीतके कारण हुई है। पानीकी सतहपर तैरती हुई बहुरोमें बितना घोर-घराबा है उतना तलमें नहीं। क्यों ? क्योंकि पानीके ऊपरकी सतहें, सहें पहेके हैं पानी बामें। सहुरोंका पानी नहीं होना पानीकी सतहें होती हैं। सतहपर तैरबेबालेके सिव्य रास्ता बन्ध है, क्षेत्र सीमित है, मार्ग बबक्य है बक्य-बुकी है इमीकिर सब बबह बठिरोब है। किन्तु जो सतहसे तलकी ओर उग्य है उनका रस्ता सिव्य है बुरबेका मजा बबहुरा है, अनुभव बलम है उबलमिब बलम है। इसमें तो बबरीब नहीं है, न बठिरोब न बठिरोब। इत सतहकी बिकठिमें पानीकी मर्यादा सभोररि है। मैं और हमके भीतर इही बठताकी मर्यादा समानबमिता होनी बाहिर।

आप कहेमें यह सब तो है पर बबब आप कील बुरके बोये है जो बीरहुरेंसे यह बबरेब सुनाने बते है। बुरका पोथ नहीं हूँ इयकिर बन्धु इत बिकठका बीपक मैं और 'हम' है। तुम ना आप नहीं।

मैं क्या हूँ

और उससे एक दिन उसके निम्ने पूछा “आपने आज तक कभी अपना परिचय नहीं दिया आखिर आप कौन हैं ?”

‘मैं क्या हूँ हूँ’... और वह भाषा पकड़कर यों बैठ गया जैसे कहीं कोई गलत टूट गयी हो।

बिना बचकाकर उसका हाथ पकड़कर बोला ‘क्या बात है, यह बरेसामी कैसी

सांघनिक बसकी और हलका-बलका टाफ़ठा रह गया एककर बोला ‘बड़ी सवाल तो मैं भी अपनेते करता रहा हूँ मगर आज तक मुझे कोई उत्तर न मिला।

मैं भी चाहूँ तो इस सवालपर इसी तरह हलका-बलका होनेका खतिमप कर सकता हूँ चाहूँ तो अपनेको बहुत बरेसामी कर लूँ, पर मैं जानता हूँ कि इससे मुझे झूटकारा मिलनेका नहीं। क्योंकि मैं सांघनिक नहीं हूँ केवलक हूँ और मेरे लिए इस तरहका खतिमप करना कुछई असम्भव है। मैं जो हूँ वह बडाना ही पड़ेगा। अपने लिए नहीं तो उन अनेक लोगोंके लिए जिनकी ओरसे आज-कालकाल मैं तानीके स्वप्ने छड़ा कर दिया गया हूँ। जिनके बारेमें मैंने कभी कुछ कहा है, वे हाथ जटा-जटाकर, पसल काड़-काड़कर पूछने आखिर हवारी ओरसे आप अब बचान कपी नहीं देते। जिनसे बहुत तो आपने हमारे बारेमें जो मतमें आया सब दिया अब अब बीछेवर बचान देना पड़ा तो कतराने कमें—ठंड बीधी कुन-कुन-कुन मरी आच्छेय चिकवा म्पनि हिकारत-बरी नामा रंन और स्वरकी आच्छेयोंका एक बचकर आरकेस्ट्रा—मैं उचनूच बचकाकर कन

वस्तु मानता हूँ और इसकी बेदीपर बैठकी मूख और प्यासको ऊरबाग
 करकेका उपदेश देता हूँ। मैं भी जानता हूँ नहीं, कि प्रेम और खरीरकी
 मूख एक-दूसरेके विरोधी तत्व नहीं हैं। अभी कल ही टी प्रसिद्ध भावक
 विज्ञानी डॉ. डेरियर एकबिनका प्रेम-दर्शन'पर भाषण सुना था।
 उन्होंने बड़े मजाझाने डंढसे कहा था कि किन्हे रिपोर्ट-जैसे वैज्ञानिक
 विवरणमें प्रेम नामक किसी घटनाकी खर्चा भी नहीं है जब कि सोरोटिनके
 प्राध्यात्मिक बाह्यमयमें प्रेमकी खर्चमें 'तकस' का मामूली डिक्र किया
 गया है। डॉक्टर एकबिनने काफ़ी खोर देकर कहा कि प्रेम और ऐन्द्रिक
 स्थापारके सम्बन्धोंका सही ज्ञान जाना जरूरी है। यह समझना सरासर
 एकठी है कि ऐन्द्रिक प्रेम किन्ही भी प्रकार निचले स्तरकी चीज है। हमें
 यह कमी मूलना नहीं चाहिए कि इनी ऐन्द्रिक प्रेममें मनुष्यको उच्चतर काम्य
 और श्रेष्ठतम साह्वितिक कामोंके लिए प्रेरित किया है—ऐन्द्रिक प्रेम स्वयंमें
 एक कला है, ऊँचोसे-ऊँची कला। तथा ममता और मनुष्यता इसके
 तत्व हैं।" किन्तु मर्दों बुद्धिसे किन्ही चीजको समझना-समझाना एक बात
 है, और बड़े जीवनके संघर्षोंमें सही रूपमें देखना बिलकुल दूसरी। यह
 प्रेम बिलकुल सुलभ और सहज है जैसे हवा पानी और धूप। किन्तु क्यों
 ही मनुष्य इसे पानके लिए हाथ बढ़ाता है उसे लगता है कि यह प्रेम
 नहीं पानीकी लहरपर नाचती एक झरना भी जैसे इस प्रेममें समा
 ममता और इतनाबिबलके नहीं मूख स्वार्थ और ईवाभियतके तत्व विद्याकी
 पड़ते हैं। और नहीं जब से प्रेमके ऐसे भँवर जालमें बड़ी घटनाओंकी
 छटपटाते हुए देखता हूँ तो घुब पावल हो जाता हूँ। मैं उन कोपानें
 नहीं हूँ जो किराछाकी हालतमें प्रमके कहलकी टोकर मारकर बचनाभूर
 कर देना चाहते हैं वे प्रेमके प्रमको दुनियाके दुनरे जर्मक दुश्मानें बुबाकर
 घुब हो जाना चाहते हैं वर मैं ही चाहकर भी यह नहीं कह पाता कि
 और भी घन है दुनियामें मनुष्यतके सिवा' क्योंकि मैं ही इस प्रेमको
 इतना ऊरती और धारितिक आकरयकठाका एक अंग भर नहीं पाव

मी आत्माकी निष्ठा नहीं छूट सकती । जब तक उसे माय है कि उसकी इस स्थितिके मूकमें पामतुष्य है वह उसे प्यार करके मी अपना नहीं सकती आकाशदीपकी चम्पाकी तरह, वह अकेले हीपमें सिद्ध बिसुलनेको ही अपना कर्तव्य मान केगी सब कुछ छूट जायेगी ।

'द्विज जापमें और उन लेखकोंमें छद्म बना हुआ आप तो एकाकीपनकी पीड़ाका किलबाड़ उड़ाते हैं उसे ऊँसत कहते हैं ।

'ओह तुम्हें भी प्यारसेबुझ आलोचकोंकी हवा बन गयी है । मैंने अकेलेपनका कभी किलबाड़ नहीं किया । मैं अकेलेपनके हरको घण्टिको उद्बोधक बस्तु मानता हूँ । पर यह बर् स्वाभाविक हो जीवनके बीचसे बनता हो तभी मैं इसके बरबादमें कुछ चढ़ा जाता हूँ वया तुम्हें मध्यम नहीं कि मैं बरबाद प्रेमी क्यों हूँ इसलिए कि उसके चरित्रमें एकाकीपन की भाव है । पञ्चालकी जगन्नाथ तभी इसी भावसे प्रदीप्त है । मुझे देखतेना नहीं मूकती नाचकिया भी नहीं । किन्तु बाह्य एकाकीपन स्थायी के रूपमें बना जाता है कहींही हाजतमें बैठकर सिगरेटके धुएँमें इस भावका लफावका उद्घाटन होता है, तब मुझे बैचक मुरा बनता है । तब मैं बल केता हूँ कि इस घस्मने घात और काबूका क्रियान तो लीया है उनके एकाकी चरित्रोंकी जगन्नाथको छू नहीं लफा है ।

मूर्खों बुन हो गयी । और उस बीड़में एक घण्टे के लिए बंधे छाबीयोका बरबा टंग गया । किन्तु बुलरे ही जगन्नाथमें इस परदेको निर्ममतासे चीरते हुए वो व्यक्ति भावे भावा उलझा बन मास्टर लुप्तभास्मने मिलता-जुलता था । किन्तु घरीर काफी दुबला-पतला हो मरता था और नाक थोड़ी आँसुओं से भीगी थी त्रिपपर मोटे सीटोंकी ऐलक मनी हुई थी । वे लफाके चारते बकेलते भाये जा रहे और भाये ही बनाकर घण्टे बामने मुक कर दिये थे तो जगन्नाथ आपकी सीधा-साधा इतनाम समझता था । मरता आप तो अजब निकले । वया यह सब नहीं है कि आप बिनोबाजीके सिद्ध हैं ?' भास्मे 'भूशब और साहित्यकार' नामसे एक नज्दून लिखा है जिसे मैंने जगन्ना-

तो आप कम्युनिस्ट हैं नहीं ?" मास्टर मुझकमल बोझ बरम पड़े । जोर मुझे एक दानके लिए चुप देख उन्होंने बर्बसे सीमा कुशाकर पीड़की जोर बाँ देखा जैसे मेरा धारा परब्याध्य हो गया हो । उनकी नजर क्यू रही थी कि सब मोलके रस दिया अब कोई निस्तार नहीं ।

"आपने यह कैसे सीखा जनाव कि मैं कम्युनिस्ट हूँ ?"

'यह ऐसे कि आप अपनी कहानियोंमें इरीशोंकी तरफ़्तारी करते हैं उमीदारोंकी लिखा करते हैं उन्हें निर्बन्दी और मूर्ख दिखाते हैं बड़े लोभोंकी पगड़ी उल्लखते हैं कर्मियोंका विरोध करते हैं पुराने लोगोंकी लिखा करते हैं पापिक हूरमोंकी लिखी प्रकृतते हैं—"

'बस बस रहन मी दीभिए । आपकी लिस्ट काको कम्पी हूी चुकी है इलडाम साऊ है बेकिए मास्टर साइड अलकमें यह बाख्य बीब नही है, हममेंसे बहुतेरे लोप अपनी बुद्धि बेचकर पीड़ोंका लिख बिल्लाके आधारपर लपकनेके लिए विषय हो चुके हैं । वे मनुष्यताको टुकड़ोंमें बाँटकर टैखनके भावी हो चुके हैं । चायद वे भूल जाते हैं कि साहित्यिक सत्य और राजनीतिक सत्य मानव सत्यसे बड़े नहीं हैं । आजकी राजनीति की सबसे बड़ी छात्रिष बड़ी है कि साहित्यकार अपनी व्यक्तिगत छपित जोकर रंगीन चरनाके भीतरसे मनुष्यको जोर बस्तुओंको देखना शुरू कर हैं । यह बुरा नहीं है । चरमे कमजोर बुद्धिकाओंका उपचार करते हैं मपर अब यही चरमे सभी साहित्यकारोंको 'प्रक्याइव लिपे जाते हैं, तो छरेख साऊ होठ है । ये जिमी भी राजनीतिक संस्थाका विरोधी नहीं हैं मपर ये यह हर्पिनज नहीं मानता कि बिना बस्मके ये जोखोंको छड़ी ईबने देस नहीं सकता । मैं मनुष्यको उनकी समस्याओंका अपने बंपसे बेखना चाहता हूँ । उलकें दूरत हुए अणुबैयकिनक सम्बन्धोंको अपने बंपसे जोरना चाहता हूँ । इस बिषामे चलते हुए मुझे कोई कम्युनिस्ट कडिसेही स्वप्न जो भी लपकना चाहे लममें पर सत्य ही बही है कि मैं सिर्फ़ उल बाटींका सरस्य हूँ कितके आगने मनुष्यके बड़ी कोई इकाई नहीं है । मनुष्यतासे बड़ा कोई

ज्ञान । आपकी सुनकर अबन्ना होमा कि माय भौतिक तथा नास्तिक
 छासतवाके देशोंमें 'टैलीपैची'पर छोज करने का रहे है । किसी चीजको
 बुझना मानकर उससे कतरानेकी कोषिय करना बकाबक है । और जान
 तो हम आधुनिक बननेके मोहमें अभ्यारम ईस्वर, परलोक आदि धर्मोधि
 करने लप है । अब कबो मो स्वास्मका सूचक नहीं होया...और न
 प्रवासे डरकर पबभ्रह हो आगा पैर्वका । ऐसी हानतने पराधनित राज
 कर्म आदिका नाम हमें पुरातनतत्कारका ही पराव श्ठीत होने लमा है ।
 किन्तु नाम इव चीजोंके समझनेकी कोषिय कोषिय, इनके नाम और
 सेवसे ही शोककर नाक-सी मत तिजोडिए । मनुष्यका जीवन बहुत स्वापक
 है । उसके सब और धनकी धनितमा अत्यन्त अभाव है । उसकी इकाईने
 केनित ज्ञान विज्ञान चाव-बनुभाबकी बहुरी अनेक दिवन्तम्बापी अनन्त
 धनितमोंकी बाह्र मेना साहित्यकारका परम धर्म है । यह पुरातनताभाव
 नहीं वैज्ञानिक आधुनिकताबाव है । आधुनिकता कुछ चुने हुए पदावैका
 नाम बिना देने-मरते नहीं आती आधुनिकता विरन्तर विरसमान मान-
 बतार्क प्रत्येक बचविलेपको लही-लही समझानेका बुद्धिकोण है जो इसे नहीं
 समझता यह आधुनिक रूपसे आधुनिकताके लच्छ सकों अथवा लथाभावा
 से प्रजावित हीकर आधुनिक बननेका पाकण्ड करता है । इसीलिए मैं
 विज्ञानको मानवताका प्रकासस्तम्भ कहता हूँ । इसीकी रोषवीमे हर
 चीजको समझनेका प्रयत्न करना है । सत्य वा आता है यह दावा मैं नहीं
 करता पर मैं विरभ्रमित हूँ यह माननेको कदापि तैयार नहीं हूँ । लप
 पुष्टिए तो विरभ्रमित आजकी भारतीय राजनीति है । और जो लोग इस
 भ्रमको बरमा लमाकर हर चीजपर नियम बड़ देनेके आरी है वे न किर्क
 विरभ्रमित है धनिक आकभ्रमित जो । ऐसे ही सोचोंकी भारतीयताके नामसे
 भारतीय जनसंघकी और राष्ट्रीयताके नामसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघकी
 बाव का पाठो है । ये लोग आनेकी अन्तर्राष्ट्रीयताबावी बड़ते है ।